VOL-7, ISSUE-7-8, AUGUST 2021 ISSN- 2454-1184

वर्ष-७, अंक- ७-८ अगस्त २०२१

SEEMAANT

सीमान्त

AN INTERDISCIPLINARY AND MULTILINGUAL ANNUAL REFEREED JOURNAL

Editor-in-chief - Dr. Ratan Kumar

Department OF Hindi

Government Kamalanagar College

(Mizoram University)

Chawngte, Mizoram-796772

www.gknc.in

SEEMAANT (सीमान्त)

(AN INTERDISCIPLINARY AND MULTILINGUAL ANNUAL REFEREED JOURNAL)

VOL.7, ISSUE 7-8, August 2021, ISSN 2454-1184

UGC APPROVED JOURNAL

Published By:

Department OF Hindi

Government Kamalanagar College

Chawngte, Mizoram-796772

www.gknc.in

EDITORIAL BOARD:

1. Dr. Ratan Kumar, Editor-in-chief

2. Dr. Dheerendra Kumar Srivastav, Co-Editor

3. Dr. Satyajit Das, Co-Editor

ADVISORY CUM REFREE BOARD

1. Dr. Sanjay Kumar, Professor, Dept. Of Hindi, Mizoram University, Mizoram

2. Dr. S. D. Boral, Professor, Dept. Of English, Mizoram University, Mizoram

3. Dr.Gopaljee Pradhan, Professor, School of Liberal Studies, B.R. Ambedkar University, Delhi

4.Dr. Kedar Singh, Associate Professor, Dept. of Hindi, Vinoba Bhave University, Hazaribagh

5. Dr. Sakhawliana, Asst. Professor, Dept. Of P.A, Govt. K.N. College, Chawngte, Mizoram

EDITOR CONTACTS:

Dr. Ratan Kumar

Assistant Professor & Head, Dept. Of Hindi

Government Kamalanagar College, Chawngte

Mizoram-796772

Email: seemaantmizoram@gmail.com

Mobile no. +919436965444

PRINTED AT:

NICETY GRAPHICS

Link Road Point, Silchar, Assam

Mobile No. 7576007413

Annual Subscription Rs. 200/-

Triennial Subscription Rs.500/-

SEEMAANT (सीमान्त)

Content

1. संपादकीय लेख .....डॉ. धीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव.....1--10

2. संपादकीय लेख .....डॉ. गोपालजी प्रधान.....11--14

3. हिंदी कथा साहित्य के आईने में झारखण्ड की जनजातियाँ.....

   डॉ. केदार सिंह.....15--20

4. आदिवासी स्त्री-अस्मिता एवं अस्तित्व के सवाल और निर्मला पुतुल.....

   डॉ. रतन कुमार.....21--28

5. मोहन राकेश की कहानियों में अकेलापन की त्रासदी.....

   डॉ. रामाधार प्रजापति 29--30

6. लोकतात्विक दृष्टि और तुलसी की कविता .....

   डॉ. धीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव.....31--34

7. 'C.C. COY. NO. 27' Thawnthu Atanga A Ziaktu
   K.C. Lalvunga (Zikpuii pa) Thuchah…….Lalremliana……35--43

8. An Ecocritical study of Kalidasa's Abhighyan Shakuntala……
   Dr. Satyajit Das……..……44--50

9. Life Skills Education Initiatives in India for the Adolescents:
   Some challenges…..…… Dr. Rahul Sarania……51--57

10. Truth and Non-Violence: Concept of Gandhi…….Sukanta Mazumder…58--62

11. LOK AYUKTA: The Indian Ombudsman and its desirability in Mizoram…
    Laldinpuii…….63-73

12. Autonomy Movement With Especial Reference to the Formation of TTAADC
    Dr. Jyotir Moy Chakma……..……74--84

SEMANT (सीमान्त)

सम्पादकीय

महामारियों की तबाही और साहित्य एवं पत्रिकाओं पर उसका असर

भारत समेत पूरा विश्व इस समय कोरोना महामारी से जूझ रहा है। इसी का नतीजा है कि कोरोना की वजह से अब तक 3932997 (उन्तालीस लाख बत्तीस हजार नौ सौ सत्तानवे), 27 जून 2021 तक लोग काल के गाल में समा चुके हैं। इनमें से अकेले भारत में ही 395783 (तीन लाख पन्चानवे हजार सात सौ तिरासी), 27 जून 2021 तक कोरोना संक्रमितों की मौत हो चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक महामारी घोषित किया है। हालांकि ऐसा पहली बार नहीं है, जब दुनिया किसी महामारी की चपेट में आई हो। इससे पहले हैजा, प्लेग, चिकनपाक्स, इंफ्यूएंजा जैसे खतरनाक वायरस मानव जीवन में संकट खड़ा कर चुके हैं। मानव इतिहास में आयी ये महामारियाँ 30 से 50 करोड़ लोगों को डस चुकी है। आइये जानते हैं ऐसी ही कुछ महामारियों के बारे में बात शुरू करते हैं 1918 में फैले स्पेनिश से, स्पेनिश फ्लू को विश्व इतिहास का सबसे भयानक और बड़ी महामारी माना जाता है, इससे तकरीबन 10 करोड़ लोगों की मौत हो गयी थी। जब पहले विश्व युद्ध की 11 नवंबर 1918 को समाप्त हुई और सारे सैनिक सैन्य कैंप से अपने-अपने देश लौटने लगे। वहाँ से इन सैनिकों के माध्यम से यह बीमारी पूरे विश्व में फैल गया। ज्यादातर संक्रमितों के मरने के कारण या उनमें रोग के प्रतिरोधक क्षमता पैदा होने के कारण ये युद्ध 1919 में समाप्त हो गया।

साल 541 में फैले जस्टिनियन प्लेग को विश्व इतिहास की दूसरी सबसे घातक महामारी माना जाता है। मिस्र से शुरू होने वाली इस बीमारी ने धीरे-धीरे भूमध्य सागर के आसपास के पूरे इलाके और यूनानी साम्राज्य को अपनी चपेट में ले लिया। अगली दो शताब्दियों तक ये बीमारी आती-जाती रही और इससे लगभग पाँच करोड़ लोगों की मौत हो गयी थी जो उस समय की वैश्विक जनसंख्या का 26 प्रतिशत था।

भले ही हमें AIDS से बड़ी संख्या में मृत्यु की खबरें बेहद कम मिलती हों, लेकिन ये इतिहास की तीसरी सबसे घातक बीमारी साबित हुई है। 1918 में पहचाने जाने के बाद से लगभग 35 करोड़ लोग। AIDS का शिकार हो चुके हैं। AIDS का वायरस HIV संक्रमित व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता को पूरी तरह से नष्ट कर देता है और वो सामान्य बीमारियों से लड़ने के काबिल भी नहीं रह पाता। इसकी वैक्सिन आज तक नहीं बन पायी है। AIDS को पहली बार भले ही अमेरिका के समलैंगिक समुदाय में पाया गया हो, लेकिन माना जाता है कि य 1920 के दशक में पश्चिमी अफ्रीका के किसी चिम्पैंजी वायरस से निकला है। ये केवल शरीर के कुछ तरल पदार्थों के जरिये ही फैलता है।

14वीं सदी में फैली 'द ब्लैक डेथ' महामारी से केवल यूरोप में दो करोड़ लोगों की मौत हुई थी। एशिया से फैलना शुरू हुई ये बीमारी अक्टूबर 1347 में इटली के मेसीना बंदरगाह पर आये 12 हजार जहाजों के साथ यूरोप पहुँची। इन जहाजों में ज्यादातर लोग मृत पाये गये और जो जिंदा थे, वे बेहद बीमार थे। जहाजों को तत्काल वापस भेज दिया गया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और बीमारी धीरे-धीरे पूरे यूरोप में फैल गयी।

1855 में फैली 'तीसरी प्लेग महामारी' दुनिया के इतिहास की पाँचवीं सबसे घातक बीमारी साबित हुई है। ये प्लेग चीन से फैलना शुरू हुआ और जल्द ही भारत और हांगकांग में पहुँच गया। भारत में इस वायरस के कारण सबसे अधिक मौतें हुईं और इसे लेकर अंग्रेजों को विरोध का सामना भी करना पड़ा। पूरी दुनिया में इससे लगभग 1.5 करोड़ लोगों की मौत हुई। ये बीमारी 1960 तक सक्रिय रही।

हांगकांग फ्लू जिसको दूसरी श्रेणी के फ्लू के नाम से भी जाना जाता है। 1968 में इस बीमारी के सबसे पहले 13 मामले हांगकांग में मिले थे। इसके फैलने की गति इतनी तेज थी कि देखते ही देखते यह 17 दिनों के भीतर सिंगापुर और वियतनाम पहुँच गया। हांगकांग फ्लू का जन्म H3N2 कीटाणु की वजह से हुआ है। यह एक बार का इंफ्लूएंजा था। केवल तीन महीनों के भीतर ही भारत और अमेरिका समेत दुनिया के कई बड़े देश इसकी जद में आ चुके थे। इस बीमारी का डेथ रेट 5 प्रतिशत रहा, लेकिन हांगकांग में इसने ऐसा कहर बरपाया कि वहाँ पाँच लाख लोग यानी 15 प्रतिशत लोगों की मौत हो गयी।

एशियन फ्लू हांगकांग फ्लू से ही मिलती जुलती बीमारी है जो 1956 में आई। यह भी एक A ग्रेड का इंफ्यूएंजा है। जिसकी फैलने की वजह H2N2 है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट की मानें तो इस बीमारी ने 20 लाख लोगों की जान ले ली, जिसमें लगभग 70 हजार अकेले अमरीकी लोग ही थे। एशियन फ्लू का सबसे ज्यादा असर सिंगापुर, हांगकांग और अमरिका में दिखायी दिया।

फ्लू (इंफ्लूएंजा) भी मानव इतिहास के लिये एक बड़ा संकट बन चुका है। यह 1918 की बात है जब घातक इंफ्लूएंजा ने पूरी दुनिया को अपनी जद में ले लिया। इस बीमारी से 2.5 करोड़ लोगों की जान चली गयी। जबकि 50 करोड़ लोग इससे बुरी तरह प्रभावित हो गये। इस इंफ्लूएंजा की खास बात यह थी कि यह युवाओं को अपनी चपेट में अधिक लेता था और जो किसी तरह इसकी चपेट से बाहर आते थे, उनका इम्यून सिस्टम बहुत कमजोर हो जाता था।

हैजा उन बीमारियों में से एक है, जिसने भारतीयों को सबसे अधिक प्रभावित किया। शुरूआती दौर में ही इस खतरनाक बीमारी ने 8 लाख भारतीयों की जान ले ली। हालांकि मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, पूर्वी यूरोप और रूस भी इससे प्रभावित हुए बिना न रह सके।

दुनियाभर में एक बार फिर कोरोना वायरस ने पैर पसारना शुरू कर दिया है। यह आज पूरी दुनिया में फैल चुका है। कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला देश अमरिका, भारत, ब्राजील, फ्रांस, रूस, इटली, तुर्की, स्पेन, जर्मनी है। दुनियाभर में कोरोना वायरस की वजह से रोजाना लाखों लोग संक्रमित हो रहे हैं। भले ही दुनिया के तमाम देशों में इसकी वैक्सिन आ चुकी है, लेकिन कोरोना के नए वेरिएंट्स के साथ ही 2021 में इसकी वापसी ने वैज्ञानिकों को भी चौंका दिया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत ही सूक्ष्म और प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है, जो केवल जीवित कोशिका में ही वंश वृद्धि कर सकता है। ये नाभिकीय अम्ल और प्रोटीन से मिलकर गठित होते हैं, शरीर के बाहर तो ये मृत समान होते हैं और शरीर के अंदर जाते ही ये जीवित हो जाते हैं। ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें सामान्य आँखों से नहीं देखा जा सकता। इन्हें देखने के लिये सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता होती है।

कोरोना की उत्पत्ति सबसे पहले 1930 में एक मुर्गी में हुई थी और इसने मुर्गी के श्वसन प्रणाली को प्रभावित किया था और आगे चलकर 1940 में कई अन्य जानवरों में भी पाया गया। इसके बाद सन् 1960 में एक व्यक्ति में पाया गया जिसे सर्दी की शिकायत थी। इन सबके बाद वर्ष 2019 में इसका विकराल रूप दुबारा 2019 में चीन में देखने को मिला जो धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैलता चला गया जो आज भी अनवरत जारी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना का नाम कोविड 19 (COVID 19) रखा है, जहाँ CO का अर्थ CORONA, VI का अर्थ VIRUS, D का अर्थ DISEASE और 19 का अर्थ साल 2019 मतलब जिस वर्ष में यह महामारी पैदा हुई। इस वायरस को सबसे पहले चीन के बुहान प्रान्त में देखा गया जो धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैल चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है, जो दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है और बहुत ही घातक वायरस है।

इसके लक्षण फ्लू से मिलते-जुलते हैं। कोविड 19 (कोरोना वायरस) में पहली बार बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद साँस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का मतलब हमेशा कोरोना है ऐसा नहीं है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, साँस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहाँ तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू के भी वायरसों में इस तरह के लक्षण पाये जाते हैं। तेज बुखार आना, अगर किसी व्यक्ति को सूखी

खाँसी के साथ-साथ तेज बुखार है तो उसे एक बार जरूर जाँच करानी चाहिये, यदि आपके शरीर का तापमान 99.0 और 99.5 डिग्री फारेनहाइट है तो उसे बुखार नहीं मानेंगे। अगर तापमान 100.0 डिग्री फारेनहाइट (37.7 डिग्री सेल्सियस) या उससे ऊपर पहुँचता है तो तभी ये चिंता का विषय है। कफ और सूखी खाँसी में पाया गया है कि कोरोना वायरस कफ होता है, मगर संक्रमित व्यक्ति को सूखी खाँसी आना, इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, साँस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खरास जैसी समस्यायें उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिये इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसम्बर में सबसे पहले चीन में मिला था और यहीं से इसके दूसरे देशों में पहुँचने की आशंका जतायी जाती है। लेकिन अब ये विश्व के अधिकांश देशों में यह वायरस फैल चुका है। कोरोना वायरस चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है, जितनी दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

कोरोना के प्रमुख लक्षण बुखार आना, सर्दी, खाँसी और जुकाम आना, गले में खरास, शरीर में थकान, साँस लेने में दिक्कत (जो सबसे प्रमुख है), माँसपेशियों में जकड़न, लम्बे समय तक थकान आदि हैं। इसकी सक्रियता निम्न प्रकार के आयु वर्ग समूह पर अधिक है।

आयु	मृत्यु दर
0-19 वर्ष	0.2%
20-29 वर्ष	0.09%
30-39 वर्ष	0.18%
60-70 वर्ष	5.0%
80 से अधिक	18.0%

कोरोना का संक्रमण बड़ी आसानी से फैल जाता है और इसकी अब तक कोई समुचित दवा नहीं मिली है, इसलिये इसे बहुत घातक रोग की श्रेणी में रख गया है। कोरोना के मामले दिन-प्रतिदिन पूरी दुनिया में बढ़ते जा रहे हैं। WHO ने इसे महामारी घोषित कर दिया है। इतिहास इस बात का गवाह है कि प्रत्येक 100 वर्ष पर दुनिया में कोई न कोई महामारी जरूर आती है और इससे बचने का सबसे अच्छा उपाय है बचाव।

कुछ ऐसी बातें जिसे मानकर आप खुद को इस महामारी से बचा सकते हैं। जैसे- हमेशा हाथ धोएँ, अपने मुँह को बार-बार न छुएँ, एक-दूसरे से 2 गज की दूरी बनाकर रहें, बहुत आवश्यक न हो तो घर से न निकलें, भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें, एक-दूसरे

से हाथ न मिलायें, मास्क का प्रयोग हमेशा करें, कम से कम 20 सेकेंड तक साबुन से हाथ धोएँ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO), पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और नेशनल हेल्थ सर्विस (NHS) से प्राप्त सूचना के आधार पर आपको कोरोना से बचाव के तरीके बताये गये हैं। एयरपोर्ट पर यात्रियों की स्क्रीनिंग हो या फिर लैब में लोगों की जाँच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिये कई तरह की तैयारियाँ की हैं। इसके अलावा भी किसी तरह की अफवाह से बचने, खुद की सुरक्षा के लिये कुछ निर्देश जारी किये हैं जिससे कि कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है।

लगभग 18 साल पहले सार्स वायरस से भी ऐसा ही खतरा बना था। 2002-03 में सार्स की वजह से पूरी दुनिया में 700 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। पूरी दुनिया में हजारों लोग इससे संक्रमित हुए थे। इसका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ा था। कोरोना वायरस के बारे में अभी तक इस तरह के कोई प्रमाण नहीं मिले हैं कि कोरोना वायरस पार्सल, चिट्ठियों या खाने के जरिये फैलता है। कोरोना वायरस जैसे वायरस शरीर के बाहर बहुत ज्यादा समय तक जिंदा नहीं रह सकते।

कोरोना वायरस को लेकर लोगों में एक अलग ही तरह की बेचैनी देखने को मिलती है। वे मास्क और सेनेटाइजर को लेकर कुछ ज्यादा ही सजग हैं जबकि लोग मास्क की जगह गमछे, रूमाल या तौलिये का प्रयोग कर सकते हैं और सेनेटाइजर का प्रयोग वहाँ करना चाहिये जहाँ पानी की दिक्कत हो। आप बार-बार साबुन से हाथ धोयेंगे तो भी बेहतर है।

कोरोना से अब तक पूरे विश्व में 181559867 (अट्ठारह करोड़ पन्द्रह लाख उनसठ हजार आठ सौ सड़सठ), 27 जून 2021 तक ज्यादा लोग संक्रमित हो चुके हैं। विश्व के कुछ प्रभावशाली देश जैसे कि अमेरिका, इटली, भारत, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, ईरान आदि जैसे देश भी इसकी चपेट में आ चुके हैं। पूरे विश्व में इस विनाशकारी महामारी ने तबाही मचा रखी है। अब जाकर इसके लिये वैक्सिन तैयार हुआ है जिससे लोगों में इस वायरस से लड़ने की क्षमता बढ़ जाती है। इन वैक्सिनों में कोविशिल्ड, कोवैक्सिन, फाइजर जैसे वैक्सिनों की प्रमुखता है।

महामारियों के कथानक पर केन्द्रित अतीत की साहित्यिक रचना में आज के संकटों की भी शिनाख्त करती हैं। ये हमें मनुष्य की जिजीविषा की याद दिलाती है और साथ ही साथ नैतिक मूल्यों के पतन, अहंकार, अन्याय और नश्वरता से भी आगाह करती है। इतिहास गवाह है कि अपने-अपने समय में चाहे कला हो या साहित्य, संगीत हो या सिनेमा तमाम रचनाओं में महामारियों की भयावहताओं को चित्रित करने के अलावा अपने समय की विसंगतियों, गड़बड़ियों और सामाजिक द्वंद्वों को भी रेखांकित किया है। ये रचनायें सांत्वना,

धैर्य और साहस का स्रोत भी बनी हुई है, दुःखों और सरोकारों को साझा करने वाला एक जरिया और अपने समय का मानवीय दस्तावेज है।

समकालीन विश्व साहित्य में महामारी पर विशद कृति 'प्लेग' को माना जाता है। कहा जाता अल्जीरियाई मूल के विश्व प्रसिद्ध फ्रांसिसी उपन्यासकार अल्बैर कामू अपने उपन्यास 'प्लेग' के जरिये नात्सीवाद और फांसीवाद को उभारा और उनकी भयानकताओं के बारे में बता रहे थे। इसमें दिखाया गया है कि कैसे स्वार्थों, महत्वाकांक्षाओं और विलासिताओं से भरी पूँजीवादी आग्रहों तथा दुष्चक्रों वाली दुनिया में किसी महामारी का हमला कितना व्यापक और जानलेवा हो सकता है कि कैसे वो खुशफहमियों और कथित निर्भयताओं के विशाल पर्दे वाली मध्यवर्गीय अभिलाषाओं को तहस-नहस करता हुआ एक अदृश्य दैत्य की तरह अंधेरों और उजालों पर अपना कब्जा जमा सकता है।

प्लेग उपन्यास का एक अंश है ''हर किसी को पता है कि महामारियों के पास दुनिया में लौट आने का रास्ता होता है, फिर भी न जाने क्यों हम उस चीज पर यकीन ही नहीं कर पाते हैं, जो नीले आसमानों से हमारे सिरों पर आ गिरती है....जब युद्ध भड़कता है तो लोग कहते हैं ''ये बहुत बड़ी मूर्खता है, ज्यादा दिन नहीं चल पायेगा। लेकिन युद्ध कितना ही मूर्खतापूर्ण क्यों न हो, ये बात उसे चलते रहने से नहीं रोक पाती है। मूर्खता के पास अपना रास्ता बना लेने का अभ्यास होता है, जैसा कि हमें देख लेना चाहिये। अगर हम लोग हमेशा अपने में ही इतना लिपटे हुए न रहें।''

'प्लेग' के जरिये कामू समाज के हृदयाहीनता को भी समझाना चाहते थे। वे दिखाना चाहते थे कि समाज में पारस्परिकता की भी भावना से विच्छिन्न लोग किस हद तक असहिष्णु बन सकते हैं। लेकिन वो आखिरकार मनुष्य के जीने की आकांक्षा का संसार दिखाते हैं। इसी तरह कोलम्बियाई कथाकार ग्राव्रिएल गार्सिया मार्केस का मार्मिक उपन्यास 'लव इन द टाइम ऑफ कॉलेरा' प्रेम और यातना के मिले-जुले संघर्ष की करुण दास्तान सुनाता है जहाँ महामारी से खत्म होते जीवन के समानान्तर प्रेम के लिये जीवन को बचाये रखने की जद्दोजहद एक विराट जिद्द की तरह तनी हुई है।

प्लेग, चेचक, इंफ्लूएंजा, हैजा, तपेदिक आदि बीमारियों ने घर-परिवार ही नहीं शहर के शहर उजाड़े हैं और पीढ़ियों को एक गहरे भय और संत्रास में धकेला है। चेचक को दुनिया से मिटे 40 साल से ज्यादा हो चुके हैं। पिछले साल दिसम्बर में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इस बात का जश्न भी मनाया था लेकिन 20वीं सदी के शुरूआती वर्षों में ये एक भीषण महामारी के रूप में करोड़ों लोगों को अपने आगोश में ले चुकी थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर की काव्य रचना 'पुरातन भृत्य' (पुराना नौकर) में एक ऐसे व्यक्ति के बारे में दिखाया गया है जो अपने मालिक की देखभाल करते हुए चेचक की चपेट में आ जाता है। 1903 में टैगोर ने

अपनी तपेदिक से जूझती 12 साल की बेटी को स्वास्थ्य लाभ के लिये उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले के पास रामगढ़ की हवादार पहाड़ी पर कुछ महीनों के लिये रखा था लेकिन कुछ ही महीनों में उसने दम तोड़ दिया। उसके 4 साल बाद उनके बेटे की भी मृत्यु हो गयी। टैगोर ने रामगढ़ प्रवास के दौरान 'शिशु' नाम से अलग-अलग उपशीर्षकों वाली एक बहुत लंबी कविता शृंखला लिखी थी। 1913 में छपी इन कविताओं के संग्रह का नाम 'अर्धचन्द्र' कर दिया गया था। टैगोर की इन रचना संसार से एक पंक्ति देखिये-

अंतहीन पृथ्वियों के समुद्र तटों पर मिल रहे हैं बच्चे
मार्गविहीन आकाश में भटकते हैं तूफान
पथविहीन जलधाराओं में टूट जाते हैं जहाज
मृत्यु है निर्बंध और खेलते हैं बच्चे
अंतहीन पृथ्वियों के समुद्र तटों पर बच्चों की चलती है,
एक महान बैठक।

इसी तरह निराला ने अपनी आत्मकथा 'कुल्लीभाट' में 1918 के दिल दहलाने वाले फ्लू से हुई मौतों का जिक्र किया है। उसमें उनकी पत्नी, एक साल की बेटी और परिवार के कई सदस्यों और रिश्तेदारों की जानें चली गयी थीं। निराला ने लिखा था कि दाह संस्कार के लिये लकड़ियाँ कम पड़ जाती थीं और जहाँ तक नजर जाती थी, गंगा के पानी में इंसानी लाशें ही लाशें दिखायी देती थीं। उस बीमारी ने हिमालय के पहाड़ों से लेकर बंगाल के मैदानों तक सबको अपनी चपेट में ले लिया था। बेटी की याद में रचित 'सरोज स्मृति' तो हिन्दी साहित्य की एक मार्मिक धरोहर है।

टाइम्स ऑफ इंडिया अखबार में अविजित घोष ने प्रगतिशील लेखक आंदोलन के संस्थापकों में एक पाकिस्तानी लेखक, कवि अहमद अली के उपन्यास 'टू वाइलाइट इन देल्ही' का उल्लेख किया है। उपन्यास में बताया गया है कि महामारी से मरे लोगों को दफनाने के लिये कैसे कब्र खोदने वालों की किल्लत हो जाती है और दाम आसमान छूने लगते हैं। इतने बड़े पैमाने पर वो काम हो रहा था कि दिल्ली मुर्दों का शहर बन गया था। प्रगतिशील लेखक संगठन के पुरोधाओं में एक रजिन्दर सिंह बेदी की कहानी 'क्वारंटीन' में महामारी से ज्यादा उसके बचाव के लिये निर्धारित उपायों और पृथक किये गये क्षेत्रों के खौफ का वर्णन है। यानी एक विडम्बनापूर्ण और हास्यास्पद सी स्थिति ये आती है कि महामारी से ज्यादा मौतें क्वारंटीन में दर्ज होने लगती हैं।

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' में मलेरिया और कालाजार की विभीषिका के बीच ग्रामीण जीवन की व्यथा का उल्लेख मिलता है। प्रेमचन्द की कहानी 'ईदगाह' में हैजे का जिक्र है। उड़िया साहित्य के जनक कहे जाने वाले फकीर मोहन सेनापति की 'रेबती'

कहानी में भी हैजे के प्रकोप का वर्णन है। जाने-माने कन्नड़ कथाकार यू.आर. अनन्तमूर्ति की बेमिसाल रचना 'संस्कार' में एक प्रमुख किरदार की मौत प्लेग से होती है। ज्ञानपीठ अवार्ड से सम्मानित मलयाली साहित्य के साहित्यकार तकबी शिवशंकर पिल्लै का उपन्यास 'थेत्तियुडे माकन' (मैला साफ करने वाले का बेटा) में दिखाया गया है कि किस तरह एक पूरा का पूरा शहर एक संक्रामक बीमारी की चपेट में आ जाता है।

उधर विश्व साहित्य पर नजर डाले तो कामू से पहले भी लेखकों ने अपने-अपने समयों में बीमारियों और संक्रामक रोगों का उल्लेख अपनी रचनाओं में किया है। ब्रिटेन के मशहूर द गार्जियन ने एक सूची निकाली है। जिसमें डेनियन डेफो का 'ए जर्नल ऑफ द प्लेग इयर' (1722), मैरी शैली का लिखा 'द लास्ट मैन' (1826), एडगर एलनपो की कहानी 'द मास्क ऑफ द रेड डेथ' (1842), कामू का 'प्लेग' (1947), माइकल क्रिस्टन का 'द एन्ड्रोमेड स्ट्रेन' (1969), स्टीफन किंग का 'द स्टैंड' (1978), रीचर्ड प्रोस्टन का 'द हाट जोन' (1994) का जिक्र है। नोबेल पुरस्कार विजेता और प्रसिद्ध पुर्तगाली उपन्यासकार जोसे सारामायो ने 1995 में 'ब्लाइंडनेस' नामक उपन्यास लिखा था, जिसमें अंधेपन की महामारी टूट पड़ने का वर्णन है। 2007 में जिम क्रेस ने 'द पेस्ट हाउस' लिखा, जिसमें लेखक को अमेरिका के प्लेग से संक्रमित अंधेरे भविष्य की कल्पना की है। 2013 में डैन ब्राउन का 'इंफर्नो' और मार्ग्रेट एटवुड का 'मैड एडम' और 2014, 2015 तथा 2017 में लोकप्रिय ब्रिटिश लेखिका लुइस वेल्स के 'प्लेग टाइम्स' टाइटल के तहत तीन उपन्यास प्रकाशित हुए।

आज के कोरोना समय में जब अधिकांश लेखक बिरादरी आनलाइन है तो दुनिया ही नहीं भारत में भी विभिन्न भाषाओं में कवि, कथाकार सोशल मीडिया के जरिये खुद को अभिव्यक्त कर रहे हैं। डायरी, निबंध, नोट्स, लघुकथा, व्याख्यान और कविता लिखी जा रही है, कहीं चुपचाप तो कहीं सोशल नेटवर्किंग वाली मुखरता के साथ। भारत में खासकर हिन्दी क्षेत्र में विभिन्न लेखक संगठन, व्यक्ति और प्रकाशन संस्थान फेसबुक लाइव जैसे उपायों के जरिये लेखकों से उनकी रचनाओं और उनके अनुभवों को साझा कर रहे हैं। हालांकि इस काम में प्रकाशित हो जाने की हड़बड़ी और होड़ जैसी भी देखी जा रही है और अपने-अपने आग्रहों और पसंदों के आरोप-प्रत्यारोप लग रहे हैं और वास्तविक दुर्दशाओं से किनाराकशी के आरोप भी हैं। हिन्दी कवि संजय कुन्दन कहते हैं कि हो सकता है जो आज सोशल मीडिया पर शेयर किया जा रहा है, वो साहित्य की कसौटी पर खरा न उतरे और गुणवत्ता में कमतर रह जाये लेकिन उन्हीं के बीच ऐसी रचनायें भी अवश्य आयेंगी जो आगामी वक्तों के लिये संघर्ष, यातना और संशय के घटाटोप से भरे इस भयावह जटिलताओं वाले समय की सबसे प्रखर और संवेदनपूर्ण दस्तावेज कहलाने वाली होंगी।

कोरोना काल सबकी जिन्दगी बदलने वाला है। यह परिवर्तन आने वाले समय में साहित्य पर भी दिखे, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। वस्तुतः साहित्य का संसार मूलरूप से लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों से मिलकर बनता है। इसमें लेखक और पाठक जहाँ एक बौद्धिक क्षेत्र का निर्माण करते हैं वहीं प्रकाशकों के लिये इसका वितरण और वाणिज्य महत्वपूर्ण होता है। इनमें से अगर कोई भी एक कड़ी अपनी भूमिका को लेकर ईमानदार न रहे तो साहित्य का संसार प्रभावित होगा। अब कोरोना वायरस किस प्रकार इस दुनिया में खलबली मचा रहा है। इसे देखना भी बेहद दिलचस्प होगा। दरअसल लेखकों की दृष्टि वर्तमान परिवर्तनों पर है और वो इस बेचैनी को व्यक्त करना भी चाहते हैं। वैसे भी संकट का काल रचनात्मकता को एक नई ऊर्जा देता है, क्योंकि इस दौरान जीवन में व्यापक तौर पर उथल-पुथल होती है। संभव है कि यह काल हिन्दी साहित्य के दृष्टिकोण से कुछ अनोखा हो जाये, क्योंकि जिस तरह से युवा लेखक अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। वह उम्मीदें जगाने वाला है। पाठकों के लिये इस नई दृष्टि को महसूस करने का अवसर होगा ये दोनों ही दीर्घकालिक प्रभाव वाले बिन्दु हैं, किंतु जो पक्ष तत्काल प्रतिक्रिया दे रहा है वह है प्रकाशक।

प्रकाशकों के सामने अभी एक चुनौती है कि वो पाठकों के साथ बने रहें। ऐसे समय में जब किताबें भौतिक रूप से पाठकों तक नहीं पहुँच पा रही हों, उस स्थिति में यह थोड़ा मुश्किल है। इसके लिये प्रकाशक अलग-अलग उपाय अपना रहे हैं। कोई ई-बुक तो कोई आडियो बुक के माध्यम से पाठकों तक पहुँच रहे हैं। हिन्दी साहित्य के कई प्रकाशक तकनीक के माध्यम से मुफ्त में ही कुछ चुनिंदा पुस्तकें उपलब्ध करा रहे हैं, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम खतरनाक हो सकते हैं।

यदि इस संकट का फायदा कोई बड़ी कंपनी इस रूप में उठाना चाहे कि वह घाटा वहन करके भी बाजार में बनी रहे तो यह बाजार भावना के विपरीत है। इसके बाद पाठकों का दबाव अन्य प्रकाशकों पर भी आयेगा कि वे भी मुफ्त में किताबें उपलब्ध करायें। छोटे प्रकाशकों के पास इतनी वित्तीय क्षमता नहीं है कि वे मुफ्त के इस खेल में टिक सकेंगे। ऐसे में बहुत संभव है कि कोरोना संकट में मुफ्त किताबें देने का यह प्रयोग अंततः एकाधिकारवादी बाजार नियंत्रण में बदल जाये और प्रकाशकों की विविधता समाप्त हो जाये।

विगत छः वर्षों से पूर्वोत्तर भारत के मिजोरम राज्य में स्थिति गवर्नमेंट कमलानगर कॉलेज, चोंगते से निकलने वाली पत्रिका 'सीमान्त' पत्रिकाओं की दुनिया में अपना अलग पहचान बनाती है। गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र और हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों के लिये यह पत्रिका एक सेतु का काम करती है। इसका मुख्य कारण हिन्दी भाषा के साथ-साथ भारत के विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक और गैर साहित्यिक लेखों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ

उसको अपनी पत्रिका में स्थान देना है। जो इस पत्रिका को सभी पत्रिकाओं में अपनी एक अलग पहचान बनाने में मदद करती है।

कोरोना काल में सब कुछ प्रभावित हुआ, चाहे व्यक्तिगत जीवन हो, सामाजिक जीवन हो, व्यवसायिक जीवन हो या साहित्यिक जीवन। हर जगह हताशा और निराशा का माहौल रहा। पत्रिकाओं पर भी इसका प्रभाव पड़ा। बहुत सारी छोटी बड़ी पत्रिका या तो बन्द हो गयी या आगामी अंक नहीं निकाल पायीं। इससे प्रकाशक वर्ग और लेखक वर्ग दोनों प्रभावित हुए। इसका सबसे बड़ा कारण आर्थिक तंगी रहा। 'सीमांत' पत्रिका भी उनमें से एक हो सकती थी। लेकिन ये पत्रिका अपने संपादक और उनकी टीम मैनेजमेंट के कारण एक बार फिर नये तेवर और नये कलेवर में पाठकों के सामने उपस्थित है। ये सब पत्रिका के पाठकवर्ग के प्रेम और उसमें छपे सारगर्भित लेखों का ही परिणाम है। इस पत्रिका में छपे लेख प्रमाणिकता की कसौटी पर पूरी तरह कसी जाती है और साहित्यिक मापदण्डों का पालन करती हैं, जो इसकी विशेष पहचान है।

'सीमांत' पत्रिका हमेशा अपने उद्देश्यों को पूरा करने की पूरी कोशिश करती है, जो पत्रिका को खास बनाती है। आप सबके बीच 'सीमांत' पत्रिका का यह संयुक्तांक अगस्त 2020 का सातवाँ और अगस्त 2021 का आठवाँ अंक उपस्थित है। जिस तरह से 2015 से इस पत्रिका को आपका प्यार और दुलार मिलता रहा है, उम्मीद है आगे भी मिलता रहेगा। मैं विशेष धन्यवाद 'सीमांत' पत्रिका के प्रधान संपादक, संपादक मण्डल और परामर्शदाता मण्डल को देना चाहूँगा जो इस कठिन दौर में भी पत्रिका संचालन का जिम्मा उठाये हुए हैं। इस संयुक्तांक में हमने साहित्यिक और गैर साहित्यिक ऐसे लेखों को शामिल किया है जो पूर्वोत्तर भारत की साहित्यिक समझ को हमारे सामने रखता है, वहाँ की सांस्कृतिक, राजनीतिक, भौगोलिक गतिविधियों के बारे में हमारा ज्ञानार्जन करता है।

अन्त में सीमान्त टीम की तरफ से आप सबसे यही अपील है कि घर पर रहें, सुरक्षित रहें। ज्यादा जरूरी न हो तो घर से न निकलें। मास्क का हमेशा इस्तेमाल करें। कोरोना गाइडलाइन का पालन करें। अगर हम कोरोना गाइडलाइन का पालन करते हैं तो वो दिन दूर नहीं होगा जब भारत कोरोना पर विजय पा जायेगा।

डॉ. धीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

****

सम्पादकीय

नये समय की आहट

कोरोना के चलते दुनिया दो साल से ठहरी हुई है। कोई नहीं जानता कि इसके बाद की तस्वीर कैसी होगी। जो लोग भी इस महामारी से बचे रहे उनमें से लगभग सबको एक तरह की दुश्चिंता ने ग्रसित कर रखा है। तत्काल की समस्या रोजगार से जुड़ी हुई है। कहने की जरूरत नहीं कि इतनी लम्बी बंदी ने बड़े पैमाने पर रोजगार छीन लिये। नोटबंदी से तबाह हुए अर्थतंत्र ने थोड़ा संभलना शुरू ही किया था कि महज चार घंटे की सूचना पर की गयी क्रूर देशबंदी ने कामगारों को सड़क पर ला दिया। पूरी दुनिया ने आंख फाड़कर पैदल या साइकिल पर हजारों किलोमीटर का सफर करके घर लौटते मजदूरों का काफ़िला देखा। विभाजन के बाद दूसरी बार लोगों को किसी और की सनक का नतीजा भुगतना पड़ा। इतिहास में दर्ज होने लायक इस महायात्रा की गवाह वे खून सनी रोटियां भी बनीं जो रेल की पटरी के किनारे कटी लाशों के साथ बिखरी पड़ी थीं। इस भयावह मानव त्रासदी को अभी कलाओं की दुनिया में दर्ज होना बाकी है। सरकारों और फैसला करने में सक्षम अधिकारियों ने जैसी बेरुखी दिखायी वैसी बेरुखी तो गुलामों के भी प्रति भी नहीं दिखायी जाती रही होगी! बुजुर्गों की मौत पर पेंशन की जिम्मेदारी कम होने का जश्न भी मनाया गया। टीकों से कमाई के मामले में निजी अस्पतालों ने खूब अंधेरगर्दी मचायी। सैनिटाइजर और मास्क के मामले में भी मुनाफ़ा लूटने में कोई पीछे नहीं रहा। अस्पताओं में बिस्तर और चिकित्सा की सुविधा तो नहीं ही मिली, उसकी शर्मिंदगी भी रत्ती भर नहीं नजर आयी। तभी तो दहाड़कर संसद में झूठ बोला गया कि आक्सीजन की कमी से किसी मरीज की मौत नहीं हुई। निजी अस्पतालों में सुविधा और दवाओं की उपल्बधता मुहैया कराने में भेदभाव बरता गया। शायद ही कोई होगा जिसका निकट संबंधी या परिवारी इस महामारी में स्वास्थ्य की सरकारी व्यवस्था की भेंट न चढ़ा हो! लोगों ने पुराने जमाने के हैजा और स्पैनिश फ़्लू से होनेवाली मौतों को टूटकर याद किया मानो सौ सालों से चिकित्सा विज्ञान में कोई प्रगति न हुई हो!

इस सिलसिले में सभी लोग कयास ही लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि आगे का समय कैसा और क्या होगा। अगर हम कोरोना के बाद के भविष्य की चिंता करना चाहते हैं तो एक नजर उसके ठीक पहले के बदलावों पर डालनी होगी। असल में तो कोरोना के दौरान भी वही हुआ जो इसके पहले से चल रहा था। बस उसकी रफ़्तार काफी तेज हो गयी। हाल के दिनों में हम अपने देश का जिक्र अमेरिका के साथ करने लगे हैं। पिछली लहर में उसके राष्ट्रपति

ट्रम्प ने जिस तरह का गैर जिम्मेदार आचरण किया था उसकी नकल हमने इस लहर में की। कोरोना से ठीक पहले दुनिया की बड़ी चिंता के रूप में विषमता की चर्चा चल रही थी। मशहूर अर्थशास्त्रियों के बीच बहस जारी थी कि इस समस्या का समाधान किस तरह निकाला जाये। उनकी चिंता का कारण यह था कि अगर सामान्य लोगों के पास धन होगा ही नहीं तो उत्पादित वस्तुओं की खरीदारी कौन करेगा। कोरोना के दौरान इसमें कोई कमी आने की जगह बढ़ोत्तरी ही हुई है। अचरज की तरह दिखायी पड़ा कि कारखानों और व्यापार ठप होने के बावजूद अमीरों की संपत्ति में इजाफ़ा होता जा रहा है। इसको समझने की कोशिश में पता चला कि इसकी वजह बैंकों की लूट है। बैंकों का कर्जा लेकर विदेश भागने वालों की खबरों से लगा मानो नया भारत छोड़ो आंदोलन चल रहा हो! देश से भागकर विदेश जा बसने वाले सभी पूंजीपति बैंकों का कर्जा डकार गये। इस मामले में सर्वोच्च पद पर बैठे लोग भी सहयोगी के बतौर लिप्त पाये गये। जो भाग गये उनके बारे में खबरें आयीं कि सत्तासीन पार्टियों को चुनावी चंदा देकर भागने का प्रबंध किया है। भाग जाने वालों से बड़ी तादाद उनकी है जो देश में मौजूद हैं लेकिन बैंकों का कर्ज नहीं लौटा रहे हैं। लोग इस बात को समझ नहीं रहे कि बैंक जो कर्ज देता है वह हमारा ही धन है और अगर कोई पूंजीपति कर्ज की रकम डकार जाता है तो यह खुली डकैती ही है। हाल के हिंदुस्तानी अरबपतियों में से अधिकतर इसी तरह की डकैती और लूट से अमीर बन रहे हैं। इसे केवल अर्थतंत्र की बात समझना उचित नहीं होगा। इसका सबसे अधिक असर देश की चुनावी राजनीति और लोकतंत्र पर पड़ रहा है।

कोरोना का गहरा प्रभाव देश की शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ने जा रहा है। हम सबने देखा कि शिक्षा पाने की इच्छा के साथ जिन वंचित तबकों ने शिक्षा संस्थानों में प्रवेश किया था उन पर अचानक आफत टूट पड़ी है। मंहगे फोन और इंटरनेट का बाजार खूब फल फूल रहा है। उम्मीद थी कि महामारी के बाद देश के शिक्षा संस्थान खुलेंगे लेकिन शिक्षा मंत्रालय ने आपदा को अवसर में बदलते हुए इस व्यवस्था को स्थायी बनाने का संकल्प कर लिया है। निश्चित है कि इससे शिक्षकों की तादाद में कमी आयेगी। विद्यार्थी न तो अपने साथ पढ़ने वालों से और नही शिक्षकों से मिल सकेंगे और जिस संस्थान से भी उन्हें उपाधि मिलेगी उसका प्रत्यक्ष दर्शन किये बिना ही वे सभी कक्षाओं में उत्तीर्ण होते चले जायेंगे। शिक्षण संस्थानों की जमीनों पर बहुत दिनों से भू माफ़िया की नजर थी। अब उसका व्यावसायिक उपयोग का तर्क आसानी से दिया जा सकेगा। संस्थान में जाकर कोई भी विद्यार्थी आम तौर

पर थोड़ा खुलापन महसूस करता है। उसे अपनी उम्र के सहपाठियों का साथ मिलता है तो सामाजिक और जिम्मेदार नागरिकता का विकास होता है। इस महामारी के दौरान ही हमें सावधानी के साथ बदलते माहौल को देखना होगा। कहने की जरूरत नहीं कि किताब की पूरी मौजूदगी का रिश्ता अध्ययन अध्यापन के इस भौतिक वातावरण पर निर्भर है।

समूची दुनिया में विषमता के बढ़ने की प्रवृत्ति पहले से थी, कोरोना से उसकी गति तेज हो गयी। इन नये अमीरों ने सरकार को लगभग अपनी जागीर बना रखा है और सरकार देश की परिसंपत्तियों को औने पौने दाम पर इन अमीरों को बेच रही है। बदले में केवल उनसे चुनाव लड़ने का चंदा ले रही है। चंदे के लिए पहले नियम था कि बीस हजार के ऊपर का चंदा नकद नहीं लिया जा सकता इसलिए सभी पार्टियों को उन्नीस हजार नौ सौ निन्यानबे रुपये का चंदा ज्यादा मिलता था। इस पर रोक लगाने के नाम पर सरकार ने व्यवस्था की कि बैंक में पार्टियों के नाम से चुनावी बांड खरीदे जा सकते हैं। इनकी कोई सीमा नहीं होगी और इसे गोपनीय रखा जायेगा। नतीजा यह हुआ कि किस पार्टी को कौन कितना चंदा दे रहा है इसकी सूचना जनता को नहीं होती लेकिन सरकार को होती है। इस सूचना के बल पर सरकार ने अपनी पार्टी के अलावा विपक्षी पार्टियों को चंदा देने वालों को दंडित करना शुरू किया। फिलहाल केवल सत्ताधारी पार्टी को ही सारा चंदा जा रहा है। इसका बड़ा हिस्सा उन पूंजीपतियों ने दिया है जो बैंकों से कर्ज लेकर उसे लौटा नहीं रहे हैं। इस तरह लोकतंत्र मुट्ठी भर थैलीशाहों की जेब में चला गया है। सब ने अचरज के साथ देखा कि आस्ट्रेलिया में खनन के लिए एक ठेका जिस पूंजीपति को मिला उसे कर्ज देने के लिए भारतीय स्टेट बैंक की महाप्रबंधक भी साथ ही गयी थीं। प्रधानमंत्री, संबंधित पूंजीपति और महाप्रबंधक की एक साथ की वह तस्वीर ही हमारे समय का सबसे बड़ा मुहावरा बनी। कोरोना को अवसर समझकर उस पूंजीपति के हाथ हवाई अड्डों से लेकर रेल स्टेशन तक सब कुछ बेशर्मी के साथ बेचा जा रहा है। इसके लिए तमाम तरह के कानून आनन फानन में पारित कराये जा रहे हैं। जब अध्यादेशों से काम नहीं चल रहा है तो संसद तक को कैद कर लिया जा रहा है।

इससे होने वाली बदहाली से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए झूठी देशभक्ति का उन्माद पैदा किया जा रहा है। पहले देशभक्ति का मतलब देश के बाशिंदों की खुशहाली के लिए चिंतित होना समझा जाता था। फिलहाल इसका मतलब देश के ही कुछ लोगों को उत्पीड़ित करना हो गया है। सांप्रदायिक अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव बहुत ही व्यवस्थित शक्ल लेता जा रहा है। सरकार का काम नागरिकों की सेवा करना होता है लेकिन सरकार ने

इसे उलटकर नागरिक तय करने का मनमाना कायदा बना लिया है। नागरिकों पर संदेह की इस सरकारी प्रवृत्ति ने निगरानी के इतने बड़े और खर्चीले साधन पर जनता का धन पानी की तरह बहाने का कारण खोज लिया है कि सोचकर भी झुरझुरी होती है। आखिर इतने भयभीत लोग देश और जनता की सेवा कैसे करेंगे! हिंदी कवि जयशंकर 'प्रसाद' की कविता याद आ रही है- भयभीत सभी को भय देता, भय की उपासना में विलीन। यह पूरी परिस्थिति सिक्के का केवल एक पहलू है। अमेरिका में इसी कोरोना के दौरान अश्वेतों ने ऐतिहासिक आंदोलन खड़ा किया और ट्रम्प को चुनावी शिकस्त खानी पड़ी। हमारे देश में भी किसानों की भारी तादाद पिछले आठेक महीनों से राजधानी के चारों ओर डेरा डाल रखा है।

ऐसे हालात में ढेर सारे लोगों ने बताया है कि कोरोना के बाद की दुनिया वही होगी जिसे हम इस समय बनायेंगे। एक ओर इस महामारी का बहाना लेकर लोकतांत्रिक हकूक का गला घोंटा जा रहा है तो दूसरी ओर सामान्य लोग अपने साथ होनेवाले भेदभाव की मुखालफ़त के जरिये अपने लोकतांत्रिक अधिकारों पर दावा ठोंक रहे हैं। यह लड़ाई कोरोना के पहले से जारी थी, कोरोना के दौरान जारी है और कोरोना के बाद भी जारी रहेगी। आखिरकार भविष्य की दुनिया वही होती है जिसका हम निर्माण करते हैं। प्रत्येक पीढ़ी अपने पहले की सामाजिक समस्याओं को ही हल करने के क्रम में न ये समाज का ताना बाना बुनती है। इस महामारी के दौरान हम सब ने न केवल दुनिया भर में झूठ, नफ़रत और तानाशाही का उभार देखा बल्कि उससे लगातार जूझते हुए अपनी आजादी को बरकरार रखने के अटूट संकल्प के गवाह भी हम सभी रहे हैं। आगामी दुनिया की बेहतरी की उम्मीद के साथ यह अंक प्रस्तुत है।

गोपाल प्रधान

****

हिन्दी कथा साहित्य के आईने में झारखण्ड की जनजातियाँ

डॉ. केदार सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

विनोबा भावे विश्वविद्यालय,

हजारीबाग-825301 (झारखण्ड)

जीवन की जटिलताओं को सहजता से नृत्य, संगीत में डुबोकर जंगलों, पहाड़ों और घाटियों आदि दुर्गम क्षेत्रों में निवास करना, कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी जुझने की जिद और अपने अस्तित्व को बनाए रखने की कला हमें आदिवासियों से सीखनी चाहिए। अपने सीमित संसाधनों में सिमटकर रहते हुए बाहरी दुनिया से बेखबर, हम सभ्य समाज से अधिक सुखी दिखने वाले ये आदिवासी हीं तो हैं। सभ्यता से दूर रहकर अपने हिस्से का भी वैभव बाँटनेवाले, हमारे लिए बेताल कथा की तरह दिलचस्प बने हुए हैं।

यह विडंबना है कि यहाँ के मूल निवासी आदिवासियों का जीवन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सहित्यिक स्तर पर हाशिए में पड़ा हुआ है। जबकि भारतीय संविधान की धारा 342 (1) के अन्तर्गत कुल 212 आदिम जातियों को अनुसूचित जनजातियों में शामिल किया गया है। सन् 1991 की जनगणना के अनुसार देश में अनुसूचित जनजातियों की कुल संख्या देश की कुल आबादी का 9.55 प्रतिशत है तथा बिहार राज्य में यह अनुपात 10.6 प्रतिशत है। "झारखंड में इनकी कुल संख्या 2011 के जनगणनानुसार - 86 लाख 45 हजार 42 है"।[1]

"भाषा वैज्ञानिक स्तर पर आदिवासी या जनजातियों की भाषाएँ दो भाषा परिवार से विकसित हुई हैं आस्ट्रिक परिवार एवं द्रविड़ परिवार। आस्ट्रिक परिवार से संथाली, मुंडारी, हो, खड़िया, बिरहोरी, करमाली, लोहरा, असुरी, विरजिया, खेरवार, चेरा आदि भाषाएँ विकसित हुई हैं और द्रविड़ परिवार से कुड़ुख और माल्टो आदि भाषाएँ विकसित हुई हैं।"[2]

झारखंड के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो यह क्षेत्र आबादी के आवागमन की दृष्टि से जनजातीय होने के बावजूद एक खुला क्षेत्र रहा है। अंग्रेजों के लगभग 175 वर्षों के शासन काल से यह क्षेत्र सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर कई करवटें बदल चुका है। देश तथा विदेशों से अनेक जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोगों ने इसके निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फलतः आदिवासियों की भाषा, संस्कृति, साहित्य के समानान्तर अन्य कई भाषाई समूहों की उपस्थिति भी प्रभावी रही है। इनके बीच आदान-प्रदान भी हुए हैं। किन्तु यह सच है कि हिन्दी-भाषी समाज ही जीवन के अन्य मोर्चे की तरह सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्तर पर

नेतृत्व कर रहा है। ध्यातव्य है कि शासन, शिक्षा, संचार और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में हिन्दी अपने दायित्व को तत्परतापूर्वक निभा रही है। हिन्दी-भाषा समाज से अलग सांस्कृतिक समूहों की अभिव्यक्ति भी इसके माध्यम से होती है, जिससे गुमनाम आदिवासी जीवन या क्षेत्रीय साहित्य भी रौशन होता है। आदिवासी या जनजातीय क्षेत्र की हिन्दी का यह साहित्यिक सफर अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इसमें देश, काल, समाज, संस्कृति की धड़कनें समायी हुई हैं। विषय विविधता की दृष्टि से कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, व्यंग्य, समीक्षा, के साथ-साथ लोक साहित्य, आत्मकथा, साहित्येतिहास, जीवनी, संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, शब्दचित्र, अनुवाद, निबंध, गीतिकाव्य जैसी महत्त्वपूर्ण विधाओं से यहाँ का जनजातीय साहित्य भरा पड़ा है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं में भी जनजातीय साहित्य का सृजन हो रहा है। इस प्रकार आदिवासी साहित्य को समृद्ध करने के लिए एक ओर जहाँ हिन्दी भाषा-भाषी साहित्यकार लगे हुए हैं, वही जनजातीय तथा क्षेत्रीय भाषा-मुंडारी, हो, कुडुख, खड़िया, खोरठा, नागपुरी आदि के भी साहित्यकार लगे हुए हैं।

जंगल, पहाड़, खेत से जुड़े यहाँ के आदिवासियों की स्थिति बेहतर नहीं है, खासकर महिलाओं की। यहाँ के विकास में स्त्री पुरुषों की सामान्य भागीदारी रही है। स्त्री-पुरुष दोनों ने मिलकर हर परिस्थितियों का मुकाबला किया है। ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था की बात करें तो यहाँ के विकास में पुरुषों से बढ़कर महिलाओं का योगदान है। बावजूद इसके यहाँ की महिलाएँ शोषण का शिकार हो रही हैं। स्त्रियों की कमाई का अधिकांश हिस्सा पुरुष शराब, हड़िया, मांस आदि में उड़ा देते हैं और स्त्रियों की स्थिति दीन-हीन बनी रह जाती है। यहाँ शिक्षा के अभाव के कारण महिलाओं पर डायन, ओझा-गुणी का आरोप लगाकर इन्हें तिरस्कृत किया जाता है। यहाँ के युवतियों की ज्यादा दर्दनाक स्थिति है। यहाँ की लड़कियाँ निश्छल भाव से रोजी-रोजगार एवं सुखद भविष्य निर्माण के लिए दूसरे राज्यों में जाती हैं वहाँ उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। मैंने अपनी एक छोटी सी कविता 'साहेब' में इन लड़कियों के दर्द को उकेरने का प्रयास किया है-

साहेब

साहेब!

आपने कहीं देखा है

मेरी अलहड़ सी जवान बेटी को ?

तीन माह पहले आई थी वह एक ठेकेदार के साथ

इसी शहर के ईंट भट्ठे में काम करने के लिए

क्या कहा

उसका नाम बताऊँ ?

भला उस दुधिया चांदनी के समान
फुदकते नटखट टुकड़े का कोई नाम हो सकता है ?
आप शहरी लोग अपने बच्चों को
भले ही कोई नाम से पुकारते हैं
हम जंगली आदिवासी तो उन्हें
उनके पाँव की आहट से सुनते हैं
और गंध से पहचानते हैं
क्या कहा वह यहाँ काम करने नहीं आई है ?
नहीं ऐसा मत कहिए साहेब
आज भी उस जंगली रास्ते ने
सहेज रखे हैं अपने सीने पर
उसके पाँव के अनगिनत निशान
विदा देते
पेड़ों की टहनियों के आँसू
हिलते पर्वतों के हाथ
थर्राते पक्षियों की चोंच
क्या कहा
उसकी कोई तस्वीर दूं ?
उसकी तस्वीर तो
पठारी नदियों की तरह बलखाती
जंगली लताओं की तरह छरहरी
हिरणी की तरह शोख, चंचल
कुलांचे भरने वाली
आज भी मेरे जेहन में बसी है
क्या कहा-
उसके फटे कपड़े हैं आपके पास ?
नहीं ऐसा नहीं कहिए साहेब
मैं केलेज के टुकड़े को
अपने सीने से लगाकर
वापस उन्हीं जंगलों में
लौट जाना चाहता हूँ।[3]

SEEMANT (सीमान्त)

यहाँ स्त्री-पुरुष के संबंधों में भी काफी बिखराव की स्थिति मिलती है। घर-गृहस्थी, जंगल, खेत आदि में काम करने के बाद भी इन्हें उचित स्थान एवं सम्मान नहीं मिलता। इन तमाम विषयों को लेकर अनेक कहानियाँ लिखी गईं हैं। इनमें सर्वप्रथम नाम राधाकृष्ण जी का आता है। इनकी कहानी 'कोयले की जिन्दगी' एक ऐसी ही कहानी है जहाँ आदिवासी स्त्रियाँ अपने ही समाज के पुरुषों द्वारा प्रताड़ित की जाती हैं। पुरुषों के लिए शराब, हड़िया आवश्यक है। इसके लिए ज्यादातर स्त्रियों को ही पैसों की व्यवस्था करनी पड़ती है।

आदिवासी जीवन से सम्बद्ध, जनजातियों पर आधारित हिन्दी भाषा में वैद्यनाथ पोद्दार जी की कहानी 'सतीत्व की रक्षा' का प्रकाशन विक्रम संवत 1982 में 'छोटा नागपुर पत्रिका' में हुआ था। संभवतः झारखंड क्षेत्र में हिन्दी कहानी में आदिपुरुष पोद्दार जी हीं हैं। 1950-60 के आस-पास झारखंड में कथा लेखकों की संख्या में वृद्धि होने के साथ ही साहित्य के सामाजिक फलक का भी विस्तार हुआ। आदिवासी समाज को लेकर कहानी, उपन्यास लिखने वाले योगेन्द्र नाथ सिन्हा जी आते हैं। सिन्हा जी के दो उपन्यास 'वन के मन में' और 'वन लक्ष्मी' आदिवासियों पर केन्द्रित हैं। कथाकार योगेन्द्र नाथ सिन्हा यद्यपि झारखंड के नहीं थे, तथापि इस मिट्टी से लगाव एक आदिवासी से कम नहीं था। सरकारी नौकरी के क्रम में सिन्हा जी पहाड़ों, जंगलों के संपर्क में आए थे। उन्होंने आदिवासियों के प्रति उमड़ी अपनी संवेदना एवं सहानुभूति को चार कहानी संकलन- 'पहाड़ की पुकार', 'दुम्बी हो', 'चलो बादलों में छिप जायें', 'मूँछ की लड़ाई', दो उपन्यास- 'वन लक्ष्मी', 'वन के मन में', एक किशोर कथा- 'रचना जंगल में मंगल', संस्मरण, और यात्रा वृत्त के माध्यम से व्यक्त किया।

जमशेदपुर के गुरुवचन सिंह एवं कमल जोशी जी का भी नाम इस सन्दर्भ में लिखा जाना चाहिए। गुरुवचन सिंह मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय जीवन के कथा शिल्पी थे। इनके पात्र आर्थिक विसंगतियों से जुझते रहने के बावजूद विद्रोही तेवर नहीं रखते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि गुरुवचन जी ने आदिवासियों को ही अपने कथा-पात्रों के रूप में लिया था। गुरुवचन सिंह के कई कहानी संकलन हैं- 'युग का देवता', 'नीम की निबौलियाँ', 'धरती के बेटे', 'एक और निवेदन और बुझी हुई राख' आदि। 'दशमेश' को जीवनी साहित्य के रूप में काफी प्रतिष्ठा मिली। 'वन पाखी' नामक उपन्यास को गुरुवचन जी ने यहाँ की मिट्टी एवं यहाँ के आदिवासियों को समर्पित किया है। कमल जोशी जी ने भी 'चार के चार', 'फूलों की माला', 'पत्थर की आँख', 'ब्रहम माया', 'बादलों के बीच धूप', आदि कहानी संकलनों और 'बहता तिनका' नामक लघु उपन्यास के माध्यम से इस मिट्टी की पहचान बनाई। इसी समय भवभूति मिश्र का लेखन भी उस क्षेत्र के लिए हुआ।

सन् 1957 के बाद के कथा लेखकों में विसेश्वर प्रसाद केसरी, कालीकिंकर, श्रवण कुमार गोस्वामी, विद्याभूषण आदि साहित्य लेखन के क्षेत्र में आए, जिन्होंने अपने साहित्य के

माध्यम से आदिवासियों को प्रेरित किया, जागृत किया। 1960 के आस-पास के कथाकारों में भालचन्द्र ओझा जी का आगमन होता है। सन् 1962 ई में ओझाा जी की 62 कहानियाँ 'ईश्वर पैदा हुए' नामक संकलन में प्रकाशित हुईं। 'आँख' नामक एक उपन्यास एवं 'साँवला पानी' नाम से एक लघु उपन्यास भी प्रकाशित हुआ। 'साँवला पानी' का मुख्य पात्र एक आदिवासी युवक है। इसी समय दक्षिण भारतीय सी भास्कर राव जी का कथासाहित्य में पदार्पण हुआ। भास्कर जी ने 'सुब्बा राव का राशनकार्ड', 'दौड़ते रहो दण्डपाणि', तथा 'जोहार गेपु दा' आदि कहानी संकलनों के माध्यम से यहाँ की जनजातियों को वाणी दी।

मनमोहन पाठक जैसे कथाकार का पदार्पण सातवें दशक के आस-पास होता है। पाठक जी इस आदिवासी, जनजातीय क्षेत्र के कथाकारों में धरती पुत्र साबित हुए। इन्होंने डाल्टेनगंज रोहतास के आस-पास रहने वाले उराँव आदिवासियों को लेकर आधुनिक व्यवस्था, वर्ग वैषम्य, आदि को 'ललमुनिया की गाय' और 'कुलोदा महताइन' संकलनों की कहानियों का वर्ण्य विषय बनाया। 'गगन घटा घहरानी' कबीर की इस पंक्ति को अपने उपन्यास का शीर्षक-बनाकर पाठक जी ने आदिवासी एवं जनजातियों को प्रस्तुत किया।

9वें दशक में आदिवासियों को स्वर देने वाले कथाकारों में नारायण सिंह, रमा सिंह, जयनन्दन, ऋता शुक्ल, वासुदेव आदि का आगमन होता है। कथाकार वासुदेव एक ऐसे लेखक का नाम है, जिन्होंने जनजातीय लेखन के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाई है। इन्होंने अपनी कहानियों में आदिवासी जीवन और परिवेश के प्रति सद्भावना पूर्वक विचार किया है।

हजारीबाग के रतन वर्मा कृत कहानी संकलन 'दस्तक' में आदिवासी जीवन को दर्शाया गया है। आकाशवाणी, हजारीबाग में कार्यरत वर्तमान में राँची निवासी पंकज मित्र ने 'बैल का स्वप्न' कहानी में उराँव जाति का चित्रण किया है तो 'कस्बे की लोककथा' में बिरहोरों की जीवन्त प्रस्तुती की है। तथा 'चमनी गंझु की मुस्की' के माध्यम से आदिवासियों के बाह्य प्रदर्शन का वर्णन किया है। झारखंड के आदिवासियों को सजगता पूर्वक कथा-साहित्य में चित्रण करने वाले रणेन्द्र जी का उपन्यास 'ग्लोबल गाँव का देवता' तथा 'लालचन असुर' काफी महत्त्वपूर्ण है। इसी माटी की लेखिका 'महुआ माजी की कहानी' 'मोइनी की मुस्कान' तथा 'मैं बोरिशाइल्ला' उपन्यास भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। ज्ञानोदय में प्रकाशित कमल जी की कहानी 'ओ अल्बर्ट' जनजातियों पर बाजारवाद से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त स्वयं आदिवासी साहित्यकार भी हिन्दी एवं विभिन्न जनजातीय भाषाओं में अपनी मिट्टी की महक बिखेर रहे हैं।

हर युग, हर क्षेत्र का साहित्य मानव को वृहत्तर मूल्यों की ओर अनुप्रेरित करता है। आज का दौर जबकि विश्वासों, आस्थाओं की दृष्टि से विघटन और संक्रमण का है, भाषावाद,

क्षेत्रवाद का है, बावजूद इसके यहाँ का साहित्य सृजन जिजीविषा, जीवन के प्रति अगाध विश्वास, निष्ठा और मूल्यों से युक्त है।

साहित्य सृजन का उद्देश्य 'सह हितं भावं साहित्यं' होना चाहिए। प्रतिक्रियावादी नहीं। आजाद भारत में चुनावी राजनीति, दलित, स्त्री तथा जनजातीय विमर्श के नाम पर प्रतिक्रियावादी साहित्य का सृजन किया जा रहा है। जातियों के आधार पर वोट बैंक और ठेकेदार विकसित किए जा रहे हैं। सामाजिकता की बलि दी जा रही है। इन विषम परिस्थितियों से जनजातियों को बचाना होगा।

भारतीय समाज का 10वाँ हिस्सा जनजाति है और झारखण्ड का चौथा हिस्सा। यह सच है कि आज भी ये पूरी तरह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक स्तर पर मुख्यधारा से नहीं जुड़ पाए हैं। भूख, बीमारी एवं अशिक्षा के कारण इनका जीवन बेहाल है। अनेक जनजातियाँ एवं उनकी बोलियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। जंगलों में निवास करने वाले बिरहोरों की दुर्दशा एवं दयनीय स्थिति आज किसी से छुपी हुई नहीं है।

जिस भाषा ने मनुष्य को मनुष्य बनाया, साहित्य ने संस्कारित किया उसी भाषा एवं साहित्य के माध्यम से जनजातियों एवं आदिवासियों के सम्मान की भी रक्षा होनी चाहिए।

संदर्भ संकेत:-

1. झारखण्ड सरकार के जनगणना 2011 के अनुसार।
2. तिवारी, श्री भोलानाथ: 'भाषा विज्ञान'
3. सिंह, केदार: 'पत्थरों के शहर में खो गया है गाँव', एजूकेशन बुक सर्विस, नई दिल्ली, संस्करण-2011, पृ 01

****

SEEMAANT (सीमान्त)

आदिवासी स्त्री-अस्मिता एवं अस्तित्व के सवाल और निर्मला पुतुल

डॉ. रतन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी
गवर्नमेंट कमलानगर कॉलेज
चोंगते, मिजोरम

दुनिया की आधी आबादी कही जाने वाली स्त्री जाति हमारे देश में परंपरागत रूप से हाशिये का जीवन जीने के लिए बाध्य है। वर्तमान में चल पड़े विमर्शों में स्त्री विमर्श के माध्यम से भारतीय स्त्री हाशिये उलांघती नज़र आती है। अपनी अस्मिता और अस्तित्व के सवाल का जवाब ढूँढ़ती हुई गल्ली से दिल्ली तक छलांग लगा रही है। किंतु पुरूषों के चंगुल से अपनी मुक्ति को तलाशती इन चंद महिलाओं ने अपनी लेखनी को अपने तक ही सीमित कर लिया है। हाशिये के समाज की महिलाओं की ओर उनका ध्यान नहीं गया। नतीज़तन दलित विमर्श की भी अनदेखी के कारण दलित स्त्री-लेखन उभर कर सामने आया। यहाँ तक पहुँचकर भी स्त्री समाज का एक हिस्सा उपेक्षित ही रह जाता है। पुरूषों के समान हकदार कही जानेवाली आदिवासी स्त्री क्या अपनी अस्मिता और अस्तित्व के सवाल से मुक्त है? कहने के लिए तो 'मुक्ति' शब्द बड़ा आसान है। पर जलने का दर्द तो राख़ ही जानती है। हां, बात सही है कि आदिवासी स्त्री कभी अपने समाज के पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती थी। बाहरी सभ्य समाज के घुसपैठ के साथ ही आदिवासी स्त्रियों का हक भी छीन लिया गया।

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व आदिवासी समाज में सभी कार्य स्त्री और पुरूष समान रूप से करते थे, संपत्ति का अधिकार समान होता था। वह उनके आगमन के पश्चात् संपत्ति के अधिकार से स्त्रियों को वंचित रखने तथा पुरूष वर्चस्व की दृष्टि से उन्हें हल चलाने, घर का छप्पर छाने या तीर-धनुष चलाने जैसे कामों से वर्जित कर दिया गया। आदिवासी स्त्री एक ओर वर्तमान बाज़ारवाद के कारण मुख्यधारा के समाज से शोषित है तो दूसरी ओर स्त्री होने के कारण अपने ही समाज में शोषित है। इस दोहरे शोषण के दर्द में भी वह अपनी अस्मिता और अस्तित्व को नहीं भूलना चाहती है। निर्मला पुतुल डंके की चोट पर नगाड़े की तरह शब्दों को बजाते हुए इस अन्याय का विरोध करती है। वह अपने समाज की स्त्रियों के साथ हो रहे अन्याय को बखुबी जानती है। वह लिखती हैं कि -

"जानती हूँ कि अपने गाँव बागजोरी की धरती पर
जब तुमने चलाया था हल ...।

पता है बस्ती की नाक बचाने ख़ातिर
तब बैल बनाकर हल में जोता था
जालिमों ने तुम्हें
खूँटे में बाँधकर खिलाया था भूसा ...।
भरी पंचायत में सरेआम
नाच न दी जाओ नंगी 'पकूलमराण्डी' की तरह
बस रहने दो।"[1]

अपने ही समाज द्वारा इस प्रकार के व्यवहार को सुनकर किसी के भी रोंगटे खड़े होना स्वाभाविक है। "पुतुल की लड़ाई तथाकथित 'सभ्य' समाज के विरूद्ध ही नहीं बल्कि अपने समुदाय में पनप रहे महाढोंगियों के विरूद्ध भी है।"[2] अपने ही समाज में उसे एक भोग की वस्तु भर समझा जाता है। वह पुरूष के चंगुल में कैसे फँसी? रमणिका गुप्ता के शब्दों में - "मनुष्य के मौलिक जीन्स से भी अधिक मनुष्य की भौगोलिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थितियों और परिवेश पर ही मनुष्य का विकास आधारित है। स्त्री पर भी यही लागू होता है। बावजूद इसके, एक साझी व्याख्या तो स्त्री की समझ में आ ही गई है कि पुरूष ने उसके मन को गुलाम बनाने से पहले उसे परिवार, ब्याह, संतान और समाज की लक्ष्मण रेखाओं के बाड़े में कैद करके उसके शरीर को गुलाम बनाया और उसे सभी अधिकारों से वंचित किया। पुरूष को जब जरूरत हो प्यार, अलिंगन व चुंबन के हथियार का इस्तेमाल कर या उसके रूप का बखान कर उसे गौरवान्वित किया - सर्वोत्तम करार दिया, लेकिन उसके सब अधिकार छीन लिए ताकि वह उसी के प्रति समर्पित रहे।"[3] आज वह शारीरिक दर्द के साथ-साथ मानसिक दर्द झेलने के लिए भी विवश है। पितृसत्तात्मक समाज में उसे जीवनभरपुरूष पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसे में उसके साथ रिश्तों के रूप में खिलवाड़ किया जाता है। वह एक ही साथ स्थापित और निर्वासित होती रहती है। स्त्री की इस दर्दनाक पीड़ा को निर्मला पुतुल अभिव्यक्त करती हैं -

"तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गाँठ खोलकर
कभी पढ़ा है तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास

अगर नहीं

तो फिर जानते क्या हो तुम

रसोई और बिस्तर के गणित से परे

एक स्त्री के बारे में....।"[4]

पुरूष ने स्त्री के तन के अंदर झाँककर देखने की तक कभी कोशिश नहीं की है। ऐसे में निर्मला पुतुल जानना चाहती है कि पुरूषों के लिए हम स्त्रियां आखिर हैं क्या? कभी पुरूषों के कदम से कदम मिलाकर चलने वाली आदिवासी स्त्री अब उसके लिए घर के उपयोगी वस्तुओं के बराबर मात्र रह गयी है। वह पूँछती है-

"क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए...?

एक तकिया

कि कहीं से थका-मांदा आया और सर टिका दिया ... ।

या ख़ामोशी-भरी दीवार

कि जब चाहा वहाँ कील ठोक दी ... ।

क्यूँ? कहो, क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए?"[5]

आदिवासी स्त्री विवाह के लिए अपनी इच्छा से वर चुनती थी, स्वछंद प्रेम करती थी। पर आज उसके वह सभी अधिकार छीन लिए गए हैं। आज उसे अपने बाबा से गुहार लगाना पड़ रहा है कि-

"बाबा! मुझे उतनी दूर मत ब्याहना... ।

मत ब्याहना उस देश में

जहाँ आदमी से ज्यादा

ईश्वर बसते हों

जंगल नदी पहाड़ नहीं हो जहाँ

वहाँ मत कर आना मेरा लगन।"[6]

उसके इस गुहार में इतनी वेदना है कि उससे किसी भी सहृदय मनुष्य का हृदय पिघल जाना स्वाभाविक है।

वह अपनी संस्कृति को बनाए रखना चाहती है। उसे वही जंगल, नदी, पहाड़ अच्छे लगते हैं जो अपने बाबा के घर में हैं। वह अंदर ही अंदर सहमी हुई है कि जहाँ उसे ब्याहा जाएगा क्या वहाँ यह सबकुछ मिल पाएगा? क्या उसे प्यार करने वाला पति मिल पाएगा?

आज वह जानने लगी है उसके खिलाफ होने वाले षड्यंत्र को। चाहे वह आंतरिक हो या बाहरी। "वह इस छदम् को पहचान गई है। आज वह घर, परिवार, पुरूष का सुरक्षात्मक छाता, रिश्तों की भावनात्मक बेड़ियां - सभी को नकार अपनी अस्मिता के निर्माण के लिए जूझने लगी है।"[7] निर्मला जी बाहरी पुरूषों द्वारा होने वाले स्त्री-शोषण को पहचानकर अपने समाज के लोगों से उसका विरोध करने के लिए कहती हैं-

"मैंने देखा था चुड़कासोरेन!
तुम्हारे पिता को अक्सर हंड़िया पीकर
पिछवाड़े बँसबिट्टी के पास ओघडाए हुए
कठुवाईअँगुलियों से दोना-पत्तल-चटाई बुन
बाज़ार ले जाकर बेचते हुए तुम्हारी माँ को भी
हज़ार-हज़ार कामुक आँखों और सिपाहियों के पंजे झेलती... ।
किसी बाज के चंगुल में चिड़ियों की तरह
फड़फड़ाते हुए एक बार देखा था उसे... ।
देखों तुम्हारे ही आँगन में बैठ
तुम्हारे हाथों बना हंड़िया तुम्हे पिला-पिलाकर
कोई कर रहा है तुम्हारी बहनों से ठिठोली
बीड़ी सुलगाने के बहाने बार-बार उठकर रसोई में जाते
उस आदमी की मंशा पहचानो चुड़कासोरेन।"[8]

यहाँ निर्मला जी चुड़कासोरेन के माध्यम से संपूर्ण आदिवासी समाज को सजग करना चाहती है। उन्हें अपने अस्तित्व और अस्मिता की याद दिलाती है। इन्हीं बाहरी लोगों की घुसपैठ की वज़ह से हो रहे दैहिक शोषण के दर्द को उघारते हुए पुरूषों को ललकारती हुई 'अगर तुम मेरी जगह होते' कविता में लिखती हैं -

"बताओं न कैसे लगता?
जब पीठ थपथपाते हाथ
अचानक माँपने लगते माँसलता की मात्रा
फोटो खींचते, कैमरा के फोकस
होंठो की पपड़ियों से बेखबर
केंद्रित होते छाती के उभारों पर।"[9]

आदिवासी समाज के विकास के नाम पर गैर-आदिवासी समाज उनका शोषण करता रहा है। निर्मला जी इससे वाकिफ़ है। वे चुड़कासोरेन से कहती है -

"उस दिलवार सिंह को मिलकर ढूँढोंचुड़कासोरेन
जो तुम्हारी ही बस्ती की रीता कुजूर को
पढ़ाने-लिखाने का सपना दिखाकर दिल्ली ले भागा
और आनन्द-भोगियों के हाथ बेच दिया।"[10]

हम देख सकते हैं कि किस प्रकार गैर-आदिवासी समाज धीरे-धीरे शिरकत कर पहले आदिवासी समाज को उजाड़ने का और अब उनके स्त्रियों के देह के साथ खिलवाड़ करने का काम कर रहा है। आज आदिवासियों के जंगल उजड़ गए। उनका विस्थापन शहरों के किनारे झोपड़ पट्टियों में हुआ। वहां भी आदिवासी स्त्री अपने ही पुरूष का मार सहकर परिवार का पालन-पोषण करने के लिए तत्पर है। रोजगार के लिए वह दिल्ली जैसे शहरो में जाती है तो काम के नाम पर तन को गिरवी रखने की बात की जाती है। निर्मला जी स्त्रियों के इस दैहिक शोषण का विरोध करती हैं। अपने समाज की माया को दिल्ली में ढूँढ़ती हुई 'तुम कहाँ हो माया' शीर्षक कविता में लिखती हैं -

"दिल्ली के किस कोने में हो तुम?
मयूर विहार, पंजाबी बाग या शहादरा में?
कनाटप्लेस की किसी दुकान में
सेल्सगर्ल हो या
किसी हर्बल कंपनी में पैकर?
कहाँ हो तुम माया? कहाँ हो?
कहीं हो भी सही सलामत या
दिल्ली निगल गयी तुम्हें?"[11]

ऐसे में आदिवासी समाज तथा स्त्रियां जाए तो कहां जाए। आदिवासी स्त्री स्वयं को पुरूष-दृष्टि से देखने के लिए मजबूर है। घर, संतान, प्रेम आदि उसके लिए मात्र एक स्वप्न से अधिक कुछ नहीं रहे हैं। उसका यथार्थ जीवन इतना कटु है कि उससे उसका सपने का जीवन भी अमूर्त हो जाता है। वह अपनी अस्मिता की तलाश को कल्पना में ही ढूँढती रह जाती है।

निर्मला जी इस चाह रूपी अस्मिता की तलाश को 'अपनी जमीन तलाशती बेचैन स्त्री' कविता में अभिव्यक्ति देती हैं-

"अपनी कल्पना में हर रोज
एक ही समय में स्वयं को
हर बेचैन स्त्री तलाशती है
घर, प्रेम, जाति से अलग
अपनी एक ऐसी ज़मीन
जो सिर्फ़ उसकी अपनी हो
एक उन्मुक्त आकाश
जो शब्द से परे हो
एक हाथ
जो हाथ नहीं
उसके होने का आभास हो!"[12]

पुरूष समाज को अखड़ता है स्त्रियों का स्त्री दृष्टि से चीज़ों को देखना, उनका उँची आवाज में बोलना, बड़बड़ाना। स्त्रियों का मर्यादा में रहना, मीठा बोलना, सहनशील होना ही उन्हें पसंद है। नहीं तो उन्हें डर है कि वह हमारे खिलाफ़ विद्रोह कर हमारे एकछत्र अधिकार को छीन लेंगी। उँची आवाज़ में बोलना तो दूर की बात है, सीमोन द बोउवार कहती हैं- 'स्त्री का बड़बड़ाना भी उसका विरोध दर्ज करना है।' स्त्री जान गयी है कि हमारे स्वतंत्र होकर जीने से तथा पुरूषों के समान मिलकर कार्य करने से पुरूषों को आपत्ति है। और अब पुरूष दृष्टि के अनुसार चलना भी संभव नहीं है। निर्मला जी'तुम्हें आपत्ति है' कविता में पुरूष दृष्टि का विरोध करती हैं-

"पर यह कैसे संभव है कि
हम तुम्हारे बने बनाए फ्रेम में जड़ जाएँ
ढल जाएँमनमाफ़िक तुम्हारे साँचे में ...।
मैंने तो चाहा था साथ चलना
मिल बैठकर साथ तुम्हारे
गढ़ना चाहती थी बस्ती का नया मानचित्र

मुझे याद है - जब मैं तल्लीन होती किसी
योजना का प्रारूप बनाने में
या फिर तैयार करने में बस्ती का नक्शा
तुम्हारे भीतर बैठा आदमी
मेरे तन के भूगोल का अध्ययन करने लग जाता।
अब तुम्हीं बताओ !
ऐसे में भला कैसे तुम्हारे संग-साथ बैठकर हँसू-बोलूँ
कैसे मिल-जुलकर
कुछ करने के बारे में सोचूँ? ...।
कैसे धीरे से रखूँ वह बात
जो धीरे रखने की मांग नहीं करती!
क्यू माँ के गर्भ से ही ऐसा पैदा हुई मैं?"[13]

निर्मला पुतुल की कविताएं सवालों की बौछार करती हुई अन्याय के विरूद्ध ललकारती हुई कविताएं है। वह हर पाठक के मस्तिष्क पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती हैं, सोचने के लिए विवश कर देती हैं। इन कविताओं से स्वानुभूति के दर्द की गंध आती है। वह अपने शब्दों को ऐसे फेंकती हैं कि पाठक समाज रूपी नगाड़े पर गिरकर गूँजने लगते हैं। उनकी कविताओं में स्त्रियों की व्यथा-कथा कहने वाली कविताओं की लंबी लिस्ट हैं। जो आदिवासी समाज की स्त्रियों को अन्याय और शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती हैं। आज स्त्री जग गयी है। आदिवासी समाज की भी आँखेखूल गयी है। अब वह बोलने से व आवाज उठाने से कतई नहीं कतराती हैं। जरूरत है तो सिर्फ शासन और समाज के सक्रिय सहयोग की। नहीं तो उसे एक बार फिर से 'सिनगीदई' बनते देर नहीं लगेगी।

संदर्भ

1. Kavitakosh.org (कुछ मत कहो सजोनी किस्कू! (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)

2. निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी जीवन (आदिवासी साहित्य: विविध आयाम) - संतोष तुकाराम टेलकीकर, पृ. 64

3. संपादकीय, खरी खरी बात - युद्धरत आम आदमी, संपादक - रमणिका गुप्ता, पूर्णांक-108, विशेषांक, 2011 (स्त्री-मुक्ति आंदोलन पर केन्द्रित कविता विशेषांक, भाग-1)
4. Kavitakosh.org (क्या तुम जानते हो (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)
5. Kavitakosh.org (क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)
6. Kavitakosh.org (उतनी दूर मत ब्याहना बाबा (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)
7. संपादकीय, खरी खरी बात - युद्धरत आम आदमी, संपादक - रमणिका गुप्ता, पूर्णांक-108, विशेषांक, 2011 (स्त्री-मुक्ति आंदोलन पर केन्द्रित कविता विशेषांक, भाग-1)
8. Kavitakosh.org (चुड़कासोरेन से (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)
9. Kavitakosh.org (अगर तुम मेरी जगह होते (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)
10. Kavitakosh.org (चुड़कासोरेन से (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)
11. तुम कहाँ हो माया (कविता), अपने घर की तलाश में - निर्मला पुतुल, पृष्ठ 31
12. Kavitakosh.org (अपनी ज़मीन तलाशती बेचैन स्त्री (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)
13. Kavitakosh.org (तुम्हें आपत्ति है (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द - निर्मला पुतुल)

****

SEEMAANT (सीमान्त)

मोहन राकेश की कहानियों में अकेलापन की त्रासदी : मेरी प्रिय कहानियाँ।

डॉ. रामाधार प्रजापति
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी
रामकृष्णनगरकॉलेज
करीमगंज, असम

'मेरी प्रिय कहानियाँ' नामक कहानी संग्रह की कहानियों का लेखक और संग्रहकर्ता स्वयं मोहन राकेश ही हैं। ये कहानियाँ पाँच के दशक के बाद की लेखक की अपनी जीवनानुभव पर आधारित हैं। मोहनराकेश स्वातंत्रोत्तर भारत के जाने-माने गद्यकारों में से एक हैं। उनकी कहानियाँ स्वतंत्र भारत के मध्यवर्गीय व्यक्ति के काले उजले विविध पक्ष प्रस्तुत करती हैं। देश विभाजन, आतंक और असुरक्षा, अर्थतंत्र, शिक्षातंत्र में शोषण, पीढ़ियों का फासला, भ्रष्ट राजनीति और नौकरशाही आदि अनेक विषय उन्होंने अपनी कहानियों में उठाया है। ग्लास एक टैंक, जंगला, मंदी, परमात्मा का कुत्ता, ठहरा हुआ चाकू, पाँचवे माले का फ्लैट आदि कहानियों में व्यक्ति की कुण्ठा, असंतोष , ग्लानी, अन्धविश्वास, संत्रास, संबन्धों का विघटन, आर्थिक अनटन, शोषण आदि विषय उनके कथानक का मूल है। उनकी कहानियों के पात्र उदासी और अकेलेपन से ग्रस्त हैं।

प्रस्तुत कहानी संग्रह की भूमिका में उन्होंने कहा है-- "उन दिनों कई कारणों से मैं अपने को, अपने तब तक के परिवेश से बहुत कटा हुआ सा महसूस करता था। जिन व्यक्तियों और संस्कारों के बीच में पलकर बड़ा हुआ था, उनके खोखलेपन को लेकर मन में बड़ी गहरी कटुता और वितृष्णा थी। घर की पूरी जिम्मेदारी सर पर होने से मन उसे निभाने की मजबूरी से छटपटाता था। मैं अपने को किसी तरह विरासत के सब सम्बन्धों से मुक्त कर लेना चाहता था, किन्तु मुक्ति का कोई उपाय नहीं था...मेरी खुद की कहानियाँ इसी मानसिकता की उपज थीं। एक छोटा सा दायरा मात्र तीन चार दोस्तों का, वे सब भी किसी न किसी रूप में अपने अपने परिवेश से ऊबे या कटे हुए लोग थे।"

नौ कहानियों का यह संग्रह किसी न किसी रूप में उनके ह्रदय की इसी पीड़ा को उद्घाटित करने का कार्य करता है। किसी भी रचनाकार की रचना को समझने के लिए उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभव को समझना आवश्यक होता है। रचनाकार की कृति पर उसके परिवेश और परिस्थिति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। मोहन राकेश की रचनाएं भी इससे अछुता नहीं है। भारतीय जन जीवन की अस्त-व्यस्त जिन्दगी ने व्यक्ति को समाज में रहते हुए भी अपनों से दूर कर दिया है। इसके मूल में आर्थिक विपन्नता , अभावग्रस्तता एवं

अकेलापन की कसमकसाहट प्राय: देखी जाती है। संग्रहित कहानियों में लेखक का यह प्रयास स्वातंत्रोत्तर भारत की व्यक्ति और समाज को समझने में सहायक है।

कहानी 'ग्लास एक टैंक' में एक माँ पुत्र से अलग होने की व्यथा से व्यथित है तो एक कन्या अपनी अनदेखे प्रेमी से मिलने के लिए व्याकुल है। 'जंगला' कहानी वृद्ध माता-पिता के कुसंस्कारों में जकड़े होने के कारण उत्पन्न विलगाव की परिस्थिति को ऊँकेरती है तो तीसरी कहानी 'मंदी' आर्थिक मंदी की ऐसी कथा प्रस्तुत करती है जहाँअकेलापन के बोझ से लदा एक वृद्ध एक कप चाय की कमीशन पर काम करता है।'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का नायक सरकार की कार्यवाहियों से जरजर होकर अधिकारियों के खिलाप आवाज उठाता है और अपने कार्य की सिद्धि तक डंटा रहता है तथा दूसरों को भी डंटे रहे की शिक्षा देता है। स्वतंत्रता की मजाक उडानेवालों को अकेले सतर्क करता है। हमारे मध्यवर्गीय समाज का एक बड़ा भाग शहरों में काम ढूंढने आती है। जिसकी त्रासदी यह रही है कि स्थानीय गुंडे उन्हें तंग करते हैं। प्राण के भय से ये युवक वहाँ से भाग जाना चाहते हैं । अपनों से दूर आये उन युवकों की इसी त्रासदी को उद्घाटित करती है कहानी 'ठहरा हुआ चाकू'। इसी प्रकार 'पाँचवे माले का फ्लेट' मध्यवर्गीय जीवन की उस त्रासदी को प्रकाशित करती है, जहाँ अपर्याप्त धनोपार्जन के कारण युवक-युवतियों में ताल-मेल नहीं बैठ पाता और शादी ब्याह से दूर हो अकेला जीवन झेलने लगते हैं।

ये सारी कहानियाँ भारतीय मध्यवर्गीय जन जीवन की अपरिपक्व मानसिकता तथा आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न संकट को दर्शाती हैं। छोटी-छोटी इन कहानियों में अकेलापन की जो कसमकसाहट दिखाई गई है, वह आज की नयीपीढी के अन्दर ज्ञान और नयी सोच तथा ऊर्जा की धारा पैदा करने में सहायक हो सकती है।

इन कहानियों की संरचना उपयुक्त तगती है। इनकी भाषा सरल , सहज और संप्रेषणीय है। कहीं-कहीं ग्रामीण शब्दों, वाक्यों का प्रयोग हुआ है। जिससे दूसरे प्रांत के लोगों को समझने में कठिनाई पैदा हो सकती है। पर यह लेखक का अपना व्यक्तित्व है। अंचल की भाषा, परिवेश और परिस्थिति का चित्रण करना दायित्वशील लेखक का कर्तव्य होता है।

****

लोक तात्विक दृष्टि और तुलसी की कविता

डॉ. धीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी

गवर्नमेंट कमलानगर कॉलेज

चोंगते, मिजोरम

लोकवादी कवि तुलसीदास का समय राजनीतिक सामाजिक दृष्टि से अत्यंत कोलाहलपूर्ण और अशांत था। तथा उनकी कृतियों के अध्ययन से हमें यह बात मालूम पड़ती है। इसी समय में तुलसीदास जैसे समन्वयकारी एवं लोकवादी कवि का उदय हुआ। लोक के महत्व को पहली बार रेखांकित करने का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को है। स्पष्ट है कि तुलसीदास अपनी हर बात प्रमाणित करने के लिए' लोक-वेद' का हवाला देना जरूरी समझते थे।

गोस्वामी तुलसीदास ने वही रामकथा नहीं कही जो वर्षों से निरंतर चली आ रही थी। श्री रमेश कुंतल मेघ के शब्दों में उन्होंने रामकथा का मध्यकालीनीकरण किया है। मध्यकालीनीकरण का तात्पर्य उन आदर्शों तथा धारणाओं की स्वीकृति से है जो पौराणिक चेतना से विकसित होने के बावजूद भी उनसे पृथक तथा परवर्ती है और जो तत्कालीन समाज में परिव्यापत है। इस मध्यकालीनीकरण के द्वारा तुलसीदास ने अतीत को वर्तमान से ही नहीं जोड़ा अपितु वेद शास्त्र अनुप्राणित शिष्ट संस्कृति को लोक-मानस की सहज व स्वभाविक पद्धति में रूपांतरित किया है। उनका 'रामचरित मानस' लोकमत-प्रधान ग्रंथ है, जिसमें जन समुदाय की प्रवृत्तियों, रीति रिवाजों, उत्सवों, त्यौहारों आदि का सम्यक समावेश मिलता है।

इस संदर्भ में सर्वप्रथम 'लोक' शब्द को स्पष्ट करना तर्क संगत होगा। शब्द कोशों में लोक शब्द के अनेक अर्थ मिलते हैं। यहां लोक से तात्पर्य जनसामान्य, लोकसाहित्य, लोकभाषा, लोकगीत, लोककथा आदि प्रयोगों में 'लोक' विशेषण इसी अभिप्राय का द्योतक है। लोक शब्द कहते ही आजकल लोककला, लोकनाटक, लोकनृत्य, लोकसंस्कृति शब्द याद आते हैं। पर एक वह भी समय था जब जन के सीन पर प्रायः लोक और लोक से जुड़े हुए लोकमत लोकधर्म, लोकसंग्रह, लोक मंगल, लोकरंजन शब्द प्रयोग में थे। याद करें तो ये सभी शब्द प्रायः

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की समालोचना के केंद्रबिंदु रहे हैं। आचार्य शुक्ल को इसकी प्रेरणा अपने प्रिय कवि तुलसीदास से प्राप्त हुई थी। तुलसीदास रामचरित मानस में चरित प्रायः लोक शब्द का प्रयोग करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास के लोकतात्विक दृष्टि का परिचय हमें उनके कथ्य में मिल जाता है। उन्होंने ऐसी काव्य रचना का संकल्प लिया था जिसमें 'सुरसरि सम सब कहं हित होई।' की भावना निहित थी। उन्होंने अपने काव्य का नायक उस मर्यादा पुरुषोत्तम राम को चुना जो सगुण-निर्गुण के परे लोक मंगल के प्रतीक हैं। विश्व में जितने भी महापुरुष हुए उन सब की विशेषताएं राम में समवेसित हैं। तुलसी के राम परमब्रह्म परमेश्वर होते हुए भी लोक चित्त की पीड़ा से अभिभूत दिखते हैं। दिनकर के शब्दों में "उस विराट भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका निर्माण आर्यों और द्रविडों ने मिलकर किया था, जिसकी आगाध गहराई में अनेकों विदेशी जातियां आकर विलीन हो गई, जिसके विरुद्ध जैनों और बौद्धों की क्रांन्तियाँ खड़ी हुई और जो इस्लाम तथा ईसाइत के भी आक्रमणों का भी लक्ष्य रहा। शंकर, रामनुज, वल्लभाचार्य, तुलसीदास, विवेकानंद, लोकमान्य तिलक और महामना मालवीय थे सब के सब इसी धर्म के व्याख्याता रहे हैं।

मंगलकाव्य का मूल लोकगीत है। तुलसीदास ने स्वतंत्र रूप में तीन मंगल काव्यों जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, और रामललानहछू की रचना की है। मंगल का अर्थ विवाह भी होता है। विवाह के अवसर पर गाने वाले गीत को मंगल गान कहते हैं-

मंगल गान करहिह वर भामिनी।
मैं सुख मूल मनोहर जामिनी।। (मानस-1/335)

इस प्रकार उन्होंने वैवाहिक संस्कारों के वर्णन में लोक संस्कृति का अनुसरण करके रामकथा का एक प्रकार से ग्राम्यीकरण कर दिया है। शिवपार्वती विवाह, राम-सीता विवाह में मध्यकालीन सांस्कृतिक इतिहासपूर्ण रूप से जीवंत हो चुका है। धनुर्भंग मात्र से राम का विवाह सम्पन्न माना जा सकता था किंतु लौकिक रीतियों के संपादन द्वारा उसकी पुष्टि, गोस्वामी जी की लोकतात्विक दृष्टि का परिचायक है।

तुलसीदास मर्यादावादी कवि थे। लोक मर्यादा का उल्लंघन उन्हें असहज था। इसीलिए उन्होंने लिखा-

जासु रजा प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसी नरक अधिकारी।।

तुलसी ने ही लिखा-

मुखिया मुख सो चाहिए खान पान कहु एक।
पालइ पोसई सकल अंग तुलसी सहित विवेक।।

आचार्य शुक्ल ने तुलसी को लोकमंगल का कवि घोषित किया इस दृष्टि से 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' शीर्षक निबंध सब से महत्वपूर्ण है। लोकमंगल की दृष्टि से आचार्य शुक्ल ने तुलसी और सुर में ही भेद नहीं किया बल्कि तुलसी और कबीर में भी भेद किया है। आचार्य शुक्ल की लोकदृष्टि के विकास का अगला चरण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि में दृष्टिगोचर होता है। 'हिंदी साहित्य की भूमिका'(1941) के आरंभ में ही उन्होंने घोषणा की कि ''मतों, आचार्यों, संप्रदायों और दार्शनिक चिंताओं के मानदंड से लोकचिंता को नहीं नापना चाहता बल्कि लोकचिंता की अपेक्षा में उन्हें देखने की सिफारिश कर रहा हूं। उसी भूमिका में आचार्य द्विवेदी ने ग्रियर्सन के हवाले से स्वीकार किया है कि बुद्धदेव के बाद भारत में सब से बड़े लोकनायक तुलसीदास थे। इस बड़े पद की प्राप्ति में लोक और शास्त्र के व्यापक ज्ञान ने उन्हें सफलता दी। आचार्य द्विवेदी की दृष्टि में तुलसी का ''सारा काव्य समवय की विराट चेष्टा है।''

तुलसीदास की प्रासंगिकता आधार भी उनकी लोकतात्विक दृष्टि और लोक मंगल की भावना ही है। तुलसीदास विश्व बोध के कवि थे। गोस्वामी जी ने घोषित किया कि वे रघुनाथ गाथा को 'सवातः सुखाय' और स्वान्त स्तमः शान्तये के उद्देश्य से लिख रहे हैं। 'मंगल करनि, कलिमल हरनि' ही उनके रामकृपा का प्रतिपाद्य है।

डॉ. रामविलास शर्मा ने भी लोकतत्व पर काफी जोर दिया है। उनके लिए लोकगांव और किसान के पर्याय के रूप में हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ने ही भक्ति आंदोलन को 'लोकजागरण' की संज्ञा दी। सामन्यतः हम कह सकते हैं कि साहित्य का लोकदृष्टि से देखने के कायल आचार्य शुक्ल, आचार द्विवेदी एवं रामविलास शर्मा सभी हैं।

गोस्वामी तुलसीदास मानते थे कि रामचरित्र प्रकृत्या मंगलमय हैं। जहां कहीं भी रामचरित्र या रामकथा की उपस्थिति होगी उसके प्रभाव से मंगल का ही विधान होगा। गोस्वामी जी स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं-

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहू।

सज्जन कुमुद चकोर चित हित विसेषि बड़ लाहु।।

गोस्वामी जी की रामकथा गायन वैश्विक स्तर पर लोकमंगल के विधान का उपक्रम है। गोस्वामी जी की लोक सम्पृक्ति का प्रमाण उनका अनुपमग्रंथ रामचरितमानस है।

उपर्युक्त वर्णन से यह निष्कर्ष निकलता है कि गोस्वामी तुलसीदास की लोकतात्विक चेतना विश्वस्तरीय थी। गोस्वामी जी को लोक के सुख-दुख का व्यापक अनुभव था। गोस्वामी तुलसीदास लोकचेतना के कवि थे उनकी दृष्टि लोकवादी थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. संस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिंह 'दिनकर'
2. तुलसी: आधुनिक वातायन से - डॉ. रमेश कुन्तलमेघ
3. तुलसी- उदयभानुसिंह (संपादक)
4. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
5. हिंदी साहित्य की भूमिका - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. लोकवादी तुलसीदास - विश्वनाथ त्रिपाठी

****

SEEMAANT (सीमान्त)

‘C.C. COY. NO. 27’ THAWNTHU ATANGA A ZIAKTU K.C. LALVUNGA (ZIKPUII PA) THUCHAH :

Lalremliana
Asst. Professor; Department of Mizo
Govt. Kamalanagar College

‘C.C. Coy. No. 27’ tih thawnthu ziaktu K.C. Lalvunga (Zikpuii pa) hi Aizawl lal Hrawva leh Lalluii te fapa niin kum 1929, December ni 27-ah Aizawlah a lo piang a. Kum 1953-ah B.A. a passed a. Hna hrang hrang: - Editor, ‘Zoram Thupuan’; Sub-Inspector of Schools; Headmaster, Champhai & Saitual High School; Member of District Council hnate a thawk phawt a. Kum 1962 khan Indian Foreign Service (IFS)-ah a inziak tling a, Mizo zinga IFS hmasa ber a ni. Kum 1990-ah a pension a, October ni 14, 1994 khan chatuan ram a pan ve ta a ni.

K.C. Lalvunga hi hla phuah thiam leh thutluang ziak thiam tak a ni a. Thutluang - Thawnthu leh essay ziahah hian hriat leh ngaihsan a hlawh zual kan ti thei ang. A hlahril 17 chuanna *‘Zozam Par’* tih bu chu kum 1993 khan a chhuah a. A essay ziak 51 awmna *‘Zikpuii pa Hnuhma’* tih chu kum 2000 khan chhuah a ni bawk. Thawnthu ngaihnawm tak tak panga a ziak a. *‘Nunna Kawng Thuampuiah’* tih thawnthu puitling (novel) a ziah chu Mizo thawnthu (novel) zingah tha ber leh ngaihnawm ber ti an thahnem thin hle. Mizo Academy of Letters chuan kum 1995 khan Academy Award a hlan a. Millennium Celebration Committee chuan kum 2000 khan Writer of the Century atan a puang bawk.

‘C.C. Coy. No.27’ hi kum 1986-a chhuah a ni a, phek 66-a chhah niin, thawnthu ngaihnawm tak leh fuihna tha tak pai a ni. A thawnthu ziak dang pathum nen dah khawmin *‘Lungrualna Tlang’* tih bu kum 1994-ah chhuah a ni a. Chhut hnihna kum 1999-a chhuah hi a ziak a sin deuh a, a fiah tha tawk lo tih lovah chuan sawiselna tur a vang hle. Ralkapzauva, Khawchhak tuipui ral, kawlvalenchham, mawlna chhumpui kara naupang bal tak mai, a rual elna leh a thawhrimna avanga ding chhuak ta chanchin a ni a. A pa chuan Pathian khawngaihna vang pawh ni se, sap a nih theih chu a rinpui ngai lo; mahse, a tum ruhna leh thawhrimna avangin sap (sipai officer) lo ni ta chanchin, ama sawi anga ziak a ni. He thawnthu hi a ngaihnawm hle a, zirlai, naupang leh thalai tan fuihna tha tak a tling. Kum 1920 – 1950 chhung vela mihring nun tar lanna tha tak niin; a bik takin Mizote nunphung hriatna tha tak a ni a. A ziaktuin hringnun a thlirna thufing (Philosophy of life) a inphum teuh bawk. Chung a ziaktu (Zikpuii pa) thu fing leh thuchah thenkhatte chu heti ang hian i’n sawi dawn teh ang :-

1. RUAL ELNA LEH THAWHRIMNA HI HLAWHTLINNA BUL A NI :

Ralkapzauva chu kum 12 a nihin Khawchhak tuipui ral, nun mawlmang tak atangin Middle English School-a pawl 4 zawm turin Aizawl a rawn pan a. A pain Aizawl, a kara zan li riah ngaiah a rawn hruai tum chuan Paikhai Bangla-ah Babu intilal tak mai a hmu a. *"Ka dam chhunga ka mihring hmuh lal ber a la ni hial awm e,"* a ti hial a. A zawhna chhangin a pa chuan lehkha a zir that chuan Pathian khawngaihna azarah Babu chu a nih ve theih mai a rin thu a hrilh a. Mahse, Babu aia lal nih a chak tlat a; a pa erawh chuan Babu aia lal, sap chu Pathian tanpuina pawhin a nih theih a ring lo. Sap a nih theih loh pawhin Babu aia lal, sapte tal nih tumin tumruhna a nei ta a ni.

Pawl 6 a zir lai chuan Shillong-a High School kal Aizawla rawn chawlho a hmuh chuan a ngaisangin a awt em em mai a. Pawl 6 passed ringawtah chuan a lungawi ta lo tawp mai! High School kal ve ngei a duh a, an neihin a tlin si lo. A kawng awm chhun chu an pawla pakhatna nih a, sawrkar chawmna scholarship hmuh a ni. Chuta tang chuan lehkha a zir nasa ta em em a, a guardian paw'n a ngaihtuah hial a nih kha. Fur chawlhah pawh a haw duh lo va, hruai haw tura a pa rawn kal pawh a zui haw duh lo va. A pa pawh chu an hotute phalnain hostel-ah a riak ve ta zawk a; lehkha a zir char char a, chawlhkar thum chhung a pa nen khawpui chhungah an ramriak ta a nih kha. Tichuan pakhatna niin Shillong-ah High School a zawm thei ta a ni.

Ralkapzauva hi rual elna lamah a sang hle a, High School-ah pawh pakhatna nih tumin a bei leh tang tang a. Pawl riatah pakhatna nih tumin thi leh thau pawlhin a zir a, zing khaw var hmain laltin engah a zir a, Sikul ban atanga zankhuain a zir bawk thin. Pawl riatah chuan pakhatna chu a ni ta reng a, pawl 10 (Matric) pawh first division-ah a passed a, subject pali-ah letters a hmu nghe nghe. College kal a tum laiin sipai officer, King's Commissioned Officer hnaah a tling ta a. Officer training-naah pawh a tha ber, best cadet nih tumin a bei leh tang tang a; sap leh vai, a aia hnam tha hlir elin a tang a, a tha ber chu a ni leh ta hial a ni.

Ralkapzauva rual elna, tumruhna, taihmakna, thawhrimna, tawrhchhelna te hi a entawntlak hle. Khawvelin ram kilkhawra a ngaih Mizoramah pawh a kilkhawr lai, khawchhak tawpa lo zi chhuak, Ralkapzauva hlawhtlinna kha a hun lai ngaihtuah phei chuan a ropui takzet a. Ralkapzauva'n *"Thim leh eng inthenna lai"* a tih, mawlna chhumpuiin a khuhna rama naupang bal leh hmelchhe lutuk pawh a beih nasatna avangin khati khawp khan a hlawhtling thei a nih chuan, **hlawhtlinna hi a inhawng zau hle** tih he thawnthu hian min hriattir a. Thawnthu mai ni lovin a taka hmuh tur awm leh awm zel tur a nihzia hretu ka ni ve a, entirna pakhat ni vein ka inhre nghe nghe. Zikpuii pa (K.C. Lalvunga) hian he thawnthu hmang hian zirlai leh thalaite tan thuchah leh fuihna ropui tak a hnutchhiah a ni.

SEEMANT (सीमान्त)

2. KAN DINHMUN AWH TAK PAWH HI A HMUN HAN THLEN CHUAN ENG UAL A LO NI LO :

He thu hi Ralkapzauva sawi a ni a. Aizawlah pawl li zira kum khat a awm hnua an khuaa a haw leh tuma a sawi a ni. An khaw paho chuan sap tawng thiam viau tawh turah an ngai a; mahse, an rin angin a la thiam lo. Amah ngei paw'n thiama a inrin ang a nih loh avangin *"Kan dinhmun awh tak pawh hi a hmun han thlen chuan eng ual a lo ni lova,"* a ti ta a ni.

Middle School a kal laiin High School kal ho a awt em em a. High School kal theih nan theihtawp a chhuah a, a kal ta mai reng a. Shillong-a kum khat High School a kal hnua a haw leh tumin Aizawlah a cham a. Chawlhniah second hand kawr thar leh kekawrtlawn thar hain a thiante nen High School naupang lenin an leng a, *"Min awt awm reng reng tu mah ka hmu lo!!"* a ti bawk.

Ralkapzauva kha a naupan laia a nih phak loh tura a ngaih, a nih chak em em sap a ni ta a. Sipai Officer a training zawh a, an khuaa a haw khan nuam a ni vak miah lo! Hmana a thiante khan thinlung takin an kawm thei tawh lo va, lalho lah chuan an tih dui mai a, khawharthlak a ti hle. *"Sap nih te hi khuavang thawnthua hlimna zawng zawng neih kimna tur ang chi e'maw kan lo ti kha chu kan lo hmu sual deuh a ni. Thinlung takin min pawh thei lo va, mi chuang tlai, awm ve lo tur awm ka ang a, sap nih chu thil namen a lo ni lo. Khawvelah hian a eng ber nge nuam tih pawh ka hre ta lo!"* a ti hial a ni.

Heng thu hi mihring nuna thil awm ngei, he thawnthu ziaktu Zikpuii pa hian Ralkapzauva a tawntir a, a sawi chhuahtir mai niin a lang. He thawnthu ziaktu ngei pawh hian a taka a tawn ngei a rinawm. **Mihring hi hmasawn zel tur, duhtawk nei lo kan nih avangin kan chak ber kan nih leh kan duh ber kan neih pawh hian kan chakna leh kan duhna chu a la tawp mai ngai lo.** Kan lo rin angin nuam zawng zawng leh hlimna zawng zawng neihna a lo ni ngai lo. Chu chu mihring pangngai awm dan tur reng a ni awm e. Nih tum nih tak avanga duhtawk mai a, nuam lutuka hman tumte chu an kal sual phah zawk fo. An nunna paw'n a daih rei loh phah chawk zawk thin.

3. MI INNGAITLAWM CHU RANG DEUHIN MI DANG PAWHIN AN NGAITLAWM MAI THIN :

He thu hi Ralkapzauva te khaw lal, Dolura'n Ralkapzauva hnena a sawi a ni. He thawnthu ziaktu K.C. Lalvunga hian a ngaihdan lian tak, mite'n hria se a tih, mi zinga han sawi lawng lawng ngam chiah si loh chu Ralkapzauva te khaw lal, Dolura hi a sawi chhuahtir niin a lang. Ralkapzauva'n sipai Officer a training zawha an khuaa a haw khan an lo dah sap hle a. *"Sap inah chuan kal pawh ka chak lo, a thianghlim si, an chaw ei dan te khu ka ei tui*

thei lo," Dolura'n a tih khan Ralkapzauva pa chuan, *"Chuti angin Taia te awmnaah chuan kan ti lo tawp anga a ni mai alawm,"* a ti a, Dolura chuan, *"An thiante'n an zah ve kan duh anga a pawnpui (carpet) phah hlai hlai an nih a tul tlat a ni; keimahni vangin,"* a ti ve tlat.

An khaw lal, Dolura'n chaw eia a sawm tum pawhin sap thutthlengah Ralkapzauva chauh a thuttir a, mi dang chu chhuatah an thu a. Ralkapzauva khan, *"Mahni khuaah te sap anga chei tur ka ni hleinem,"* a ti a. Lal, Dolura chuan, *"Taia inngaitlawm vel duh suh. Mi inngaitlawm chu rang deuhin mi dang pawhin an ngaitlawm mai a nia,"* a ti a. Ralkapzauva chuan *"Sap chu ka ni a, mahse ka Mizona a bo chuang lo. Ka intihsap chuan thenrual thate kan tivui ang a, min rel ru viau maithei asin,"* a ti a. Dolura chuan, *"I Mizona chu chuti maiin a bo lovang; mahse, i nihna angin i awm tur a ni. Mahni nihna luah zo lo chu miin engah mah an ngai lo. Chuti anga reltute chuan zahawma i awm an phal lo a ni mai alawm; i inngaihtlawmna pawh chu eng hu-ah va ngai suh,"* a ti ve tlat thung.

He lai thuah hian Zikpuii pa hian Mizote'n kan tlakchham tak - mi ngaihsanawm ngaihsan te, mahni chunga mi dah chungnun te, zah tur zah thiam te, nihna mila nun te min zirtir a tum niin a lang. Mihring kan nih chhung chuan Ralkapzauva te khaw lal, Dolura thu hi a dik reng zawk hmel tlat. Mizote zingah chuan sawi neuh neuh hi a tam khawp mai. *'A indah sang, a inla, a inti-Officer lutuk,'* kan tia kan sawisel thin. Inti-Officer lovin nun hniam deuhin khawsa se, *'Officer ve si a ho leh lutuk,'* kan ti leh tho awm e. *'A indah hniam, a inti-Officer lo,'* kan tihte hi kan zah lo leh viau va, kan ring leh tak tak lo ang lawi si niin a lang tlat!!

Hmanlai Mizo nun chu a hniam rual angreng a, lal leh a khawnbawl upate, thangchhuahte chu an dah chungnung ngei a; mahse, an ei zawn dan a inang tlang a, khawsak sang bik lutuka khawsakna an neih bik chuan loh avangin Mizo khawtlang nun chu intluk tlang tak a ni. Tun thleng hian kan hnam nun bulthut leh kan Kristianna avang hian hnam dang ngaihtuah chuan hnam intluk tlang tak chu kan la nih hmel tho mai. Mahse, khawvel mila kan inher rem ve zel hi Zikpuii pa hian a duh a, he thawnthuah hian thuchah pawimawh tak a zep niin a lang.

Pathian thu chuan inngaitlawm turin min zirtir nasa hle. Kristiante chu Lal Isua nun entawna inngaitlawm tur kan ni. (Philippi 2:8) Hmun eng emaw zatah Kristiante inngaihtlawmna tur hi Bible-ah kan hmu a. Philippi 2:3-ah phei chuan *'Inngaitlawm takin mahni aiin mi dang tha zawkah ruat theuh rawh se,'* ('The Holy Bible' P - 1164) tih a ni hial a. Rom 12:16-ah chuan *'Inngaihtuah sang lutuk suh ula, mi tete pawl zawk rawh u,'* ('The Holy Bible' P - 1123) tih kan hmu bawk. Chu vangin Kristiante chu kan inngaitlawm tur a ni a, Mizo Kristian ngatte phei chu indahsan viau kha thil remchang lo tak a ni. Chutih rual

chuan Jakoba 4:10-ah chuan *'Lalpa mithmuhin inngaitlawm rawh u, tichuan a chawimawi ang che u,'* ('The Holy Bible' P-1199) tih a ni thung. Mihring chuan inngaitlawmah min lo ngai tawk lo pawh ni se, Pathian mithmuhah kan inngaihtlawm miau chuan a tha tawk viau tih theih a ni awm e.

Eng pawh ni se, indahsang bik awm lova khawsakho chu a nuam ngawt ang. Mahni hmasialna te, itsikna te, chapona te, duhamna te, indahchunnunna te awm lohna nun min pek hi Lal Isua tum ber leh khawvela a lo kal a, kan tana a thih chhan lian tak chu a ni ngei mai. Mahse, chu **Pathian Ram chu tun thleng hian khawvelah hian din pumhlum a la ni lo niin a lang.** Pathian ram ni lova khawvel a nih miau avangin Dolura thu hi a dik a, a la dik zel dawn a nih hmel. William Shakespeare-a drama '*Hamlet'*-ah chuan Polonia chuan a fapa, Laertes-a hnenah, *"Mi nelawm nih tum la, ninawm leh entleu hawlh khawp tur erawh chuan nelawm tum suh ang che."* ('Hamlet leh a ziaktu' P - 65) a ti a. Mizo tawnga a audio album-ah chuan, *"Mi hmuhsit tur khawpin nelawm suh la,"* tih a ni thung. **Inngaihtlawmna te, inphahhniamna te, nelawmna te hi mi entleu te, hmuhsit te, ngaihnep te hlawh theihna, hmanlai atangin tun thleng hian a lo ni!!**

He thawnthu ziak tu Zikpuii pa hian mihring nuna thil thleng tak tak thei, Ralkapzauva chungah a thlentir a. Siam that a duhna chu Dolura hmangin a sawi chhuak tih theih a ni. Amah pawh hi lo inngaitlawm sual tawh leh lo nelawm sual tawh a ni maithei. He thawnthu ka chhiar tirh chuan K.C.Lalvunga hian a ti mah mah ka ti thin. Kei pawh Kristianna avang leh Mizo nawlpui duh dan nia ka hriat avanga tlawm tak leh nelawm taka awm tum hram hram mi ka ni. Mahse, mi'n min ngaihnep phah ka hre fo mai. Pathian thu avanga inngaitlawm ka nia a pawi lo ka ti mai thin. Mahse, Pathian thu avanga inngaitlawm ka ni tih an hre thin si lo hi a pawi ta thin a ni. Officer, Sawrkar hna thawh (duty) avanga zin, driver-in a tul anga motor a khalh duh loh khum; kopanga a tlan lawnpui thuak thuak, kawngpui zau takah motor dang tlan awm miah lova kawng sir hnim a nekpui char char ka nih hnu hi chuan ka ngaihdan chu a dang ve ta viau a, insiam that deuh chu ka ngai ve niin ka hria.

Kan nihna hi kan hre chiang tur a ni a, nihna mila nun hman kan tum a thain a tul hle. Mahni zawlpuite laka indah sang a, indah ropui bik erawh kan tum loh tawp tur a ni. Roreltu leh kaihruaituin rorel leh mite kaihhruai a tum lo va, a hnuaia mite thu thua a awm chuan hringnun a zawh dik lo a ni ang. Chhungkuaa pa ber, a nupui leh fate thu thua a awm chuan pa nih a tling lo va, hringnun a man pha lo a tih theih ang. Chhawng chung zawka awm turin chhawng hnuai zawka awm a chuh tlat chuan chhawng hnuai zawkah buaina a thlen thei. Chhawng hnuai zawka awmte'n chhawng chunga awm tur chhawng hnuai zawka

awmtir an tum tlat a nih chuan leilung dan an man lo hle a, buaina leh harsatna an insiam chawp mai a ni ang.

4. HOSTEL-A RAGGING THAT LOHNA :

Hostel-a awm/lut thar, a lo awm hmasa leh awm rei tawhte'n an tihduhdahna hi ragging an ti thin. He thawnthu ziaktu hian Ralkapzauva hmangin tha a tih lohzia leh siam that tul a tihzia a sawi chhuak niin a lang. Ralkapzauva kha a thawhrim rah sengin Shillong-ah High School a kal thei ta a. Shillong Govt. High School-a Earle Hostel a thlen hlima kawt laia an inrulpuiludintir khan zak hle mah se, a tlangnel phah zawkin a hria a. Headmaster huana per thei (Pear) an lawhtir a, headmaster chuan a man ta hlauh mai a. Zirtirtute hnenah a inpuan a, a tirtu a sawi khan a Mizopui, pawl sang zawkte'n an tihduhdahna hrehawm a tihzia kha thil awm tak tak thei a ni awm e. An khua a ngai em em a, haw mai te a duh rum rum a, lehkha pawh a zir tha thei lo a ni. *"Chumi zan tluk reng rengin ka nu ka la ngai ngai lo!"* a ti hial a. *"Aw, retheih hi chu a va na tak em!"* tiin zak leh hrehawm ti takin hun a hmang a. Lehkha a zir sang chho zel thei a nih chuan chutianga naupang chinchang hre lo nghaisak vak vak chu tihtawp a tum ruh ta hle a ni.

He thawnthu ziaktu Zikpuii pa pawh hian ragging hi a lo tuar ve tawh pawh a ni maithei. Tha lo a tihzia leh siam that a duhzia Ralkapzauva hmang hian a puang chhuak a nih hmel viau a ni. **Ragging hi thil tha lo tak; thatna lai tlem te nei ve a ni a.** Hostel-a lut tharte tihtlangnel nan leh upa zawkte an zah thiam nana chin chhuah a nih hmel a. Intihhmuhna avangin a hluar tawlh tawlh a, innghaisakna tih mai tur thlenga uar a nih tak avangin tha lo tihna a lo lian a, tunah chuan a nep tawh viauvin a lang.

5. MIHRING DINHMUN INTHLAUH THEIH DAN :

He thawnthu hming 'C.C. Coy. No. 27' put chhan hi Ralkapzauva'n Shillong khawpuia a Kuli (Puak phur) chhawr thin leh a ngainat, amah tanpui thintu Bahabur-a Kuli number, dar phek biala inziak chu a ni a. Kalkapzauva pa leh Bahadur-a te hi Khawvel Indopui - I-naah khan France ramah German dovin sipaiah an lo tang ve ve tawh a. Ralkapzauva pa chu an khaw parawn a ni chho mai a, Bahadur-a erawh chu mi kamchhe tleuhna niin, mi puak phurin a tar hnu thlengin a inhlawh a. Ralkapzauva chu a pa tanpuinain lehkha a zir sang a, sap (Officer) a ni thei ta hial a, Bahadur-a fapa, Bahadur-a ve tho erawh chu a pa Kuli number chhawmin Kuli a ni chho ve ta zel a. Indopui - I-naa sipaia tang ve ve fate chu an dinhmun a inthlau ta hle a ni.

He dihhmun inthlauhna hi he thawnthu ziaktu hian a chhan a sawi lem lo va, a chhiartute ngaihtuah zui turin a dah a ni mai awm e. **Rual elna, tumruhna, thawhrimna Ralkapzauva te pafain an neih ang hi Bahadur-a te pafa hian an nei ve lo a nih hmel**

viau a ni. Tumruhna leh thawhrimna avanga Ralkapzauva hlawhtlinna tichiangtu pakhat chu Bahadur-a te pafa kha an ni. Ralkapzauva chuan Bahadura nun tlawm tak chu a ngaina a, a khawngaih hle bawk a, Officer a nih hnu pawhin cheng sawmthum pek a tum a, amah a awm tawh loh avangin a fapa, Bahadur-a ve tho chu a pe ta a ni.

6. MIHRING LAWMNA TE HI A THIL DAWN TAM VANG PAWH A NI LO, A DAWNGTU DINHMUNA THU ZAWK A NI :

He thu hi thu dik awm sa tih mai theih a ni a; mahse, mangnghilh mai theih a ni thung. Ralkapzauva'n pawl li zawm tura Aizawla a pa'n a zuk hruai khan zirtirtute khan pawl thum a passed that avangin chawmna scholarship, thla tin cheng thum a hmuh tur thu an lo hrilh a. Chu thu Ralkapzauva te pafain an han hria chu an lawm em em mai a, *"Mi hausa tan chuan engmah tham ni lo mah se, keini pafa tan chuan nunna a ni,"* a ti hial a. Chutah, *"Mihring Lawmna te hi a thil dawn tam vang pawh a ni lo, a dawngtu dinhmuna thu zawk a lo ni a,"* a ti bawk.

He lai thu pawh hi K.C. Lalvunga hian mihring nuna thil awm thin, kan hriat chian tawk loh thin Ralkapzauva hmangin min hrilh nawn a ni ber mai. **Kan thil dawna lawm zel thei tur chuan kan indahsan loh a pawimawh hle. Mahni dinhmun hre lek lova beisei san lutuk te hi vuina leh lunghnurna min thlentu mai a ni chawk.** Naupang chu cheng nga kan pek pawhin an lawm em em a, an han lian deuh a, an beisei a san deuh hnu chuan cheng ngaah an lawm zo meuh tawh lo thin. Pathian khawngaihna leh malsawmna inang tlanga chang theuh theuh pawh hi kan inlawm hleih hle thin.

7. MIHRING ZE PUMPUI LANNA PAWIMAWH TAK - CHAW EI DAN :

Ralkapzauva'n sipai officer hna a dil tih an headmaster-in a hriat khan hostel-ah thlentir phal lovin an inah a thlentir a. *"Officer hna i dil chuan a hmasa berin chaw ei dan i thiam tur a ni,"* tiin chemte hman dan te, thir kut leh thirfian hman dan te, napkin leh rawmawl hman dan te, chaw thial dan thlengin a zirtir a nih kha. A tirah ngai ho deuh mah se, Mihring ze pumpui lanna pawimawh tak a ni tih a hriat chhuah thu Ralkapzauva chuan a sawi a ni.

He lai thu hi Zikpuii pa hian Mizote tan Ralkapzauva hi a sawitir a nih hmel hle. Kei pawhin ka chhiar tirh chuan ka ngai ho deuh a, tunah chuan thil pawimawh tak tih ka hre ve ta. Mizote chuan chaw ei lai hi 'Hmelchhiat lai' kan ti mai thin. Chaw kan ei thianghlim lo va, kan che tawp a, mi hmuh atan a duhawm loh em avangin hmelchhiat lai kan lo ti hi a inhmeh hle. Chu vangin mi chaw ei laia len chu tih chi-ah kan ngai meuh lo. **Kan chaw ei dan atang hian kan fin leh fin loh te, kan changkan leh changkan loh te, mi dang mitmei venna chang kan hriat leh hriat loh te, thianghlimna kan ngaih pawimawh leh ngaih**

pawimawh loh dan te a lo lang chhuak chiang hle a lo ni. Tunah chuan chhungkua chauha chaw ei reng theih a ni tawh lo va, zinnaah te, puipunnaah te *'Hmelchhiat lai'* kan neih reng loh nan chaw ei dan mawi leh tha kan chin deuh deuh a pawimawh hle.

Hmanlai chuan Mizote chuan thlengpuiah chhungkuain chaw an ei mai thin. Mikhual tan a hrehawm duh ngawt ang; thlen in pitar chaw chawm kan hma zawnah a rawn luang eng nguai mai dawn a nia!! Tun thleng hian chaw ei dan uluk tawk lo kan la awm nual awm e. Chhungkuaa kan zir hmasak loh chuan mikhual neih huna chet thianghlim thut a harsa tawh thin. Chaw ei dan thianghlim leh changkang hi Mizote hmasawnna tur pawimawh tak a ni tih hriain he thawnthuah hian Zikpuii pa hian Ralkapzauva hmang hian a rawn tar lang kan ti thei ang.

8. HMANLAI MIZO KHAWTLANG NUN, MIHRING INHMANGAIH HUN LAI KHA MIZORAM HUN RANGKACHAK A NI :

Sailo lal rorel hun lai, hmanlai Mizo khawtlang nun, inpawhtawn leh inhmangaihtawn nun hlutzia kha Zikpuii pa hian he thawnthuah hian a tar lang tha hle. Ralkapzauva'n Shillong-a High School a zawm dawn khan an khaw thalai (YLA)-te'n thlahna inkhawm an hmang a. Thilpek tam tak pein, a tukah kawtchhuahah hla sa chungin an thlah liam a nih kha. Shillong-a kum khat a awm hnu, pawl sarihah an pawla pakhatna ni chunga a haw pawh khan an lawmpuiin an lo lawm nasa hle. A lawmna inkhawm an hmang leh a, thilpek tam tak a dawng leh a ni. An lalpa, Dolura chuan Ralkapzauva, School zawm tura a kalin tlangval pathumin a bungrua an ahsak thin tur a ni a ti ta mauh mai! Ralkapzauva te chhungkua chuan hreh hle mah se, tlangval sawmthum rawn inpe zinga an laina hnai pathum an thlang a, an thlah ta a nih kha. Ralkapzauva chuan chung hun laia Mizo nun nawmzia chu sawiin, *"Ramtuileilo leh hrisel lote chu a khawtlangin kan pui a, hakchham hnenah buh kan hak a, mi vanduai kan pui a, kan hnem a, chung hun lai chu Mizoram hun rangkachak a ni. Kan dante chu dan rangkachak a ni."* a ti hial a ni.

Hmanlai Mizo nun kha a duhawm hle a, an khawsak a inan tlan avang te, rual elna tur dang a awm tehchiam loh avangte a ni maithei. Nun inelna te, itsikna te, inhuphurhna te, duhamna leh pamhamna te'n a tihbuai loh nun kha nun duhawm, nun hlu chu a ni ngei mai. **Tlawmngaihna te, mi dang duhsakna te, mi dang pawi sawi hlauhna te, mi dang lawmna lawmpui theihna te, mi dang tanpui duhna te kha nun duhawm, nun rangkachak kan tithei ang.** Chu nun chu Pathian thu nen pawh a inrem em em a; Zikpuii pa hian hlu a tihzia Ralkapzauva hmangin a sawi chhuak a, *'Mizoram hun rangkachak'* a tihtir ta hial a ni.

REFERENCES :

1. Khiangte Laltluangliana, Dr. : *'Hamlet leh a Ziaktu'* LTL Publications; Felfim Computers, Mission Veng : Aizawl, 2002.

2. Lalduhawma, C., Colney Lalzuia, Lalthangliana, B (Eds) : '*Ziakmite Chanchin'* Mizo Writers' Association; Gilzom Offset, Electric Veng : Aizawl. 2002.

3. Ngente Lalrammawia : *'Dardu'* Department of Mizo, Mizoram University; Ebenezer Offset, Luangmual Vengthlang : Aizawl, 2020.

4. The Bible Society of India : *'Pathian Lehkhabu Thianghlim (The Holy Bible)'* O.V. Reverence: Vinesh Offset, Chennai : India, 2008.

5. Zikpuii pa : *'Lungrualna Tlang'* MCL Publications: Lengchhawn Press, Khatla : Aizawl, 1999 (2nd. Edition)

****

SEEMAANT (सीमांत)

An Ecocritical study of Kalidasa's Abhighyan Shakuntala

Dr. Satyajit Das
Associate Professor
Deparment of English
Government Kamalanagar College, Mizoram

"If you wish to enjoy the fragrance of spring flowers and flavours of summer fruits together, or wish to see something that enthralls, be witches, entices and satiates you, all at the same time, then you must savour the Abhigyan Shakuntalam."_____ Goethe

Though Ecocritical studies gained ground by the second half of the twentieth century, which is a recent development, concern and compassion for nature, its integral relationship with human existence and the realization of divinity sprung out of this bond were represented in Indian literature many centuries back. The physical environment did not only play metaphorical roles in literary works but it took a vital place in almost all the classical texts. This is unquestionably evident in *Abhigyan Shakunatala* written in the fifth century BC by the Kalidasa. Though it is a play representing the story of love, separation and reunion but if seen from an ecocritical view we shall find that this play does not only evidence a deep love for nature explicitly and not implicitly, care for nature as a social, moral, ethical and religious responsibility carried out with great devotion but also gives priority of concern to nature and everything in it. All the dialogues and expressions since the very beginning of the play, shows Kalidasa's ecocentric glorification and compassion of nature which subordinates the human existence as well. Kalidasa and his world understood in the fifth century what modern world is grappling with, in ecocriticism or green studies: 'that the world was not made for man, that man reaches his full stature only as he realises the dignity and worth of life that is not human.' (Arthur.W.Ryder)

Observing representation of nature in *Abhigyan Shakuntala* brings forth a very sensitive involvement with environment, free of selective and selfish politics. Ecocritical study of landscape, nature, geography in this drama becomes voluble of its deep ecologist culture. Landscape is caring, nature is cared for and geography divided into two parts, hermitage and palace, one engaged with nature other committed to protecting it.

The playwright, ascribes values to nature in his drama that has two settings, hermitage in early part of drama and palace in second half. Whatever exists has a right to exist and humans lose themselves in

serving nature instead of exploiting it from an assumed superior hierarchy. Fawns mingle with humans in trust at the hermitage. Shakuntala calls *madhavi* vine her sister and waters plants even before drinking herself. King Dushyant considers himself responsible for the flourishing of flora and fauna and prays that no sin of his, cause damage to any of it. Herein "human accountability to the environment is part of the text's ethical orientation" (Buell) It is obvious, unlike modern times, there was no huge gap between literary preoccupations and the environment.

Arne Naess and George Sessions in April 1984, during a camping trip in Death Valley, California formulated the Deep Ecology Platform in which eight vital ecocentric points were put forward for study. Some of the eight-point platform is clearly justified by *Abhigyan Shakuntala*:

'1. Human and nonhuman life alike have inherent value.' (Bron Taylor 457) Borne of greedy indifference towards nature, human interest was not the only legitimate claim. Hermit at Kanva Rishi's *tapovan* (forest meant for penance and not exploitation.) plead with the king to save the deer: -

> *'O King, this deer belongs to the hermitage. 'Why should his tender form expire, as blossoms perish in the fire? How could that gentle life endure the deadly arrow, sharp and sure? Restore your arrow to the quiver; to you were weapons lent The broken-hearted to deliver, Not strike the innocent.'*
>
> King (bowing low)- '*It is done.'* (He does so.)
> Hermit (joyfully)- *'A deed worthy of you, scion of Puru's race, and shining example of kings. May you beget a son to rule earth and heaven.'* (Arthur.W.Ryder act 1)

2. Richness and diversity of life contribute to realizing these values, and are themselves valuable. (Bron Taylor 457) Kalidasa's Shakuntala 'sustain(ed) an interest in nature for itself.' (Garrard 35). She says-

> *'Ever since I saw the good king who protects the pious grove... I love him, and it makes me feel like this.* (looking ahead) She says:
> '*Oh, girls, that mango-tree is trying to tell me something with his branches that move in the wind like fingers as if gesturing me to come. I must go and see him.'* (She does so.)
> Anusuya- *'Oh, Shakuntala! Here is the jasmine-vine that you named Light of the Grove. She has chosen the mango-tree as her husband.'*

Shakuntala (approaches and looks at it, joyfully). *'What a pretty pair they make. The jasmine shows her youth in her fresh flowers, and the mango-tree shows his strength in his ripening fruit.'* (She stands gazing at them.) (Arthur.W.Ryder act 1)

3. Humans have no right to reduce richness or diversity except to satisfy vital needs. (Bron Taylor) This is so well expressed in the king's lament over a probable disaster when messengers from Rishi Kanva's hermitage reach his palace. The monarch is worried about flora and fauna lest some species became extinct because of his sins.

5. Present human interference with the nonhuman world is already excessive and is worsening. (Bron Taylor)

A voice against excessive human interference is heard from behind the scenes.

'*Hermits! Hermits! Prepare to defend the creatures in our pious grove. King Dushyanta is hunting in the neighbourhood'.* (Arthur.W.Ryder act 1)

Later the little prince Sarvadaman Bharata playing with the lion's cub could be seen as human interference in the natural world, dangers of which are being explained to the child by his attendants and the hermit women's cry for help. The attendants tell little baby prince *'the lioness will chase you'* (Sinh act 7, 91)'The lioness will spring at you if you don't let her baby go.' (Arthur.W.Ryder act 7).But in both the translations referred to, they do not say lioness will kill little Bharat, which could be the only response if at all the situation is reenacted today. Combined with the hermit women's response, little princes's insistence upon counting the teeth of the cub speaks volumes of a trustful co existence between man and beast. This couldn't have been possible without sufficient checks, social and moral, on human interference.

6. Economic, technological, and ideological policies must be changed, in a way that leads to state of affairs deeply different from the present. But policies in Kalidasa's dramatic world clearly were nature friendly where the responsibilities of protecting enviornment rested on king. Even though the king and the palace unlike hermitage do not appear to be directly involved with the nurture of nature, were responsible for the protection to hermitage and flora and fauna. Good King Dushyant was fully conscious of it.

'Do leaguèd powers of sin conspire to balk religion's pure desire? Has wrong been done to beasts that roam contented round the hermits' home? Do plants no longer bud and flower, to

warn me of abuse of power? These doubts and more assail my mind, but leave me puzzled, lost, and blind.' (Arthur.W.Ryder act 5) Above expression clearly speaks of king's accountability to safeguard the species.

Shakuntala did not drink water before watering the plants. Her friends take us into a heightened sensitivity/perception of the pure, pristine natural culture where nature is revered, nurtured and protected selflessly and nature provides sustenance, solace, hope..... and many more. We see many hermitage girls carrying pots, according to their strength, to water the trees. King enters the hermitage in all humbleness, stripping himself of all kingly marks of pride (jewels and bow), not wanting to appear arrogant in humble surroundings and disturb its beautiful mutually (man and nature's) sensitive coexistence in beauty and harmony.

First friend-*'It seems to me, dear, that Father Kanva cares more for the hermitage trees than he does for you. You are delicate as a jasmine blossom, yet he tells you to fill the trenches about the trees.'*
Shakuntala- *'Oh, it isn't Father's bidding so much. I feel like a real sister to them.' (She waters the trees.)* (Arthur.W.Ryder act 4)

The most touching highlight of Shakuntala's deep love for nature we hear of is at her departure, in rishi Kanva seeking blessings from the plants that she always watered first, before drinking herself. Despite her longings for the king she seeks the well being of the pregnant and tired doe roaming around the hermitage. A strong example of mutual love, care, concern and trust between the doe and Shakuntala and doe's well being is worthy of news. Love for nature and its species is interwoven and reciprocated in their very existence. When Shakuntala is about to leave the hermitage the faun stops her.

Shakuntala (stumbling) '*Oh, oh! Who is it that keeps pulling at my dress, as if to hinder me?'*
(She turns round to see.)
Kanva-'*It is the fawn whose lip, when torn by kusha-grass, you soothed with oil; the fawn who gladly nibbled corn held in your hand; with loving toil you have adopted him, and he would never leave you willingly.*'

Abhigyan Shakuntala begins with a detailed observation of facts of nature painted beautifully. A symbiotic and sustainable relationship between nature and Hermits is expressed with heightened sensitivity towards nature. Kalidasa's writing is an exposition of

love for external nature. His instinctive belief in *advaitvad*(monotheism/non duality), to feel that all life, from plant to god, is truly one; is visible in the reverence shown towards nature in the drama. This thought is very much in sync with the 'deep ecologist's' non anthropocentric stance.

'Ecocentric values of meticulous observation, collective ethical responsibility and the claims of the world beyond ourselves' (Barry 255) is visible in Priyamvada's reminder to Shakuntala that she owes Priyamvada watering of two rows of trees. And then we hear the alarming cry of hermits, let us assume, symbolical of nature herself and the massive animal, destroying the *tapovan* mindlessly of so called developed/cultured/civilized city life that is taking mad destructive leaps towards nature. The hermits cry against the attack for protection and seek help of the king. King having fallen in love with Shakuntala, stops short of killing deers, his beloved's companion who taught innocence to her. This very love prevented tigress's attack on King Sarvadaman Bharata when he played with her cubs. In other words love inspires care and protection and contrarily lovelessness inspires ruthless avaricious insensitive loot and plunder and mutual killing; that is commons today between man and nature.

Of Kalidasa, Arthur.W.Ryder says, 'Rarely has a man walked our earth who observed the phenomena of living nature as accurately as he, though his accuracy was of course that of the poet, not that of the scientist.' Kalidasa writes *'The hornèd buffalo may shake the turbid water of the lake; shade-seeking deer may chew the cud, boars dig and eat the roots of swamp-grass in the mud.' Shakuntala* fell in love with the king the moment she saw him protect the pious grove. Such detailed observation of animal's nature cannot be merely poetic as Ryder would have it. On the contrary Kalidas, without an innate and sensitive awareness of nature, could not have written with mind and senses ever alert to nature showing a loving/devoted/intelligent symbiotic relationship between his protagonist Shakuntala and her natural surroundings to which King Dushyant too, willingly bows with respect. *'There is a little fawn, looking all about him. He has probably lost his mother and is trying to find her. I am going to help him.'* says Priyamvada in (Arthur.W.Ryder act 3). This deeply seated sensitivity borne care for nature pervading the hermitage also infects King's heart when in its company. That consciousness must have been inherent component of daily living over ages to be powerful enough to affect the King thus. Only a deep devotion to nature can respond as Shakuntala does.

There is ample evidence of a selfless and deeply sensitive connection with nature that sustained a healthy relationship at Rishi Kanva's hermitage in the first four acts of the drama where the setting is mostly forest and the hermitage.

> Priyamvada-*'Shakuntala, we have watered the trees that blossom in the summer-time. Now let's sprinkle those whose flowering-time is past. That will be a better deed, because we shall not be working for a reward.'*
>
> Shakuntala-*' What a pretty idea!*' (She does so.) (Arthur.W.Ryder act 1)

Nature in the drama is capable of healing humans. Shakuntala's reverence and faith ordained lovelorn prayer to one of the climbers,

'*o pain stealing vines I pray to you do provide happiness to me someday'* (act III) flashes an eco-revering consciousness.

We never see Kalidasa depicting nature as a silent receptor or sufferer or subordinate to human needs. On the contrary, the two merge seamlessly in a symbiotic relationship, the way culture and nature, palace and wilderness, Dushyant and Shakuntala, merge in his poetry. The hermits plead with the exploiter/predator King Dushyant to spare the life of the deer comparing him to a ball of cotton/blossom against the fiery arrow of the king. And the King immediately concedes. Kalidasa 'sustains an interest in nature for itself' (Garrard 35) revealing a consciousness which is the substratum of creation, offering and surrendering to that consciousness which is free from any imperfections or suffering, which is all love, intelligence, beauty and truth.

Kalidas' play *Shakuntala* appears to hold tremendous significance as viewed in the present context of ecological concerns. It signals to the discerning reader to recognize his/her position within the innumerable diverse life forms in the world around and work for their welfare, thereby, making this world a safe and happy place to live in. Moreover, the play provides an insight into the need to gain a more balanced perspective on both natural phenomena and their potential meanings for human beings. The play very loudly recognizes the sensitivity to nature in a renewed and extended encounter between the human and the elemental world. Kalidas' portrayal of the symbiotic relation between the human and non-human world is, undoubtedly, a significant contribution towards creating environmental consciousness.

Works cited-

Barry, Peter. Beginning Theory,An Introduction To Literary And Cultural Theory . Viva Books, Third Edition.

Bron Taylor, Michael Zimmerman. "Encyclopedia of Religion and Nature." Deep Ecology. pdf document. Ed. Bron Taylor. Continuum. London & New York, 2005.

Buell, Lawrence. The Environmental Imagination: Thoreau, Nature Writing, and the Formation of American Culture. London, Massachussets, Cambridge, USA: Belknap Press of Harvard University Press, 1995.

Cheryll Glotfelty, Harold Fromm. "Introduction:literary Studies in an Age of Enviornmental Crisis." Ecology, The Ecocriticism Reader: Landmarks in Literary. Ed. Harold Fromm Cheryll Glotfelty. University of Georgia Press, 1996. xv-xxxii.

Coupe, Laurence. The Green Studies Reader: From Romanticism to Ecocriticism. Psychology Press, 2000.

Garrard, Greg. Ecocriticism. London and New York: Routledge Taylor & Francis e-Library, 2004., 2004.

Gerow, Edwin. http://www.britannica.com/EBchecked/topic/310169/Kalidasa. n.d. 17 April 2014.

Pandey, Anamika. Ecosensitivity in *Kalidasa's Abhigyan Shakuntala*

Ryder, Arthur W. *Shakuntala.*Trans. In Parentheses Publications, Sanskrit series, Cambridge, Ontario, 1999.

****

SEEMAANT (सीमांत)

Life Skills Education Initiatives in India for the Adolescents: Some challenges

Dr. Rahul Sarania
Assistant Professor & Head
Department of Economics
Radhamadhab College, Silchar

Abstract

Adolescence is a transition stage that bridges childhood and adulthood, characterised by conspicuous physical, cognitive, and psychological changes and therefore it is the most critical phase of an individual. This transition period is so crucial that adolescents face various problems in certain areas of life such as parent child conflicts, drug abuse, violence, risky behaviours and mood changes. These stresses and social expectations lead to moments of uncertainty, self-doubts and disappointment that involves high risks behaviours and antisocial acts among adolescents. These issues have emerged as major challenges to the present society which require immediate and effective responses from a socially responsible system of education. Practising Life skills via life skill education is important but the challenges to provide effective life skills education are abundant which are to be addressed in a planned manner.

Keywords: Life skills; Life skills education; Adolescents; Challenges.

Introduction

The study of adolescent's development has gained much interest among researchers, theorists, and practitioners for decades. Deficits of personal, cognitive and social skills in children and adolescents lead to drug abuse, bullying, violence, HIV, AIDS, malnutrition and other socio- economic and environmental challenges. Specific emotional, cognitive, resilience and behavioural skills play a vital part in ensuring an adolescent's personal and social success (Nasheeda, et al., 2019; Langford, et al., 2015; McWhirter, et al., 2007; WHO, 1993). Likewise, psychosocial skills allows individuals to recognize, interact, influence and relate to others in different environments. Children and adolescents with psychosocial skills have positive mental health and wellbeing (Savoji & Ganji, 2013; WHO, 1993). Additional skills, such as emotional, cognitive, behavioural and resilience development in adolescents will help them navigate their psychological push backs for highrisk behaviour and negative mental wellbeing (WHO, 2016). Life skills has been identified as an essential resource for developing psychosocial, emotional, cognitive, behavioural and resilience skills to negotiate

day to day challenges and productive involvement in the community (Desai, 2010; Galagali, 2011). These skills are known to be key contributors to negotiating and mediating challenges that young people face in becoming productive citizens (Prajapati, Sharma, & Sharma, 2017; Savoji & Ganji, 2013; WHO, 1993). Life skills programs are conducted with a focus on specific life skills, depending on the setting and cultures. While special life skills education programs are designed to promote positive refusal skills and effective decision-making around smoking, alcohol, drug abuse, HIV, AIDS, contraception, perception about sexual activities and condom use in developed countries like the United States, Germany, etc. (Botvin, Griffin, Diaz, & Ifill-Williams, 2001; Martin, Nelson, & Lynch, 2013; Menrath et al., 2012). In India and other developing countries like Nepal and Bangladesh, life skills concepts is incorporated into their curriculum at different grade levels (WHO, 2001). This paper discusses various Life Skills Education (LSE) initiatives adopted in India and the challenges associated with it considering its importance in the life of adolescents. The study uses secondary source of information including journal articles, books and internet websites to understand the challenges of LSE initiatives in India. The study is descriptive in nature. With this introductory background, the discussion of the paper proceeds with the Conceptual definition of Life Skills, followed by remaining sub-headings, and finally concludes with concluding remarks as follows:

Definition and Concept of Life Skills

Life skills have been defined by the World Health Organization (WHO) as "abilities for adaptive and positive behaviour that enable individuals to deal effectively with the demands and challenges of everyday life". The term 'Adaptive' means that a person is flexible in their approach and are able to adjust in varied situations while 'Positive behaviour' implies that a person is forward looking and even in a most difficult situations, can find a ray of hope and opportunities to find solutions. They actually signify the psycho- social skills that resolve around valued behaviour and include reflective skills like problem-solving and critical thinking. These also embrace personal skills like self-awareness and interpersonal skills like keeping effective communication, maintaining healthy relationship with peers and others. A set of ten core skills have been identified by WHO (1997) which are together known as "life skills" that promote the psychosocial competence among children and adolescents are critical thinking, creative thinking, decision making, problem solving, effective communication, interpersonal relationship, self-awareness, empathy, coping with emotions and coping with stress (WHO, 1997). Practising life skills could lead to acquiring qualities like self-esteem, sociability and tolerance, action competencies to the students and

can generate enough capabilities among them to have the freedom to decide what to do in a typical situation. In life skills education, children are actively involved in a dynamic teaching and learning process where they themselves fill the gaps and comes out of the discrepancies. Health and livelihood education can balance life skills education and vice versa (Singh and Sharma, 2016).

Importance of Life Skills for Adolescents

World Health Organisation (WHO) defines adolescence both in terms of age (spanning the ages between 10 and 19 years) and in terms of a phase of life marked by special attributes such as rapid physical, psychological, cognitive and behavioural changes and developments, including the urge to experiment, attainment of sexual maturity, development of adult identity, and their transition from socio-economic dependence to relative autonomy. Secondary school level students are largely featured with adolescence, a vital stage of growth and development, which is characterized by rapid psychological changes, psychological maturation, abstract thinking, risk taking mentality and sexual activities. It is also the stage when young people extend their relationships beyond parents and family, conforming to the ideas and judgments of their peers are common during this period. This transition is so crucial that adolescents face problems in certain areas of life such as parent child conflicts, drug abuse, violence, and high risk behaviours which lead to long lasting health and social consequences. If these issues are not resolved the person suffers role diffusion or negative identity, which results in mismatched abilities and desires, directionless and are unprepared for the psychological challenges of adulthood (Berk, 2007). Therefore, improvement and strengthening of psychosocial competencies or life skills is must for adolescents for a healthy transition to adulthood affecting society positively in future (Vranda and Rao, 2011).

Generally, certain inbuilt buffers existing in the society in the form of control and support from the near and dear ones guide the adolescents to grow into a mature adult. However, in the wake of industrialisation and globalisation, big changes have taken place in our traditional society. The entire society is affected and adolescents are no exception to this. The family ties have weakened; moral, social, religious and cultural controls rarely exist and a new life style emerged among the adolescents. Today's highly competitive world and the absence of traditional norms and support have heightened the stress among adolescents, characterised by multiple mental health issues like depression, anxiety, loneliness, rejection, diffidence, anger, confliction in interpersonal relationship and failure (Smith et al. 2004). They are exposed to drug abuse, anti-social behaviour and even crime. In this connection, providing Life skill

training through LSE is regarded as effective tool for empowering the youth to act responsibly, take initiative and take control. This is suggested by many researchers and academicians as a prevention and development approach. It is based on the hypothesis that when young people are able to rise above emotional bottlenecks arising from daily conflicts, entangled relationships and peer pressure, they are less likely to resort to antisocial or high-risk behaviours. It empowers them with improved and creative decision-making skills and abilities that promote mental wellbeing and competencies to face the realities of changing life.

As rightly suggested by WHO (1997) that internalising the core essential life skills helps the adolescents to deal with the concerns in the modern world in a dignified and mature way bringing success to them, these basic skills will help adolescents in coping with difficulties they face in their personal, emotional and social development empowering to resist peer pressure as they learn how to accept themselves for who they are. Essentially, Life skills are those abilities that help promote mental well-being and competence in young people, one is able to explore alternatives, weigh pros and cons and make rational decisions in solving each problem or issue as and when it arises.

Life Skills Education Initiatives in India

The major initiatives undertaken towards life skills education in India as an important component of education system at all levels are summarised as follows:

National Curriculum Framework (NCF, 2000) recommended that education ideally must prepare students to face the challenges of day to day life. Education needs to be intimately linked with different life skills that enable students to fight against the challenges of drug abuse, violence, teenage pregnancy, AIDS/HIV and such other health related issues.

National Curriculum Framework (NCF, 2005) emphasized on constructive learning experiences and on the development of an inquiry-based approach, work-related knowledge and broader life skills. Interventions focused on adolescent reproductive and sexual health concerns, including HIV/AIDS and drug addiction are needed to provide opportunities to construct knowledge and acquire life skills, so that, they cope with concerns related to the process of growing up.

SEEMAANT (सीमांत)

Adolescence Education Program (AEP), 2005 is implemented by Department of School Education and Literacy, Ministry of Human Resource and Development (MHRD) in collaboration with National AIDS Control Organisation (NACO) to equip every adolescent (child between 10-19 years) with scientific information, knowledge and life-skills to protect themselves from HIV infection and manage their concerns pertaining to reproductive and sexual health. AEP need to be practised along with school education (NCF, 2005). Under the programme, teachers and peer educators are trained, who, in turn, conduct the programme amongst the student community.

Central Board of Secondary Education (CBSE), in 2010, introduced life skills education as an integral part of the curriculum through Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) for classes VI to X and developed life skills manuals for teachers in which the ten core life skills as identified by WHO are further categorised into three major categories, viz., Thinking skills: Critical thinking; creative thinking; decision making; problem solving; and self-awareness; Social skills: Effective communication; interpersonal relationship skills; and empathy; and, Emotional skills: Coping with emotions; and coping with stress.

National Curriculum Framework for Teacher Education (NCFTE), 2009 elaborated that true education is a process of developing the human personality in all its dimensions – intellectual, physical, emotional, social, moral and spiritual. This can only be achieved, if teacher education curriculum provides appropriate and critical opportunities for student teachers to develop the capacity for self-analysis, self-evaluation, adaptability, flexibility, creativity and innovation; to think, reflect, assimilate and articulate new ideas; be self-critical and to work collaboratively in groups; examine disciplinary knowledge and social realities; relate subject matter with the social milieu of learners; and develop critical thinking.

Sarva Shiksha Abhiyan (SSA) also has, under its agenda, life skills training for girls in on upper primary classes. While there have been dispersed efforts around life skills, focus on curriculum integration and teacher development remains poor. Many of these efforts take a general approach to 'life skills information delivery' (sometimes more as moral/values education) without a particular context. Indian schools focus primarily on imparting scholastic knowledge of science, mathematics, etc. and precious little is observed as being done for the all-round development of children.

SEEMAANT (सीमान्त)

Challenges to Life Skills Education

The teaching of life skills education has been buffeted by numerous challenges across the world including India. Some of them are as follows:

1. The existing education system of India is inclined towards bookish focusing on mere cognitive skills and detached from real life. Basic Life skills such as critical thinking, ability to interpret, reflecting on thoughts and actions, communication, interpersonal skills are not observed and reflected in adolescents.
2. Educational system of India is preoccupied with producing individuals who are unable to think for themselves or even acquire the aptitude of independent work, to take ownership and responsibility and to solve problems and make decisions.
3. In Indian schools particularly, the life skills education is conceptualized as a variant of value or character education. In most schools, value education is confused with life skills education.
4. The life skills training agenda adopted by Sarva Shiksha Abhiyaan (SSA) for the upper primary girls along with providing quality elementary education is not observed in actual classroom situation of Government schools.
5. The major challenges for the effective delivery of LSE in schools and colleges are lack of enough teaching-learning materials, non-examinable status of LSE, burden of extracurricular activities, time factor, shortage of teachers, and lack of trained teachers for LSE. Furthermore, lack of capacity and motivation of teachers in the integration of life skills into their classroom practice is an added challenge.

Conclusion and suggestions

Life skills are important for children and adolescents enabling to utilise their potential to the maximum in an appropriate way and engage them in creative activities. So, LSE is a very significant and vital part of educational system worldwide. However, In Indian schools and colleges, LSE is yet to be fully initiated and accepted as an important part of the curriculum and many challenges are associated with in it. The study recommends that teachers should be trained on life skills during pre-service as well as during in-service as it may be the best strategy for ensuring effective implementation of life skills curriculum in schools. Further, there is a need to develop supplementary resources like audio-visuals, board-games, digitised activities to make the teaching of life skills more interactive and interesting to the learners.

References

1. Berk, L. E. (2007). Development through the Lifespan. Boston: Pearson Education.
2. Bharat S., Kishore Kumar K. V., Vranda, M. N. (2005). Health promotion for adolescents in schools (8th, 9th and 10th Standard) (English version). Bangalore: NIMHANS-WHO (SEARO) Collaboration.
3. Dinesh, R. and Belinda, R. (2014). Importance of Life Skills Education for Youth, *Social Science*, 4(12): 92-94.
4. Grover, J. (2018). Life Skills Education in India: Initiatives and Challenges, *International Inventive Multidisciplinary Journal*, 4(3):124-137.
5. Kumar, J. and Chhabra, A. (2014). Life Skill Education for Adolescents: Coping with Challenges, Scholarly Research Journal for humanity Science and English Languages, 1(2): 181-190.
6. Langford, B. H., Badeau, S. H., & Legters, L. (2015). Investing to improve the well-being of vulnerable youth and young adults: Recommendations for policy and practice. Retrieved from http://www.ytfg.org/2015/12/wellbeing/.
7. McWhirter, J. J., McWhirter, B. T., McWhirter, E. H., & McWhirter, R. J. (2007). At risk youth: A Comprehensive response for counsellors, teachers, psychologists, and human service professionals (4th ed.). Belmont, CA: Thomson Brooks/Cole.
8. Nasheeda, A., Abdullah, H. B., Krauss, S. E. & Ahmed, N. B. (2019). A narrative systematic review of life skills education: effectiveness, research gaps and priorities, International Journal of Adolescence and Youth, 24:3, 362-379.
9. Smith E. A., Swisher J.D., and et al. (2004). Evaluation of life skills training and infused-life skills training in a rural setting: outcomes at two years, *J Alcohol Drug Educ*, 48:51-70.
10. Vranda, M. N., Rao, M. C. (2011) Life skills education for young adolescents – Indian experience. Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, 37:9-15. Website: https://www.whiteswanfoundation.org/life-stages/adolescence/the-importance-of-teaching-your-adolescent-life-skill
11. WHO. (1993). Life skills education in schools. WHO/MNH/PSF/93.7A.Rev.2.
12. World Health Organisation (1997) Life skills education in schools (revised edition). Geneva: World Health Organisation - Programme on Mental Health.

****

Truth and Non-Violence: Concept of Gandhi

Sukanta Mazumder
Assistant Professor, Economics
Government Kamalanagar College

Abstract: Gandhi was a great supporter of Truth and Non-Violence. Truth or Satya, Ahimsa or Non-Violence are foundation of Gandhi's philosophy. The word 'Non-Violence' is a translation of the Sanskrit term 'Ahimsa'. He stated that in its positive form 'Ahimsa' means 'The largest love, the greatest charity. Moreover, he stated that Ahimsa binds us to one another and also to God. So, it is an unifying agent. Gandhi wrote, 'Ahimsa and love are one and the same thing'. According to Gandhi the word 'Satya' comes from the word 'Sat' which means 'to exist'. So, by the term 'Satya' Gandhi also means that which is not only existent but also true. Gandhi said that Truth and Non-Violence are the two sides of the same coin, or rather a smooth unstamped metallic disc. Who can say, which is the observe, and which is the reverse? Ahimsa is the means; Truth is the end. I will discuss the Gandhian concept of Truth and Non-Violence elaborately in this paper.

Introduction:

Gandhi was a great supporter of truth and Non-Violence. He had a great importance to the concept of Truth and Non-Violence. Truth or Satya, Ahimsa or Non-Violence are foundation of Gandhi's philosophy. The word 'Non-Violence' is a translation of the Sansrit term 'Ahimsa'. He stated that in its positive form, 'Ahimsa' means 'The largest love, greatest charity'. According to Gandhi the word 'Satya' comes from the word 'Sat' which means 'to exist'. So by the term 'Satya' Gandhi also means that which is not only existent but also true. Gandhi said that Truth and Non-Violence are the two sides of the same coin, or rather a smooth unstamped metallic disc. Who can say, which is the observe, and which is the reverse? Ahimsa is the means; Truth is the end. Gandhi identifies Truth with God. According to many philosophers God is the highest reality. At the same time Gandhi says that there is nothing besides truth. So both Truth and God stands for the highest reality or the ultimate reality. And hence the two can be identified. He said that there is no person in earth who can deny Truth. God can be denied because the atheist does not believe in God. But the atheist cannot deny the power of Truth. Hence God is identified with truth.

Objectives of the paper

1. This paper tries to focus the relation between Truth and Non-Violence.
2. This paper tries to focus how Gandhi influenced by satyagraha
3. This paper tries to focus the identification of Truth and God

According to Gandhi, Truth and Non-Violence constitute the ernel of Gandhi's philosophy. He said that Truth stands for 'reality'. By Truth, according to Gandhi, we do not mean the character of proposition which is either true or false. Gandhi sometimes described Truth as existence, consciousness and bliss (sat, cit, and ananda). At first Gandhi used to say God is Truth. But later on he converted Truth is God. Therefore according to Gandhi Truth is God and 'Satyagraha' is 'agraha' of and thus, it means holding fast of truth.

Gandhi explained the term 'Satyagraha' from various viewpoints. Satyagraha is not a weapon of the weak, the coward, the unarmed and the helpless. It is a weapon of the morally vigilant and the active. Satyagraha is not the traditional resistance of evil by evil. It is a resistance of evil by its opposite, i.e. , by good. Satyagraha is essentially based on love. In fact, according to Gandhi, Satyagraha appears to be as a religious pursuit. It rests on a religious belief that there is one God behind everything and being, and as such the same God resides in every one of us. Gandhi also feels that a belief in rebirth is almost a precondition of Satyagraha. Satyagraha demands selfless and sincere pursuit of Truth without having any consideration of any advantage or gain, But one will be able 'to walk on such a sharp 'razor's edge' only if he somehow believes that he will get the fruits of his good work, if not in this life, in subsequent life. Gandhi says, 'with the knowledge that the soul survives the body, he (the satyagraha) is not impatient to see the triumph of in the present body".

Gandhi describes Satyagraha as a force against violence, tyranny and injustice. All these evils arise on account of a neglect of the 'Truth' that is all-pervasive and all-comprehending. Therefore Gandhi says that if we start resisting evil with evil, violence with violence, anger with anger, then we are only adding fuel to Gandhian Concept of Truth and Non-Violence.

Requirement of a Satyagrahi:

According to Gandhi, a Satyagrahi must possess a number of qualities and characters. Some of the basic ones are given below-

1. A Satyagrahi must be basically honest and sincere.
2. A Satyagrahi must not have any mental reservations, he must be open minded.
3. A Satyagrahi must be a disciplined soldier. Truth alone should be his master and conscience his guide. He should be loving, but firm.
4. This means that a Satyagrahi must be completely fearless. He must not fear anything worldly- even death.
5. Fearlessness leads to another virtue, sacrifice. A Satyagrahi must be prepared for the greatest possible sacrifice.
6. Suffering and Sacrifice have to be undergone in an attitude of simplicity and humanility.
7. Gandhi asserts that a Satyagrahi is required to practice truthfulness and non-violence not only in his action, but also in his thought and speech.
8. A Satyagrahi must be firm in his dealings and behavior.

9. There must be conformity between the thought and action of a satyagrahi.
10. Gandhi also recommends that the Satyagrahi must learn to put on restraints upon his own self.

Gandhi feels that a true Satyagrahi who has been able to fulfill the requirement mentioned above can work wonder. He alone can face the might of any army or even of an empire.

Ahimsa or Non-Violence: Ahimsa or Non-Violence is the central concept of Gandhi's philosophy. According to Gandhi, Ahimsa or Non-Violence has a positive meaning also. Non-Violence means 'love'. It means love towards all living creatures. The concept of Non-Violence is extended not only means to human love but love towards all sentient creatures of the world. That means one should not love only human being but every living being in the world. When a person claims to be non-violent, he is expected not to be angry with one who has injured him. He will not wish him harm, he will wish him well. He will not swear at him, and he will not cause him any physical hurt. He will put up with all the injury to which he is subjected by the wrong-doer. Thus Non-Violence is complete innocence. Complete Non-Violence is complete absence of ill-will against all that lives. Therefore it embraces even sub-human life not excluding noxious insects or beats. Non-Violence is therefore, in its active form goodwill towards all life. It is pure love. When the idea of Non-Violence in Gandhi's philosophy is analysed then a number of characteristics features stand out. In his book **'Social and Political Thought of Gandhi'** J.Bandyopadhyaya stated the following characteristic features of Gandhian Non-Violence:

1. Non-Violence is not the same as non-killing.
2. Non-Violence is not non-resistance born out of cowardice.
3. Non-Violence implies several positive values. These values include love, active, resistance to injustice, courage in the face of violence, non-possession, truthfulness and brahmacharya.
4. Non-Violence implies bread-labour, which Gandhi derived from **Ruskin** and **Tolstoy** and ultimately from the **Bible**. Gandhi defined it as the 'Divine Law that man must earn his bread by laboring with his own hands'.
5. Non-Violence is a higher value than life. Gandhi regarded Non-Violence to be an ultimate value on three grounds. First it is universally applicable. Secondly, it enhances all other values without detracting from any. Thirdly, it is unlimited in its application.

Gandhi believed that Non-Violence in its absolute form is not realizable in practice. But relative Non-Violence can be realized in practice. Gandhi stated that Justas the perfect straight line as understood by Euclid cannot be drawn. Similarly perfect Non-Violence cannot be attained. But limited Non-Violence can be attained. Gandhi stated that the Divine Spark is present within man and we must constantly endeavor to keep alive that Divine Spark. Gandhi

therefore regarded Non-Violence to be the law of our species. But at the same time Gandhi recognized the point that the practice of total Non-Violence in our life is not possible. Gandhi wrote, 'Man cannot for a moment live without consciously or unconsciously committing outward violence.' This violence is directed against life. According to Gandhi Non-Violence is a perfect state. It is a goal towards which all mankind moves naturally through unconsciously. He says, 'If we can manage to apply Non-Violence successfully at home, in its pure form become an irresistible power in the service of the state. Non-Violence is the law of our species as violence is the law of brute.

Non-Violence in its dynamic condition means conscious suffering. It does not mean submission to the will of the evil-doer, but it means putting one's whole soul against the will of the tyrant. The Gandhian concept of Non-Violence is Dharma in action, and truth translated. It is not a static code of morality ready for adoption. It involves and is in essence 'creativity morality', in the language of Bergson. Non-Violence is a dynamic and creative concept centered on truth. Truth, the supreme Gandhian value, is the consummation of all that is spiritual in man. He regards violence as an evil in itself. He does not consider it to be neutral. According to Gandhi 'Ahimsa or Non-Violence' is the means; Truth is the end. They are so intertwined that it is impossible to separate them. They are the two sides of a coin. Ahimsa or Non-Violence should practice in the mental level. It means barring no ill-will against others. So, Ahimsa or Non-Violence is non-injury to others not only in the physical sense but of in the mental sense also. Hence the concept Truth and Non-Violence according to Gandhi has a very wide application. Gandhi is of opinion that killing or injury to life can be an act of violence only under certain conditions. These conditions are anger, pride, hatred, selfish consideration, bad intention and similar other consideration. Any injury to life done under these motives is 'himsa'. Thus the negative meaning of Ahimsa is 'non killing or non-injury', but this presupposes that a non-violent act is free from hatred, anger, malice and the like. For example, when an animal which is going to die is suffering from intense pain in that case we may kill him to end his suffering or there may be cases when a woman has to safe dignity or owner against the criminal. In that case she can use violence in order to safe herself. So there are certain exceptions according to Gandhi to the law of violence. But for Gandhi, the positive aspects of Ahimsa are much more basic than its negative characters. Ahimsa is not merely refraining from causing injures to creature; it stands for certain positive attitude towards other living beings that one must cultivate. In its positive sense Gandhi said that Ahimsa represents one of the basic and essential qualities of mankind. That does not mean that violence does not have any place in life. In fact, even in preserving one's existence one has to commit himsa of one kind or the other, and yet Ahimsa is considered to be the law of our species. In fact Ahimsa is nothing but love. Love is a kind of feeling of oneness. In an act of love one identifies himself with the object of his love, and this cannot possible unless there is an effort to free mind from every such disposition that prevents the spontaneous

outflow of love. Therefore, Ahimsa demands a sincere effort to free mind from feelings like anger, malice, hatred, revenge, jealously etc., because these create obstacle in the way of Love. According to Gandhi, love is the energy that cleanses one's inner life and uplifts him, and as such love comprehends such noble feelings as benevolence, compassion, forgiveness, tolerance, generosity, kindness, sympathy etc. Gandhi believed that without the practice of Non-Violence Truth cannot be realized. Gandhi employed a curious argument to establish this point. Gandhi stated that God and Truth are identical. At the same time Gandhi accepted a pantheistic conception of God. He argued that God pervades all beings. All beings are united by God and the act of unification is made possible through love or Non-Violence. So Non-Violence is ultimately the cementing bond of the Universe that has its origin in God or Truth.

Conclusion:

In conclusion we can say that both Truth and Non-Violence are closely interrelated. They are the same sides of a same coin. A critical concept of the Gandhian concept of Non-Violence shows that Gandhi was not aware of the deep rooted aggressive instinct in man. Contemporary psychologist have pointed out that this instinct plays a major role in the human mental life. Gandhi did not play sufficient attention to it. His account of Non-Violence seems to be more dependent on his readings of religious texts than on psycho-social considerations. This is a major critical point that may be raised against the Gandhian concept of Non-Violence. If Non-Violence is the expression of the life-instinct within man then violence is the expression of the death-instinct.

References:

1. Gandhi, Mohandas K. (1948), "The Story of My Experiments with Truth." Translated by Mohadev Desai ; Public Affairs Press; New York: Doves Publications.
2. Borman, William (1986), "Gandhi and Non-Violence"; State University of New York Press, Albany.
3. Kumar Lal Basanta (1973.)," Contemporary Indian Philosophy", Motilal Banarsidass Publishers Pvt. Ltd. , Delhi
4. Ramchiary Arpana *(Nov. - Dec. 2013),* "Gandhian Concept of Truth and Non-Violence", *IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS) Volume 18, Issue 4, PP 67-69*
5. Google search

****

LOK AYUKTA: The Indian Ombudsman and its desirability in Mizoram

Laldinpuii
Asst. Professor
Govt. Kolasib College
Kolasib, Mizoram

The Swedish word, Ombudsman refers to an officer appointed by the legislature to handle complaints against administrative and judicial actions.

Birth of the Ombudsman:

To trace the birth of Ombudsman, it would be necessary to go to its native land Sweden and turn back the page of history. King Charles XII in1713 created the institution of Hogste Ombudsman to ensure effective enforcement of law and order and to exercise supervision over the public servants to see that they discharge their duties in the public interest. In November 1975, Swedish Parliament adopted a new system under which are four Ombudsmen, one of whom is elected by Parliament to act as Chief Ombudsman and Administrative Director of Ombudsmen's Office. He Co-ordinates the works of other Ombudsmen and in consultation with them, delineates the areas of government over which they have responsibility for looking into complaints. The four Ombudsmen cover all agencies of government, both Central and local.

Over the years, Ombudsman has emerged as a strong and successful institution providing succor to the aggrieved citizens and also as a successful defender of civil liberties. In Sweden, Ombudsman emerged as an interpreter of law since a number of laws have been amended at his initiative, whenever he found any such law to be improper, unsatisfactory or vague. The Swedish Ombudsman has proved to be an impartial investigator who handles the public complaints in a simple and effective manner. By 1995, nearly 97 countries adopted the institution of Ombudsman and India is among the countries adopting the institution.

Ombudsman in India:

The compulsion of a democratic welfare regime in India has led to considerable influence both desirable and undesirable. Increase in State activities has led to an enormous increase in the functions and powers of the civil servants and the political administration and increasing powers of delegated to public bureaucracy by the legislature has increased the scope of arbitrariness, maladministration, delay and injustice.The creation of the institution of

Ombudsman i.e. Lokayukata in a number of States in India was prompted by the success of this institution in a number of countries in controlling the ever growing powers of the administration and also as an effective and inexpensive agency for redressal of citizen's grievance. When the people have confidence in the integrity and efficiency of the public administration, thus bringing about participatory administration.

The Ombudsman i.e. the Lokayukta is an important link in bringing the gap of credibility and confidence between the citizen and the administration.

With the increasing corruption in public life in India has been a matter of growing concern and the desirability of having an institution on the pattern of Ombudsman was strongly stressed in Lok Sabha on 3rd April 1963 during the debates on the demands of grants of Law Ministry. The then Prime Minister Shri Jawahar Lal Nehru said the idea had 'fascinated' him (ref. Mary Parmar – Loayukta. page no – 12). The persistent call for administrative reforms led to the constitution in early 1965, of a Special Consultative Group of Member of Parliament on administrative reforms. Meanwhile there was a strong and growing demand for the appointment of an all – India Administrative reforms Commission. This led the Government of India to set up a high level Administrative Reforms Commission on 5th January 1966 under the Chairmanship of Shri Morarji Desai, to examine various aspects of the functioning of the administrative system and suggest ways and means to bring about improvement in the administration. The necessity of setting up an agency which was close to the common men's grievances, the Administrative Reforms Commission recommended a two- tier machinery namely Lokpal at the Centre and one Lokayukta each at the State level for redressal of people's grievances.

The term Lokpal was first coined by late Mr LM Singhvi, a member of parliament, in 1963 during a debate. In 1969, the Lokpal Bill was passed by the Lok Sabha but was tabled in the Rajya Sabha. Since then, a number of Lokpal institution were introduced in the Parliament in the years in 1971, 1977, 1985, 1989,1996,1998, 2001,2005, and in 2008 without any success. However there is an unrest growing demands, so activists Anna Hazare formed a campaign called 'India against Corruption' in 2011, this movement made the government of India to introduce the Lokpal legislation and finally the Lokpal and Lokayukta Act,2013, was passed.

The Lokpal and Lokayuktas were formed under the act, the Lokpal is the central governing body that has the jurisdiction over all Parliament and central government employees in cases of corruption. Mr. Justice Pinaki Chandra Ghose, a retired Supreme Court

Judge was appointed as the first Lokpal of India on 17th March 2019. The Lokayuktas are similar to the Lokpal, but function on a state level and as per the Act Lockayuktas should be set up in each state. The Lokpal and Lokayuktas would be the authorities to deal with corruption cases. They must conduct inquiries and investigations and conduct trials for the cases depending on its findings. The Lokpal must fight corruption in public offices and ensure accountability on the part of public officials, including the Prime Minister, but with some safeguards. The Lokayuktas must do the same on the state. And each of the states dictates how its Lokayukta is set up and its set of powers. This has led to various different Lokayuktas being setup, some with [1]more power than the others. Hence, there is proposal to implement the Lokayukta uniformly across Indian states

Lokayuktas:

It must be noted that the institution of Lokayukta was first established in Maharashtra in 1971 and although Orissa had passed the Act in this regard in 1970, it came into force only in 1983.The Lokayukta is an anti-corruption ombudsman organization in the Indian States. The establishment of the institution of Lokayukta is part of an ongoing effort to provide clean, transparent and accountable government to the people. Lokayukta today are the institutional manifestations of the administration, look into complaints of the victim of corrupt elements and suggest measures to improve the effectiveness and efficiency of our Government.

The Lokayukta is created as a statutory authority with a fixed tenure to enable it to discharge its functions independently and impartially. The person appointed is usually a former High Court Chief Justice or former Supreme Court judge. Members of the public can directly approach the Lokayukta with complaints of corruption, nepotism or any other form of mal-administration against any government official.Written complaints are required from complainants by the Lokayukta office for investigation. If the complaint takes the form of an allegation, the office insists on the filing of an affidavit. Lokayuktas can either investigate the complaints using their suo motu powers under the state Act concerned or forward them to the heads of the departments under the scanner for action or act as a mediator between the citizen and the government servant against whom the complaint is made.

[1] Mary Pamar – Lokayukta on Ombudsman in India. 2000. P- 12& 13.
*Article Rajani Ranjan Jha – India's Anti- Corruption Authorities: Lokpal and Lokayukta. 2018. journals.sagepub.com
**Article Yuki Choudhary – The Lokpal and Lokayukta Bill,2011: Who will guard the guards?. www.indialawjournal.org

Any person, irrespective of the fact whether he is individually affected or not, can make a complaint in the prescribed manner to the Lokayukta, giving specific details of the case supported by relevant documents and accompanied by an affidavit in support of the allegations in the complaint. He can participate in the proceedings before the Lokayukta. Even if a person does not have wish to participate in the proceedings or he is not individually affected, he can give information to the Lokayukta about corruption, abuse or misuse of power, favoritism and nepotism etc. by the public functionary in writing or otherwise. The Lokayukta has also power to initiate an inquiry on information received or suo motto. The Lokayukta is empowered to summon any person or document including public record. He can also examine the witnesses on oath and issue commission for examination of witnesses. Lokayukta can also utilize the services of any officer or investigative agency of government or any other person/agency. On the basis of inquiry, Lokayukta upon completion of inquiry, in case the allegations are established, makes a report to the Competent Authority i.e. President, Lt.Governor or Chief Secretary. The Competent Authority is required to intimate within three months, the action taken or proposed to be taken.

Appointment:

The Governor or the Lieutenant Governor shall, with the prior approval of the President (Not necessary in all states), appointed a person to be known as the Lokayukta .In certain states it is mandatory to seek approval of the Chief Justice of the High Court of that state and the Leader of the Opposition in the Legislative Assembly. In certain states like Bihar and Uttarakhand a Selection Committee is also formed and the Lokayukta is based upon its recommendations.

Consisting of:

• the Chief Minister — chairperson;

• one Minister to be appointed by the Chief Minister;

• the Leader of the Opposition in the State Legislative Assembly or if there is no such leader a person elected in this behalf by the Members of the Opposition in the State Legislative Assembly in such manner as the Speaker may direct member;

• outgoing Lokayukta;

• two sitting Judges of the High Court to be nominated by the Chief Justice of the High Court;

SEEMANT (सीमांत)

• one eminent citizen of the state to be nominated by the Chief Minister in consultation with the leader of the opposition and the Chief Justice of the High Court.

The Selection Committee can regulate its own procedure for selecting the Chairperson and Members of the Lokayukta which shall be transparent.

Success Stories:

Some success stories in states like Kerala, Karnataka and Uttar Pradesh, but even their Lokayuktas were severely hobbled by the lack of prosecution powers, basic infrastructure and staff.

• UP Lokayukta Justice (retd) N K Mehrotra on Friday recommended CBI and ED inquiry against leader of opposition and prominent BSP leader Naseemuddin Siddiqui after finding charges of disproportionate assets against him, his son and brother to be true.

• In an order, Lokayukta Justice Manmohan Sarin had slammed Dikshit for alleged misrepresentation of facts about construction of 60,000 low-cost flats in the run up to the assembly polls. In response to a complaint, the Lokayukta in its order has said that Dikshit had stated that 60,000 low-cost houses were ready for allotment when they were not even built.

• UP Lokayukta N K Mehrotra Tuesday recommended a criminal inquiry against MLA and former sports minister Ayodhya Prasad Pal for amassing wealth disproportionate to his known sources of income, money laundering and committing financial irregularities in the sports department. Pal is the eleventh minister of the erstwhile Mayawati government to be indicted by the Lokayukta so far.

• In an extraordinary judgment that must count among the sharpest indictments ever handed out to any State government, the Gujarat High Court has upheld Governor Kamla Beniwal's appointment of Justice R.A. Mehta as the Lokayukta over objections by Narendra Modi and his Council of Ministers.

Lokayukta mentions nine recommendations given to the UP government from 2006 to 2010 regarding allegations against ministers and legislators, but the Lokayukta office has received action taken reports of only two cases, where recommendation were partially implemented. Seven recommendations were pending with the government and no action-taken report was sent.(ref U.P Lokayukta annual report for 2010 , Lokayukta – Shivani Garg. Page 11)

SEEMANT (सीमांत)

There are several important differences:

- Lokayuktas of Karnataka, Delhi and Madhya Pradesh can take suo motu cognizance of the practices of corruption by public servants, but the UP Lokayukta has to receive a complaint to initiate an inquiry. Also, while the Karnataka Lokayukta has an investigation wing and the MP Lokayukta has the power of superintendence over investigations, the UP Lokayukta has neither.

- The Karnataka Lokayukta also has the power to initiate prosecution against any public servant if he is satisfied that the public servant has committed a criminal offence. For this purpose, he need not obtain the sanction of any authority. The UP Lokayukta has no such power. Nor are the reports of the UP Lokayukta binding on the government. In fact, there are several instances when the state government did not take any action on the recommendations of the Lokayukta. In such cases, the Lokayukta can only send a special report to the governor, which the governor may table in the state Assembly.

- The Karnataka Lokayukta can, after an inquiry, report to the governor or the chief minister that a public servant should be removed from office. If this report is not rejected within three months, it is deemed to have been accepted and the public servant is deemed to have vacated office. Also, the Karnataka Lokayukta may issue a search warrant and authorise any police officer not below the rank of inspector of police to conduct a search and seize the property, document, money or other things found as a result of search. Provisions of the Code of Criminal Procedure apply on the searches and seizures on a Lokayukta warrant and the warrant is deemed to be a warrant issued by a court under Section 93 of the Code of Criminal Procedure, 1973. The UP Lokayukta has no such power.

The Mizoram Lokayukta:

After 40 years have passed since the institution of Lokayukta was first established in Maharashtra, the state of Mizoram also started making an effort to formulate the Mizoram Lokayukta Bill by involving certain NGO's, PRISM, MZP and public intellectuals who had taken interest in having a powerful, independent and effective Lokayukta for the State. On

SEMANT (सेमंत)

28th November, 2014, the Mizoram Legislative Assembly passed The Mizoram Lok Ayukta Act 2014 which received the assent of the Governor on 28th November, 2014.

Chairperson and Members of Mizoram Lokayukta: The Lokayukta may be composed of not more than 3 Members namely Chairperson and one or two Members. Prescribed Qualifications for appointments are:-

1. Chairperson: (i) A person who is or has been a Chief Justice of the High Court or a Judge of the High Court or (ii) a person qualified to be a High Court Judge or (iii) a person of impeccable integrity, outstanding ability having special knowledge and expertise of not less than 20 years in the matters relating to Anti-corruption policy, public administration, vigilance, finance including insurance and banking, law, and management.

2. Judicial Member: (i) A person who is qualified to be a High Court Judge or (ii) A person who has vast knowledge of law and experience in judicial matters or courts.

3. Member (Administration): (i) A person of impeccable integrity, outstanding ability having special knowledge and expertise of not less than 20 years in the matters relating to anti-corruption policy, public administration, vigilance, finance including insurance and banking, law, and management.

Procedures for Selection of Chairperson and Member(s):

(A) A Search Committee, consisting of at least 5 persons having special knowledge and expertise in the matters relating to anti-corruption policy, public administration, vigilance, policy making, finance including insurance and banking, law and management etc. is constituted from time to time for preparing a panel of persons to be considered for appointment of the Chairperson and Member(s).

(B) Selection Committee consisting of – (i) the Chief Minister (as Chairman), (ii) the Speaker of Legislative Assembly, (iii) the Leader of Opposition or Leader of Opposition Group in the Legislative Assembly and (iv) the Chief Justice of the Gauhati High Court or any Judge nominated by him (as Members) selects the Chairman/ Member(s) from the panel of names prepared by the Search Committee and send its recommendation(s) to the Governor.

(C) Appointing Authority: The Governor who is the appointing authority appoints the Chairperson/Member(s) as the case may be, on the basis of the recommendation(s) of the Selection Committee.

Tenure:

The Chairperson and every Member shall, on the recommendations of the Selection Committee, be appointed by the Governor by warrant under his hand and seal and hold office as such for a term of five years or till attaining the age of 70 years whichever is earlier from the date on which he enters upon his office ;

Provided that he may—

(a) by writing under his hand addressed to the Governor, resign his office; or

(b) be removed from his office in the manner provided under the Act.

Appointment of the first Chairperson:

The Governor of Mizoram appointed Mr C. Lalsawta, IAS (Rtd.) as the Chairperson of Mizoram Lokayukta to be the first Chairperson and was administered oath of office and secrecy by His Excellency Shri Jagdish Mukhi Governor of Mizoram in a swearing-in ceremony on 11.03.2019.

Establishment Functions: The Mizoram Lokayukta will function basically with three Wings namely: (A) Administrative Wing, (B) Directorate of Enquiry/Investigation Wing and (C) Directorate of Prosecution Wing with Technical Examiners' Cell, Audit Experts' Cells etc. which is expected to be added later on.

The Administrative Wing/Establishment Section currently functions under the supervision of two officers, a part-time Secretary and a Superintendent who also acts as DDO in pursuance of Government Notification.

DIRECTORATE OF ENQUIRY/INVESTIGATION AND PROSECUTION

Section 11 of the Mizoram Lokayukta, 2014 provides for the constitution of Directorate(s) of Enquiry/Investigation and Prosecution and connected matters.

1. Directorate of Enquiry/Investigation:

Section 14 of the Mizoram Lokayukta Act, 2014 transfers all corruption cases pending before any Agency such as Anti Corruption Bureau etc. to the Lokayukta, hence the ACB no longer has any independent function to perform in investigation of corruption cases under the Prevention of Corruption Act, 1988. Hence for reasons of austerity measures and economy, the Government could easily disband or merge the ACB with the Lokayukta by transferring the sanctioned posts, manpower and assets to it; and it was suggested as such. Section 11(1) empowers the Lokayukta to constitute Directorate of Enquiry/Investigation but it has to wait for the decision of the Government regarding down-seizing, abolition or merger of ACB or creation of posts, deputations and provision of facilities.

2. Directorate of Prosecution:

The Criminal Procedure Code, 1973 and various rulings of the Hon'ble High Courts and Supreme Court envisage two separate sets of functionaries for Criminal Investigations and for Prosecutions. The Lokpal and Lokayukta Act, 2013 as well as various States' Lokayukta Acts explicitly provide for separate Directorate of Enquiry and Directorate of Prosecution. The Mizoram Lokayukta Act, 2014 however does not explicitly provide for separate Directorates for Enquiry and Prosecution but clubs them together under section 11, thus leaving scope for interpretations. The Lokayukta is of the opinion that either the Act be amended to explicitly provide for (1) Directorate of Enquiry and (2) Directorate of Prosecution or even without amendment, the two separate Directorates can be constituted.

SPECIAL COURT:

Section 34 (1) of the Mizoram Lokayukta Act, 2014 provides that the State Government shall constitute such number of Special Courts as recommended by the Lokayukta, to hear and decide the cases arising out of the Prevention of Corruption Act, 1988 or under this Act. Accordingly, the Lokayukta requested the Government in the Vigilance Department to constitute a Special Court, in consultation with the High Court. The Vigilance Department in turn wrote to the Law & Judicial Department to take necessary action for constitution of a Special Court or re-designation of the present Special Court as Special Lokayukta Court.

STATUTORY PROVISIONS: As per the provision of Chapter IV Section 12 of the Mizoram Lokayukta Act, 2014, the administrative expenses of Mizoram Lokayukta are charged upon the Consolidated Fund of the State.

CORRUPTION CASES

1. Complaints: The Mizoram Lokayukta received a total number of 14 (fourteen) complaints during the year of 2019-2020 which were registered as complaint cases in Mizoram Lokayukta. Out of which, 8 (eight) cases were directly received by Mizoram Lokayukta and 6 (six) cases were transferred from the ACB and the Vigilance Department to the Mizoram Lokayukta.

2. Preliminary Enquiries (P.E): Under Section 19(1) of the Act, the Lokayukta examined all such complaints received directly or referred to it or transferred to it by the Government or any Agency. After carefully examining the complaints, the Lokayukta would decide whether to close the complaints or refer them to any investigating agency for Preliminary Enquiries or

for submission of comments and reports. The Mizoram Lokayukta has the power to direct any investigating agency under section 19(1) of the Mizoram Lokayukta Act, 2014 and in exercise of the powers conferred under this section, the Lokayukta passed speaking orders to direct the Anti Corruption Bureau, Government of Mizoram to conduct a Preliminary Enquiries (P.E) on most of the cases referred to it due to absence of its own Directorate of Enquiry Wing for the time being.

Out of 14 cases which came before the Lokayukta, 11 (eleven) cases were referred to the ACB which submitted P.E Reports on 7 (seven) cases while it could not complete Preliminary Enquiries on the remaining 4 (four)cases.The Lokayukta examined the 7 (seven) Preliminary Enquiry (P.E) reports received by it and found that some reports were incomplete in some aspects and some contain certain defects, missing links or matters that need further inquiries or clarifications.(ref.ACTIVITIES AND ACHIEVEMENTS OF Mizoram Lok ayukta for 2019 - 2020 – The Mizoram Lok Ayukta page no. 12) Hence the Lokayukta had either ordered further inquiries or asked for necessary clarification on those Preliminary Enquiries and decided to proceed with the remaining cases.

3. Regular Investigations: Hearings on two (2) cases were conducted by the Lokayukta on 18th February, 2020 as per section 19 (3) of the Mizoram Lokayukta Act, 2014 by giving an opportunity of being heard to the accused.

4. Disposal of Cases:

The Lokayukta can close the case at various stages i.e. at initial stage without formal enquiry or after preliminary enquiry or after examination of investigation report, if a case lack merit or is barred by law etc. So far, the Lokayukta disposed three cases on technical grounds and for want of merit in the evidence of criminality.

The Mizoram Lokayukta is deemed to have been established w.e.f 11.3.2019, the date on which the first Chairperson assumed office of the Lokayukta (vide Notification No. A.12038/4/2019-LJE/8 Dt. 25.3.2019) and could be said there were no big achievements in terms of prosecutions and convictions till today, this could be regarded as Lokayukta in Mizoram is in its initial stage. However, the Lokayukta made its presence felt amongst the people and their public servants in its fight against corruption. Lets hope fresh cases would be taken up and cases initiated in the first year would be pursued in the succeeding years to bring them to their logical conclusions. And recently, The Mizoram Pradesh Congress Committee (MPCC) have filed a complain on Lokayukta about the inappropriate financial expences in the Aizawl Municipal Corporation under the ministry of Mizo National Front (MNF). The public must be aware that the pattern of Ombudsman, Lokayukta which is to

curb corruption, provide clean, transparent and accountable government to the people might be misused as a tool to counter their political opponent by the political party. Though Prosecution Directorate could not be set up yet, Mizoram Lokayukta designated Govt. Public Prosecutor Mr Joseph Lalfakawma as Lokayukta Prosecutor and Assistant Public Prosecutor is about to be recruited through Mizoram Public Service Commission (MPSC) shortly, so as all the required directorates, service post, staff etc could not be set-up and met by the Mizoram Lokayukta all at once, but lets hope for the best in curbing corruption and in bringing about a transparency and accountable government in Mizoram.

BIBLIOGRAPHY

1) Mary Pamar – Lokayukta. 2000
2) Shivani Garg – Lokayukta. 2011
3) Law and Judicial Department Publication - The Mizoram Lok Ayukta Act, 2014 (Including the Rules and Important Notification) & The Lok Pal and Lok Ayuktas Act, 2013 (Including the Rules)
4) Rajani Ranjan Jha - India's Anti – Corruption Authorities: Lokpal and Lokayukta Journals.sagepup.com
5) ELECTRONIC BOOK ON THE ACTIVITIES AND ACHIEVEMENTS OF THE MIZORAM LOKAYUKTA FOR 2019-2020 (1st APRIL 2019- 31st MARCH 2020) - The Mizoram Lokayukta
6) Yuki Chaudhari – The Lokpal and Lokayukta Bill, 2011 : Who will guard the guards? indialawjournal.org

****

SEEMANT (सीमांत)

Autonomy Movement With Especial Reference to the Formation of TTAADC

Dr. Jyotir Moy Chakma
Associate Professor, History
Govt. Kamalanagar College

INTRODUCTION

The Tripura Tribal Areas Autonomous District Council, TTAADC in short initially came into existence under the Seventh Schedule to the Constitution of India through the TTAADC Act, 1979[2]. It was upgraded under the Sixth Schedule to the Constitution of India on 1st April, 1985 by the 49th Amendment to the Constitution of India[3]. It has an area of 7,132.56 square kilometers which is 67.99 percent out of the total geographical area of 10,491.69 square kilometers of Tripura. The headquarters of TTAADC is located at Khumulwng 23 kilometers from Agaratala. The area of TTAADC extended to all the four Revenue Districts of the State. The area of TTAADC is divided into four administrative Zones whose boundaries are coterminous with the boundary of four Revenue Districts of the State. The Zonal area again sub-divided into 34 Sub-Zones whose boundaries are also coterminous with the boundary of Rural Development Blocks of the State and vice-versa.

The population of TTAADC may be broadly classified into tribal and non-tribal. The total number of population in TTAADC is 11, 57,536[4] which is 36.19 percent out of the total population of 31, 99,233 of the State as per 2001 census. The total number of Scheduled Tribe population is 9, 65,314[5]. The category-wise number of population and its percentage in TTAADC is shown in the table:

Sl. No.	**Category**	**No. of Population**	**Percentage**
1.	Scheduled Tribe	9,65,314	83.41%
2.	Scheduled Caste	52,898	4.56%
3.	Others	1,39,324	12.03%
Total		**11,57,324**	

Source: *Yapri*, 2005-2007.

Further, the number of families in TTAADC were 2, 29,231 and the total number of population was 12, 16, 465 during 2005-06. The social group-wise families and population of TTAADC in each Zone during 2005-06 is shown in the table below:

[2] Subir Bhaumik and Jayanta Bhattacharya, *Autonomy in the Northeast: The Hills of Tripura and Mizoram*, Ranabir Samaddar (ed.), *The Politics of Autonomy*, Sage Publication, New Delhi, 2005, p-225.
[2] Background Note on Tripura Tribal Areas Autonomous District Council, TTAADC, Khumulwng.
[3] *Yapri*, TTAADC Marching Ahead With The Waves of Achievements- 2005-2007, ICAT Department, TTAADC, Khumulwng, p-5.
[5] Lop cit.

Sl. No.	Name of Zone	No. of Families				No. of Population			
		ST	SC	Other	Total	ST	SC	Other	Total
1.	West Zone	72,308	2,436	4,487	79,231	4,02,948	12,423	23,647	4,39,018
2.	South Zone	56,260	2,878	7,890	67,028	2,90,153	13,288	37,654	3,41,095
3.	North Zone	23,750	2,733	9,865	36,303	1,25,641	13,360	47,486	1,86,487
4.	Dhalai Zone	37,158	3,933	5,578	46,669	2,02,818	19,442	27,605	2,49,865
Total		**1,89,431**	**11,980**	**27,820**	**2,29,231**	**10,21,560**	**58,513**	**1,36,392**	**12,16,465**

There are nineteen Schedule Tribe communities living in TTAADC area[6]. They are 1) Tripuri, 2) Jamatia, 3) Reang, 4) Chakma, 5) Halam, 6) Noatia, 7) Lushai, 8) Mag, 9) Garo, 10) Kuki, 11) Khasia, 12) Bhutia, 13) Chaimal, 14) Munda, 15) Lepcha, 16) Orang, 17) Uchai, 18) Santal and 19) Bhil. The number of population of each tribe within TTAADC is not known due to absence of any record. However, as per census records, the community-wise numerical strength of Scheduled Tribe population in Tripura from 1981-2001 is shown in the table:

Sl. No.	Name of Community	No. of Population			
		1971	1981	1991	2001
1.	Tripuri	2,50,545	3,30,872	4,61,531	5,43,848
2.	Jamatia	34,192	44,501	60,824	74,949
3.	Reang	64,722	84,003	1,11,606	1,65,103
4.	Chakma	28662	34797	96096	64293
5.	Halam	19,076	28,969	36,499	47,245
6.	Noatia	10,297	7,182	4,158	6,655
7.	Lushai	3,672	3,734	4,10	4,777
8.	Mag	13,273	18,231	31,612	30,385
9.	Garo	5,559	7,297	9,360	11,180
10.	Kuki	7,775	5,501	10,628	11,674
11.	Khasia	491	457	358	630
12.	Bhutia	3	22	47	29
13.	Chaimal	0	18	26	226
14.	Munda	5,347	7,993	11,547	12,416
15.	Lepcha	14	106	111	105

[6] *Lop cit*.

16.	Orang	3,428	5,217	6,751	6,223
17.	Uchai	1,061	1,306	1,637	2,103
18.	Santal	2,222	2,726	2,736	2,151
19.	Bhil	169	838	1,754	2,336
	Total	**4,50,472**	**5,88,620**	**8,53,345**	**9,93,426**

Source: Census Abstract, Directorate of Census Operation and Tribal Population, Tribal Research Institute.

HISTORICAL BACKGROUND ON THE FORMATION OF TTAADC

Background:

Before the historic accession to the India Union, Tripura was a princely state ruled by tribal traditional monarchy and the people constituted predominantly by the tribal communities. However, there was also sizeable numbers of non-tribal living peacefully in the plains. Before partition of the country, the whole Tripura was divided into two geographical divisions- hilly areas and lowland areas. The lowland Tripura was renamed Chakla Roshnabad by the muslim invaders while the eastern Tripura was called Hill Tipperah by the British administrator[7]. The rulers of Manikya dynasty allowed Bengali professionals and peasants to modernize their administration and to increase their land revenue through the spread of settled wet rice cultivation[8]. It can be well assumed that the Bengalis in the plains of Tripura became alarming before 1947 which prompted the Maharaja Bir Bikram Kishore Manikya to follow land reservation policy for the tribal subjects. Indeed, it was a farsighted measure on the part of the Maharaja to protect the tribal land.

With the dawn of India's independence, Tripura entered into a new political era with the sudden dead of Maharaja on 17th may 1947[9]. The heir of late Maharaja was still a minor and thereby a Council of Regency was constituted headed by the widow, Kanchan Prava Devi who took over the administration of the State. The last king, Maharaja Bir Bikram Kishor Manikya desired to remain with India and to establish parliamentary democracy in his kingdom in place of kingship, where people would voluntarily participate in the rule making and developmental process. It was the Regent Maharani Kanchan Prava Devi signed the instrument of accession on 13th August, 1947 on the wish of the late Maharaja. Thus, a new era began from kingship to the development of parliamentary democracy in Tripura.

Immediately after independence of India and prior to the various administrative changes, a section of tribal opposed merger to the Indian Union but the non-tribal desire the merger. Moreover, some tribal leaders desire to remain independent to resist the alien politics. Nevertheless, soon after

[7] Dr. Jagadish Gan-Chaudhuri, *A Constitutional History of Tripura*, Parul Prakashani, Agartala, 2004, p-366.
[8] Subir Bhaumik, *op. cit*, p-223.
[9] Bijan Mahanta, *Tripura: In the Light of Socio-Political Movement Since 1947*, Progressive Publisher, Kolkata, 2004, p-124.

accession, the merger agreement was also signed on 9th September, 1949[10] and the Government of India took over the administration of Tripura on 15th October, 1949[11]. Since then, Tripura ceased to be a princely state. Thus, the process in the development of democratic structure started after this historic accession. Tripura was placed under Part-C Category State in 1950 and thus it became a centrally administered territory[12].

Origin of Tribal Autonomy Movement:

The immergence of Tripura from kingship to parliamentary democracy was a bright picture on the one side but on the other, there was a dark picture too. Immediately after independence of India, the tribal people of Tripura had to face a new challenge for safeguarding their political, social and economic interest as well as to preserve their identity. The problems started when large scale influx of refugees from East Pakistan began to settle down in the plain areas of Tripura. In 1951, the population of Tripura was 6,39,025 and increased to 11,42,004 in 1961[13]. This clearly indicates that the influx into Tripura was so enormous that within a decade the population became almost doubled. This has resulted in a demographic change in Tripura and the percentage of the tribal population began to dwindle from 50.9% in 1941 to 36.85% in 1951[14]. The percentage went on decreasing as shown in the subsequent census reports.

Before partition, Tripura was predominantly a tribal inhabited State but after partition, the tribal people reduced to a minority due to large scale immigration. The faulty partition of the country, confronted Tripura with two major problems- lost of Chakla Roshnabad and large scale immigration into Tripura. The Hindu Bengalis in East Pakistan were driven out from their home by the Muslims and as a result they were compelled to enter in Tripura and some other states of India. Jagadish Gan-Chaudhuri remarks-"Chakla Roshnabad went out of hands; the loyal Bengali Hindus subjects were forced by the Muslims to leave their hearth & homes. A convoy of Hindus about two miles long pouring into Assam, West Bengal and Tripura from East Pakistan was a common scene during the horrible days of partition. Like a long piece of towel (*Gamchha*) and like the Punjab and like Bengal, Tripura too was ripped up into two parts in 1947"[15]. Between 1947 and 1971, 6, 09,998 Bengalis displaced from East Pakistan and came to Tripura for rehabilitation and resettlement[16]. The State Government set up several refugee colonies in the interior valleys and low lands and settled them under different schemes like financial assistance to settle down and helping to buy land.

Now there was scramble of lands between the Bengali emigrants and the tribal. It has been found that there was widespread illegal transfer of land and consequently, the common tribal people

[10] Bijan Mahanta, *op. cit*, p-126.
[11] Dr. Chandika Basu Majumder, *Democratic Heritage of Tribes of Tripura*, Tribal Research Institute, Agartala, 2002, p-6.
[12] Jagat Jyoti Roy, *Working of Autonomous District Council in Tripura*, L.S. Gassah (ed), *The Autonomous District Councils*, Omsons Publications, New Delhi, 1997, p-314.
[13] Dinesh Chndra Saha, *Nutan Pathe TTAADC*, Writers Publication, Agartala, 2007, p-1.
[14] Bijan Mahanta, *op. cit*, p-57.
[15] Dr. Jagadish Gan-Chaudhuri, *op. cit*, p-368.
[16] Subir Bhaumik and Jayanta Bhattacharya, *op. cit*, p-224.

began to lose their cultivable lands in the plain areas. The very outcome of this illegal transfer of lands was that the poor tribal people were gradually displaced from their original lands. For years, the tribal people saw the Bengali Hindus extending their settlement in the eastward, trespasses tribal reserved lands, purchase one tribal land after another, open one shop after another and reclaim one fallow land after another[17]. When the crisis reached its zenith, the tribal people began to feel that they were politically outnumbered, socially cornered and economically deprived. They began to think that their language, culture and the way of life were threatened which prompted them to quest for autonomy movement. The tribal autonomy movement revolved about three principal demands – land, language and self-government - protection of tribal lands, recognition of Kok-Borak as the second State language and establishment of a Tribal Autonomous Council in Tripura[18].

Land is the major cause for evolving tribal unrest in Tripura. The genesis of tribal land protection found expression in the year 1941 when the then ruler of Tripura declared eleven thousands drones (70,400 acres) of land in Kalyanpur areas of Khawai Sub-Division as reserved land for habitation and farming by some tribal communities like Tripura, Noatia, Jamatia, Reang and Halam[19]. The objective behind such reservation was to settled down in the plain lands and to accustom to plough cultivation. It was proclaimed that sell or transfer of individual land is not permissible and the government would buy it for inclusion within the khas land. This was the beginning in the process of formation of autonomous areas for the tribal in Tripura.

The first proclamation was found to be inadequate and the Maharaja issued second proclamation in 1943. The ruler felt the need of declaring more forest land as reserved land and as a result 1950 square miles of land in different sub-division of the State were declared as reserved areas for tribal subjects. Under this proclamation, the non-tribal within this reserved areas were not allowed to transfer lands to anyone without the permission from the government. Besides, the tribal subjects were also not allowed to donate, sell, transfer or mortgage their lands without permission. It was a farsightedness measure on the part of the Maharaja to stop illegal transfer of lands for safeguarding the interest of the tribal subjects. However, before and after independence of India, the order was found to be more breach than in observance. There was continuous illegal transfer of tribal lands to non-tribal and as a result, the tribal people gradually losing their lands[20].

Sri Jawaharlal Nehru, the then Prime Minister of India convened a national conference to discuss the problems affecting the Scheduled Caste and Scheduled Tribe population of the country in 1952. In that conference, Sri Dasaratha Deb, the Member of Parliament, proposed that a definite area should be declared as reserved for the tribal people of Tripura[21]. It was also proposed that the non-tribal people should not be allowed to settle down permanently and buy or sell any land in that reserved. Further, the tribal people expressed that it was no longer possible for the tribal jhumias to

[17] Dr. Jagadish Gan-Chaudhuri, *op. cit*, p-368.
[18] Bijan Mahanta, *Tripura: op. cit*, p-58.
[19] Structure and Function, *op. cit*, p-1.
[20] *Lop Cit*.
[21] *ibid*, p-2.

find new lands for jhuming nor they in a position to retain their old jhuming lands traditionally used for cultivation due to forceful immigration. Therefore, they also demanded that the government Khas lands around the tribal habitation should be declared as reserved areas for rehabilitation of the tribal communities. In 1955, Sri G.B.Pant, the then Home Minister in the Central Government also expressed the opinion that the pressure of population had already reached a saturation point in Tripura and it would not be advisable to allow further absorption of additional people in such a tiny state of Tripura[22].

In 1960, the Scheduled Caste and Scheduled Tribe Commission was appointed under the Chairmanship of U.N Dhebar to examined the problems of the Scheduled Caste and Scheduled Tribe population of the country[23]. The tribal people of Tripura submitted a representation demanding reserved areas exclusively for the tribal people. On the other hand, N.M Patnaik, the then Chief Commissioner of Tripura, in his note submitted to the Dhebar Commission, suggesting that a specified area should be declared as reserved for the tribal under the Fifth Schedule to the Constitution of India[24]. Considering the gravity of the situation, the Dhebar Commission recommended, inter alia, that Tribal Development Blocks might be set up as an experimental measure in the tribal compact areas, and if this measure failed to bring about any material improvement among the tribal people measures under Fifth Schedule might be given a trial[25].

Thereafter, the Administrative Reforms Commission was set up under the Chairmanship of K. Hanumanthaiya. The Commission examined the issue and suggested that some compact tribal areas in Tripura might be specified and Tribal Council set up there along with delegation of well-defined administrative powers[26]. Thus, the Commission recommended giving concession of autonomy for the tribal people. However, neither the Central Government nor the State Government came forward to materialize the recommendation.

In 1960, the Tripura Land Revenue & Land Records Act was passed by the government. It was a bold step in protecting the tribal interests which prohibited all transfer of tribal lands anywhere in Tripura. However, there was continuous influx of displaced people into Tripura and as a result, the tribal people still loosing their lands on account of transfer even though such transfer was not in accordance with law. The legal protection provided under section 187 of the Tripura Land Revenue & Land Records Act, 1960 and its subsequent amendment of 1974 failed to protect the tribal lands[27].

There was continuous influx of refugees and the Congress led Government of the State encouraged the refugee settlement ignoring the tribal interest. In the word of Subir Bhaumik & Jayanta Bhattachariya:

---

[22] Dr. Chandika Basu Majumder, *op. cit*, p-69.
[23] *Lop Cit.*
[24] Subir Bhaumik and Jayanta Bhattacharya, *op. cit*, p-224.
[25] *ibid*, pp-224-225.
[26] Structure and Function, *op. cit*, p-3.
[27] Bijan Mahanta, *op. cit*, p-57.

> "Little was done to protect the tribal lands. To consolidate its refugee vote bank, the Congress government continued to encourage the settlement of migrants from East Pakistan. In some areas of Tripura, the refugees formed cooperative like the Swasti Samity and took to extensive land grabbing in tribal compact areas. Before Tripura became a state, the Communists had won most of the Parliament seats in the state. They held sway in the tribal areas and advocated limited autonomy and the creation of a tribal reserve to protect the tribal lands. But the state unit of the Congress, dominated by Bengali refugees, was determined to take advantage of Tripura's changing demography and ride to power on the strength of its new acquired refugee vote banks"[28].

On 28th February 1974, the Congress Government of the State by an ordinance declared de-reservation of land of about 2050 sq. kilometers previously reserved for the tribal by the Maharaja of Tripura[29]. This de-reservation by the then government greatly injured the tribal sentiment and caused a widespread wrath among the tribal. As a result of this action by the government, the tribal autonomy movement assumed a new dimension. The tribal people believed that they will be ultimately liquidated due to heavy influx of Bengali people and illegal transfer of lands for them. They accused the government for rendering an openly discriminatory treatment and showing complete indifference to their cause. Their resentment found expression in various ways of both peaceful and violent. It assumed a mass movement and manifested itself in attempts at strengthening the inter-tribal communications, in consolidating the different tribes into a single cohesive nationality, in their growing identification with the Kok-Borak dialect, in their demand for a script different from that of the Bengalese, in making demonstrations, meetings, bandhs, processions, in demanding implementation of Sixth Schedule and in the formation of more than thirty associations[30].

Role of Tribal Organizations in Autonomy Movement

Bir Bikram Tripura Sangha and Seng Krak:

The Bir Bikram Tripura Sangha was formed in 1947 by Mr. Durjo. The aims of the Sangha were to safeguard the tenancy right of the permanent inhabitants of Tripura, social reforms, etc. The Sangha raised its voice and pressed the government against the illegal settlement by the immigrants in Tripura. Consequently, in March 1949, the government of Tripura notified that 'prayer for land settlement of those who are not subjects of Tripura State will not entertained without written permission of the Dewan of the State[31]. The Sangha had a militant wing known as *Seng Krak* under the leadership of Kunjeswar Deb Barma. It was declared outlawed in 1949. However, the *Seng Krak* again appeared in 1967. Their main activity was to drive out the Bengali refugees from Tripura.

Gana Mukti Parishad (GMP):

The Gana Mukti Parishad came into existence in 1948. Their main objective is to organize the tribal people of Tripura and make them aware of their rights and privileges. The GMP also worked for

[28] Subir Bhaumik and Jayanta Bhattacharya, *op. cit*, p-225.
[29] Jagat Jyoti Roy, *op. cit*, p-315.
[30] Dr. Jagadish Gan-Chaudhuri, *op. cit*, p-369.
[31] Bijan Mahanta, *op. cit*, p-59.

the development of agriculture, industry, education and culture among the tribal. It also emphasized to protect the rights of the tribal people and to fight for the growth and expansion of democracy.

Immediately after partition and merger of Tripura with the Indian Union, the GMP started its movement. The GMP demanded the protection of the tribal lands, recognition of the Kok-Borak language and granting of tribal autonomy. In 1951, the GMP was renamed as the Tripura Rajya Gana Mukti Parishad[32]. The GMP strongly agitated against the government ordinance which de-reserved the Tribal Reserved Area for rehabilitation of the East Bengal Refugees. Subsequently, on 10 September 1955, the GMP submitted a memorandum to the Prime Minister of India stating that the scramble for land in Tripura has reached such a point that it is no longer possible for the tribal to find new lands for jhuming nor they are in a position to retain their old jhuming lands traditionally used for cultivation. So government khas lands around tribal habitations should be declared as reserved areas for rehabilitation of the tribal communities[33].

Further, the GMP demanded the implementation of the Land Revenue & Land Reforms Act, 1960 prohibiting any transfer of tribal land to the non-tribal, function of an elected and powerful Tribal Welfare Board, constitution of an expert language committee for the development of tribal language- Kok Borak. The organization to strengthen its movement formed a separate wing called the 'Santi Sena Bahini' who carried out numerous activities in its movement[34]. The GMP did not believe in communalism rather it was against the existing system of the government. It emphasized unity among people of different communities who were exploited and sought their cooperation. It strongly demanded to keep reserved areas for the tribal by submitting representation to the Scheduled Caste and Schedule Tribe Commission in 1960.

Tripura Upajati Juba Samity (TUJS):

In 1967, the Tripura Upajati Juba Samity was formed by a section of tribal youths. It played a commendable role in the tribal autonomy movement in Tripura. The TUJS put forwards its four-fold demands like restoration of tribal lands transferred to the non-tribal since 1960, establishment of a Tribal Autonomous District Council in Tripura, reservation of government jobs for the tribal and recognition of Kok-Borak as second official language and introduction of Roman script for Kok-Borak as a medium of instruction[35].

Since its formation, the TUJS carried out its mass movement for tribal cause alone. It organized numerous rallies, submitted representation, mobilized public opinion, observed bandhs and hunger strike to press its demands. The subsequent movement of TUJS discussed later.

All Party Tribal Convention:

On 7 April, 1974, the All Party Tribal Convention was held at Agartala to protest against the government order of de-reservation of tribal reserved areas. The convention was attended by TUJS,

[32] *ibid*, p-61.
[33] Structure and Function, *op. cit*, p-3.
[34] Bijan Mahanta, *op. cit*, p-63.
[35] *ibid*, p-61.

Tripura Rajya Upajati Gana Mukti Parishad (TRUGMP), Tripura Upajati Karmachari Samiti, Tribal Youth Federation and Tribal Students' Federation. The convention formed a "Joint Action Committee" to steer the movement consisting of two representatives from each organization. It also adopted a Four-Points Charter Demands viz. 1) restoration of tribal lands transferred to the non-tribal since 1960, 2) revocation of the ordinance and preservation of tribal compact areas and introduction of Autonomous District Council, 3) recognition of Kok-Borak as the second State language and 4) introduction of Kok-Borak as the medium of instruction at the primary stage[36].

On 30 April 1974, the Joint Action Committee organized a mass demonstration in front of the Block Development Offices in the State. It also organized mass rallies, meetings and observed bandhs on 3 May 1974. However, the joint efforts of all the tribal organizations did not last long. On 5 June 1974, the Joint Action Committee was defunct due to ideological difference especially between the TUJS and the GMP. The GMP wanted the support and the cooperation of the non-tribal in the movement whereas the TUJS wanted the movement on tribal cause by the tribal alone. Since that the movement continued on two different ideological lines[37].

The Tripura Rajya Upajati Gana Mukti Parishad continued its movement based on Marxist line. It organized mass demonstration in front of the Sub-Divisional Offices on 10 June 1974 and organized a mass rally at Agartala. While TUJS believed that the tribal problems should be solve by tribal alone. It launched its movement by declaring 1974 a year of mass struggle. On 10th July, the TUJS took a procession in Agartala and hold a meeting where the tribal leaders criticized the government policy that was responsible for the backwardness of the tribal people in Tripura[38]. It organized meetings, processions and rallies at different places. In September 1974, the TUJS submitted a memorandum on four-point demands to the Union Home Minister in New Delhi urging the Government of India to fulfill its demands. However, the younger section of TUJS lost faith in its peaceful movement. In July 1978, they formed an underground organization called the 'Tripura National Volunteer (TNV) who adopted guerilla warfare with modern weapons[39] who intended for 'Swadhin Tripura' (independent Tripura)[40].

Formation of TTAADC:

The autonomy movement reached a decisive phase in 1977. On 31 December 1977, election was held and Left Front captured 56 seats, TUJS 4 seats while the Congress failed to get even a single seat. The Left Front Government led by Sri Nripen Chakrabarti decided to set up a Tribal Autonomous District Council under the Sixth Schedule to the Constitution of India. However, the Janata Government at the Centre led by Murarji Desai did not approved of it. Ultimately, the Left Front Government of Tripura introduced in the Legislative Assembly, The Tripura Tribal Areas

[36] *ibid*, p-64.
[37] *ibid*, p-65.
[38] *Lop Cit*.
[39] *ibid*, p-66.
[40] Subir Bhaumik and Jayanta Bhattacharya, *op. cit*, p-225.

Autonomous District Council Act, 1979 under the Seventh Schedule to the Constitution of India[41]. The Bill was passed on 23 March 1979 and assented by the President of India on 20 July 1979.

Thus, the Autonomous District Council for the tribal people in Tripura was created. The total area of TTAADC is about 7132.56 square kilometers which is 68.10% out of the total geographical area of Tripura. The Council consists of 28 elected members out of which 25 seats reserved for schedule tribe and 3 seats for other and 2 members are nominated by the Governor. Thus, the Council has strength of 30 members[42].

The TTAADC under the Seventh Schedule to the Constitution of India did not satisfy the aspirations of the tribal people. The demanded the up gradation of TTAADC under the Sixth Schedule. In the mean time, the TUJS threatened to resort a violent movement it their demand was not concede. The TUJS regarded foreigners to those people who settled in Tripura after 15 October 1949 and demanded their deportation from the State. On 21 May 1980, the TUJS sent deputation to all CD Blocks Offices to drive out the foreigners, boycotted all markets during the first week of June 1980[43]. On the other hand, the TNV resorted to heinous act of violence[44].

The year 1980 found Tripura ripe for a communal riot. There were series of communal clashes between the tribal and non-tribal here murder, abduction, looting arson, etc. took placed everyday. Thus, the autonomy provisions could not materialized till 1982. Amidst tormenting chaos and confusion, the first election to TTAADC was held on 3 January 1982 where eighty percent voters of both tribal and non-tribal exercised their franchise. The Left Front got 21 seats while TUJS got 7seats. The new elected members were sworn in on 18 January 1982. On the same day, the first session of the Council was held to elect the Chairman and the Vice-Chairman. Thus, the TTAADC under Seventh Schedule to the Constitution of India came into being on 18 January 1982, facilitating for the first time a tribal self-government in Tripura[45]. The TTAADC has 164 revenue villages and 47 Teshils to protect tribal rights on land, guarantee employment and to ensure the right against exploitation.

In spite of having several limitations, the newly constituted Council undertook measures for raising the standard of living of the people, both tribal and non-tribal living within the ADC area. However, it did not satisfy the aspiration of the tribal people who demanded introduction of the Sixth Schedule. The Left Front Government also wanted the up gradation of the existing ADC into Sixth Schedule and as a result, on 16 December 1983 resolved to request the Central Government for up gradation of the same.

At this stage, the autonomy movement of the tribal people reached its zenith. After continuous struggle, united efforts and great sacrifice, the Central Government agreed to introduce the Sixth Schedule. Accordingly, on 23 August 1984, a Bill was introduced in Parliament proposing an

[41] Jagat Jyoti Roy, *op. cit*, p-317.
[42] Dr. Jagadish Gan-Chaudhuri, *op. cit*, p-374.
[43] *Lop Cit*.
[44] Bijan Mahanta, *op. cit*, p-68.
[45] Dr. Chandika Basu Majumder, *op. cit*, p-70.

amendment to the Constitution for introducing the Sixth Schedule in the tribal areas of Tripura[46]. The Parliament enacted the Constitution (Forty-ninth Amendment) Act, 1984 and on 11 September 1984, the President of India assented on this Act[47].

The TTAADC under the Sixth Schedule was introduced on 1st April 1985. It has provided for a 28 member Council out of which 28 members are directly elected (21 reserved for tribal and 7 for general category) and 2 members are nominated by the Governor. The Executive Council consists of 8 members including the Chairman. The TTAADC has an area of 7132.56 square kilometers including 462 revenue villages and a population of 6, 26,173. On 7 May 1985, the State Cabinet passed the Tripura Tribal Areas Autonomous District Council (Constitution, Election and Conduct of Business) Rules, 1985 for implementation. The first election to TTAADC under Sixth Schedule was held on 30 June 1985. The Left and Democratic Front secured the majority in the election and formed the Council. The elected members of the Council were sworn in on 19 July 1985 and the Chairman and the Vice-Chairman were also elected on the same day. Thus, the long cherished aspirations of the tribal people in Tripura for self-government was fulfilled[48].

****

SEEMAANT (सीमान्त)

[46] Bijan Mahanta, *op. cit*, p-69.
[47] Narendra Chandra Debbarma, *Towards Greater Autonomy*, Kokborok Teihukumu Mission, Puspa Printing Works, Agartala, 1999, p-7.
[48] Bijan Mahanta, *op. cit*, pp-69-70.